ओ३म्

में परस्पर विरोधी कल्पनाएं

अर्थात्:

इसाई मत का वास्तविक स्वरूप

लेखक:

श्री पं० देव प्रकाश जी भूतपूर्व आचार्य

अरबी संस्कृति महा विद्यालय

अमृतसर [पंजाब]

प्रकाशक:

ओमप्रकाश आर्य

रतलाम, (म० प्र०)

द्वितीयावृति

१०००

१५ जूलाई १९७०

मूल्य ॥)

Rs 5 / P. 50
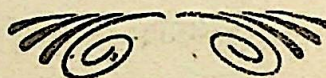
-: धन्यवाद ज्ञापन :-

यह पुस्तक श्री स्वर्गीय लाला जगतरामजी
अमृतसरी की स्थिर निधि के सूद से
जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के पास जमा है। जिस से
पहले ईसाईयत का विषवृक्ष
छपा था उसको बेच कर
यह पुस्तक छापी
गई है!

देव प्रकाश

आरम्भिक--विचार

पाठक वृन्द ! प्रस्तुत पुस्तक के लिखते समय विभिन्न लेखकों द्वारा प्रदर्शित किए गये दो प्रकार के विचार मेरे समक्ष उपस्थित थे।

प्रथम पक्ष यह था कि ईसा मसीह नाम का कोई व्यक्ति धरती तल पर नहीं हुआ। योगीराज कृष्णा चन्द्र आदि की कुछ घटनाए' एकत्रित कर उनके आधार पर हजरत ईसा की कल्पित रचना की गई। वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ।

द्वितीय पक्ष यह था कि यीशू मसीह का अस्तित्व इतिहास से प्रमाणित है तीस वर्षों तक तो हजरत ईसा अज्ञात ही में रहे। तत्पश्चात तीन वर्षों के लगभग उन्होंने कूछ उपदेश दिए और फिर उन्हें सूली पर चढ़ा कर उनके जीवन का अन्त कर दिया हम बड़े वलपूर्वक कहेंगे कि इस अल्प जीवन काल में न तो कोई पुस्तक स्वयं लिखी और न इस वात की घोषणा की कि कोई ज्ञान पुस्तक मुझे ईश्वर की ओर से प्राप्त हुई है। जैसा कि हजरत मूसा ने घोषणा की थी कि मुझे ईश्वर ने अपनी अंगुली से पत्थर की तख्तियों पर लिख कर पुस्तक प्रदान की है।

निर्गमन ३१, १८

इसी आधार पर हम कहेंगे कि वर्तमान में जो पुस्तकें मत्ती, मरकस, लूका, युहन्ना तथा प्रेरितों के कामों के वर्णन के नाम से जो हमारे समक्ष है। उनमें से किसी के साथ भी हजरत ईसा का सम्वन्ध नहो है। वह एक ईसा का इतिहास मात्र है जिसे ईसा के शिष्यों ने ईसा के निधन से वहुत वर्ष पीछे इन छोटी २ पुस्तकों का निर्माण किया। ये ऐतिहासिक पुस्तकें है इस वात को लूका ने भली प्रकार वर्णन किया है। जैसे—

१. इसलिए कि वहुतों ने उन वातों को जो हमारे वीच में बीती है, इतिहास

२. लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन वांतों के देखने वाले और वचन के सेवक थे।

३. हम तक पहुचाया। इसलिए हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सव बातों का सम्पूर्ण हाल आरंभ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें

४. तेरे लिए क्रमानुसार लिखू कि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई हैं, कैसी अटल हैं।

लूका ने स्पष्ट कर दिया है, कि जिन्होने पहिले लिखा वह भीं इतिहास हैं और मैं भी जाँच करके इतिहास ही तेरे लिए लिख रहा हूँ।

अब इतना स्पष्ट और पुष्ट प्रमाण होने पर यदि कोई इस बात के लिए हठ करे कि यह पुस्तकें ईश्वरी हैं तो उनका यह विचार उनकी अपनी कल्पना मात्र ही होगा जो सत्य नहीं कहा जा सकता।

मैं तो यह बल पूर्वक कहुँगा और मैं ही क्या कोई भी सत्यान्वेषी इन लेखकों की विभिन्न विरोधात्मक कल्पनाओं तथा धारणाओं अंध विश्वास युक्त विवरणों को ध्यान पूर्वक पढ़ेगा तो वह भी इसी परिणाम पर पहुंचेगा कि जिस व्यक्ति के लिए ऐसी अविवेक पूर्ण अयुक्त बाते लिखी गई हैं उसका अस्तित्व सिद्ध करना असम्भव है। इन विरोधात्मक कल्पनों का दिग्दर्शन आप को इस पुस्तक में कराया जायेगा। ताकि उपरोक्त धारणा को आप भली भाँति समझ ले। और सत्य को ग्रहण करें।

देवप्रकाश

बाइबिल का परिचय

बाइबिल कई एक पुस्तकों का संग्रह है, जिसके दो भाग माने जाते हैं, एक का नाम पुराना धर्म नियम है, उसमें विभिन्न देवदूत कहलाने वाले ३९ पुरूषों की वाणी है दूसरे का नाम नया धर्म नियम है, इसमें विभिन्न २७ लेखकों को लिखी गाथाएं है । यह नया धर्म नियम ईसाई मत की विशेष पुस्तकों का संग्रह है । जिसे ईसाई लोग ईश्वरीय वाणी मानते हैं । पुराने धर्म नियम के विषय में हज़रत ईसा की निम्न मान्यता है । यह न समझो कि मैं व्यवस्था (मुसा की किताव) या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ । क्योंकि मैं तुमसे सच्च कहता हूँ, कि जव तक आकाश और पृथ्वी टल न जायें तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दू भी पुरा हुए बिना नहीं टलेगा इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलायेगा, ।

मत्तीबा-५-आ १७ से १९

उपर्युक्त जिन पुस्तकों के लिये हज़रत ईसा ने ऐसे शब्द कहे हैं, मैं पाठकों से बल पूर्वक निवेदन करुंगा कि वे इस पुराने धर्म नियम को एक बार अवश्य पढ़ कर देखें कि उनकी शिक्षाएं कहां तक सृष्टि नियम तथा मनुष्यों के उत्थान तथा अन्य पशु पक्षियों और मनुष्य मात्र के हितकर हैं । हम, इस पुराने धर्म नियम की आलोचना नहीं करेंगे केवल ईश्वर के विषय में थोड़ा सा लिखेंगे, शेष पर लिखना समय व्यर्थ खोना है जो धर्म यह

कहता है कि मेरा धर्म पुस्तक ईश्वरी ज्ञान है. उसके कहे ईश्वर के स्वरुप को ही जान लेना पर्याप्त है ।

ईसाई मान्य पुस्तकों में ईश्वर का स्वरूप

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, और पृथ्वी बेडोल और सुन्सान थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था, तथा परमेश्वर का आत्माजल के ऊपर मण्डलाता था ।

उत्पत्ति बा १–आ–१–२

पृथ्वी बेडोल थी, क्या खुदा ने बेडोल बनाई—या पहले से ही बेडोल थी ! यदि खुदा ने बनाई तो बेडोल क्यों बनाई ! परन्तू जल की उत्पत्ति नहीं लिखी, किन्तु गहरे जल पर परमेश्वर के आत्मा का मण्डलाना लिखा, क्या परमेश्वर विना किसी उद्देश्य के ही जल पर मण्डलाता फिरता था, यहां कुछ पक्षी जल पर मंडलाते हैं परन्तु उनका विशेष उद्देश होता है, यहां तो केवल ईश्वर के आत्मा का जल पर ही मण्डलाना लिखा, यदि युहन्ना के दो शेष वचन तथा पवित्र आत्मा कहां थे, अस्तु, दूसरी बात एक और है, परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर आदम को वनाया, वह शरीर ईश्वर का कहां था जल पर तो केवल आत्मा ही मण्डलाती थी यहां पर आकाश और पृथ्वी को ईश्वर ने रचा । मगर युहन्ना कहता है वचन ही आदि में परमेश्वर के साथ था ......सब कुछ उसीके द्वारा उत्पन्न हुआ उसमें से कोई वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई, बाव--३--युहन्ना बा-१-फिर इब्रानियों ने लिखा है ।

इन दिनों के अंत में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसनें उसे

(३) ❀ इंजिलों में परस्पर विरोधी कल्पनाएं ❀

सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया, और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।

इब्रानियों के नाम पत्री-१-२

यह वाक्य जो ऊपर लिखे हैं वह हिन्दी की नई छपी इंजील से लिखे हैं—किन्तु उर्दू की पुरानी छपी इञ्जील में यह शब्द है। ऐ खुदावन्द तूने इब्तदा (आरंभ) में जमीन की नींव डाली, और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है।

इब्रानियों-१-२

हिन्दी में तो परमेश्वर ने उसे सृष्टि बनाने का अधिकार दिया किन्तु उर्दू में स्वयं ही बनाई लिखा है अस्तु, कुछ हो किसी ने बनाई हो, हम तो यह कह रहे थे, कि खुदा की आत्मा का जल पर मंडलाना उसे सीमित सिद्ध करता है। ऐसी सीमित आत्मा जगत का निर्माण नहीं कर सकती, और फिर ऐसी बाणी को परमेश्वर का ज्ञान कहना सर्वथा भ्रान्ति है। अब देखिये खुदा ने आदम को तो भूमि की मिट्टी से बनाया। उत्पत्ति २-७

परन्तु सारी सृष्टि के वस्तुओं की अभाव से ही उत्पन्न किया जो सर्वथा असम्भव है। उत्पत्ति २-७ अश्शेयो ला यूकबलां अदमेही बाला जिद्दही (इशारात) कोई शय अभाव से भाव में नहीं आसकती और न भाव वस्तु अभाव को प्राप्त हो सकती है।

फिर खुदा ने अन्धेरे को कहा कि प्रकाश हो जा, सूर्य तो अभी बना नहीं था ऐसे ही खुदा ने अंधेरे को उजाला बना दिया, इस अवस्था में अंधेरे का अस्तित्व संसार में नहीं रहना चाहिये था, परन्तु अन्धेरा तो विद्यमान है जब अन्धेरे को खुदा ने प्रकाश के रूप में परिवर्तित कर दिया

तो फिर अंधेरा कहां से आ गया, वहाँ यह लिखा नहीं कि चार दिन के लिये सूर्य के बनने तक अस्थाई तौर से प्रकाश बनाया, जब अंधेरा प्रकाश हो गया तो फिर अन्धेरे को रात कहने का कोई अवसर ही नहीं रहता क्योंकि अन्धेरा तो उजाला हो गया था।

आदम को बनाने के पश्चात् पुनः खुदा ने अदन में पूर्व की ओर सुन्दर बृक्षों से सुसज्जित एक वाटिका बनाई, और वाटिका के मध्य में एक जीवन के बृक्ष को और दूसरा भले व बुरे की पहचान के बृक्ष को लगाया।

उत्पत्ति २-१६

यह दो अनोखे वृक्ष यहोवा की कारीगरी का विशेष चमत्कार है, निर्बुद्धि मनुष्यों को बहकाने के लिए है, भला पांच भूतों से निर्मित शरीर फल खा कर अमर हो जाए, यह बाई-बिल के खुदा यहोवा की मान्यता में ही आसकता है कि कर्म, धर्म करने, ज्ञान प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं, यह फल ही अमर कर देगा। कोई बुद्धि जीवी व्यक्ति तो इसको कदापि स्वीकार नहीं कर सकता, यह केवल बाइबिल के यहोवा की मिथ्या विश्वास युक्त भ्रान्ति है, इसी प्रकार ज्ञान प्रदत्त बृक्ष को भी समझें यहोवा को उचित था कि नगर नगर में इन दोनों बृक्षों को लगा देता जिससे ज्ञान प्राप्ति व्यय से लोग बच जाते और मोक्ष के लिये कठिन परिश्रम न उठाना पड़ता, बृक्ष का फल खाया ज्ञानी बन गए और मोक्ष भी प्राप्त हो गई। और मृत्यू के बन्धन से भी छूटकारा हो गया।

मगर बाइबिल के स्वाध्याय से प्रतीत होता है कि बाईबिल का खुदा यहोवा मनुष्यों के साथ यह सलूक करने को उद्यत नहीं

है। ज्ञान का फल खाने से तो आदम को रोक दिया और जीवन के वृक्ष की रखवारी के लिए चमकती तलवारों का कडा पहरा लगा दिया, कि कहीं आदम उस फल को भक्षण न कर ले।

बुद्धि का फल खाने से तत्कालिक प्रभाव

यहोवा ने अपनी उपरोक्त बात को प्रमाणित करने के लिए एक घटना भी लिख दी, ताकि मेरी युक्ति पर मनुष्यों को विश्वास हो जाए, यथा

जब सांप ने हव्वा वा आदम को बहका कर ज्ञान के वृक्ष का फल खिला दिया, तो खाते ही उनकी आंखें खुल गई, और उन को मालूम हुआ, कि हम नंगे है' उत्पत्ति (३—७) यह दोनों इतने वेसुद्ध थे, कि उनको अपना नंगा पन भी जान नही पड़ता था,) अपने नंगे पन को ढांकने के लिए उन्होने इंजीर के पत्तों के लंगोट बना कर पहन लिए। उत्पत्ति ३—८

यहोवा की अनभिज्ञता

तव यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठन्डे समय बाटिका में फिरता था (बाटिका कीं सेर न करे तो क्या बीमार हो जाये) उसका शब्द उन को सुनाई दिया) तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के बृक्षों के बीच यहोवा परमेश्बर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर नें पुकार कर आदम से पुछा, तू कहाँ है उसने कहा-कि मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया, क्योंकि में नंगा था। उसने [खदाने] कहा कि किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है, जिस वृक्ष का फल खाने को मैने तुझे वर्जा था, क्या

तूने उसका फल खाया है। उत्पत्ति ३।७।१२ से तक [खूदा को पता न लग सका कि फल खाया है या नही]

फिर आदम ने यहोवा के पुछने पर कि फल क्यो खाया कहा कि हव्वा ने मुझे दिया तो मैंने खाया, हव्वा से पूछा-कि तू ने फल क्यों खाया; तो उस ने कहा कि साप ने मुझे बहका कर खिला दिया। तब यहोवा ने तीनों को दण्डित किया।

उत्पत्ति ३—८ से २१

खूदा को दोनों से कारण पुछना पड़ा कि फल क्यों खाया क्योंकि ठण्डे समय वाटिका की सेर करने वाला सर्वज्ञ नही हो सकता, (यह है यहोवा का सृष्टि क्रम का कृत्य)

(४)

खुदा की कल्पना

यहोवा परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है, अतः अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी खाले, और सदा जीवित रहे। तब यहोवा ने उसे अदन की बाटिका से निकास दिया, कि वह भूमि पर खेती करे।

और जीवन के बृक्ष का पहरा देने के लिए अदन की बाटिका में करुबों को नियुक्त कर दिया

उत्पत्ति ३—२२ से २४ तक

निम्न बातों को ध्यान पूर्वक देखें।

(१) मनुष्य भले, बूरे के विवेक में हम में से एक के समान हो गया है, न जाने उस समय कितने खुदा थे कि जिनमें से आदम एक के समान हो गया, भाषा की शैली की दृष्टि से यह वाक्य व्यर्थ है। यदि खुदा बहूत थे, और ज्ञान में समान थे तो यही कहा जा सकता था कि ज्ञान में आदम हमारे समान हो गया है और यदि इस यहोवा श्रेणी के व्यक्तियों में कूछ ज्ञान में अन्तर था, तो कहना चाहिये कि आदम अमुक के समान हो गया अस्तु।

(२) ऐसा न हो कि आदम जीवन के वृक्ष पर छापा मार कर खा लेवे, और सदा के लिए अमर हो जावे, क्या कोई बुद्धि-जीवी मनुष्य उपरोक्त वाक्य की सत्यता को प्रमाणित कर सकता है, कि फल खाने मात्र से पंच भौतिक शरीर अमर हो जाएं, संयोग जन्य निर्मित वस्तु कभी अमर नही हो सकती।
(३) हम पूछते हैं कि खुदा ने जीवन का वृक्ष किस प्रयोजन के लिये बनाया था क्योंकि यहोवा और उसके साथी तो अमर ही थे, और किसी अन्य को वह खाने देना नही चाहते थे. इस गाथा से पता चल गया कि यहोवा नहीं चाहता कि मनुष्य बुध्दि मान बने और अमर हो जाए (ख्याल मत कीजिये, यह बाईबिल का यहोवा है)

यहोवा की अल्पज्ञता

यहोवा ने मनुष्य को अपने स्वरुप पर बनाया और देख भी लिया कि अच्छा हैं। परन्तु अभी बहुत समय नही व्यतीत हुआ था

कि यहोवा के स्वरुप पर उत्पन्न हुआ मनुष्य बुराई की मूर्ति वन गया, और जिस यहोवा ने इनसान को वनाया था. ताकि सृष्टि क्रम चले, वही यहोवा उन के विनाश के लिए काल रूप वन गया देखिये। यहोवा ने देखा कि मनुष्य की बुराई पृथ्वी पर पढ गई है, और उनके मन में जो विचार उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है,.......तव...यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य के वनाने से पछताया। और वह मन में अति खेदित हुआ—मतशोक में पड़ा यहोवा वह कर्मो का प्रताप है। अव प्रश्न यह है—कि जव यहोवा ही पूर्ण रुप से मनुष्य का निर्माता है, तो उस ने ऐसी अवज्ञाकारी सृष्टी क्यों बनाई जिसके कारण उसे पछताना और खेदित होना पड़ा हम पूछते है कि ए चौथे आसमान पर स्थित यहोवा मनूष्य बनाते समय क्या आप को पता नही लग सका कि जिस मनुष्य सृष्टि को मैं बना रहा हुँ, वह पाप की प्रति-मूर्ति बन जायगी, यदि ऐसा नही तो क्या बिना सोचे समझे ही ऐसी सृष्टि वन गई जो यहोवा के लिये दुःख तथा क्लेश का कारण वन गई, उपरोक्त दोनों बातें परमात्मा के गुण कर्म तथा स्वभाव के विरुद्ध है,इससे स्पष्ट है कि बाइबिल का बनाने वाला ईश्वर के गुण कर्म तथा स्वभाव से अपरिचित है, यदि उस को ज्ञान होता. तो भगवान को पछताने वाला और खेदित होने वाला वर्णन न करता और उपरोक्त दोषों से भगवान को दूषित करना उसे अज्ञानी ठहराता है।

यहाँ तक ही नहीं और भी देखिये ।

सो यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसे मैंने सिरजा है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा, (यहाँ तक ही नही) क्यो

मनुष्य पशु क्या रेंगने हारे जन्तु क्या आकाश के पक्षी सब को मिटा दूंगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं।

उत्पत्ति ५-२ से ८ तक

इलाही खैर हो तेरे इन मासूम बन्दों की।
आज रुख़ बदला हुआ है उस बुतेबे पीर का॥

अब देखिये यहोवा किस कदर आवेश में आकर क्रोधित हो, गया कि मनुष्यों के साथ निर्दोष पशु-पक्षियों तथा कीट पतंगों को भी मिटाने के लिए उद्यत हो गया।

बदलती है जब यह क्रोधी की फितरत।
नहीं सुनता फिर वह दलील और हुज्जत॥

क्या ऐसा व्यक्ति भी परमेश्वर कहला सकता है, जो क्रोध के वशीभूत होकर अप्राधी तथा निरापराधहियों को एक ही रस्से से बांधकर मौत के घाट उतार दे।

खुदा बचाये कि यासो हस्रत की बिजलियां इस पे कूदती हैं।
कहीं न हो जाए राख जल कर रहा सहा आशियाँ हमारा॥

हम कहते हैं कि यहोवा ने ऐसी, सृष्टि क्यों बनाई—जिसके बनाने से सब निर्दोषों को भी विनाश करना पड़ा।

चरा कारे कुनद आकिल, कि बाज़ आयद पशेमानी
बुद्धिमान ऐसा काम क्यों करे जिससे लज्जित होकर पछताना पड़े।

यहोवा केसा परमेश्वर है उसके मस्तिष्क में यह बात तो आई नही कि सब का सुधार करके संसार को स्वर्ग धाम बनादूं । अपितु उल्टी विनाश करने की बात हो सूझी ।

क्या परमेश्वर का ऐसा गुण, कर्म, तथा स्वभाव बताने वाली पुस्तक ईश्वरी ज्ञान कहला सकती है ईश्वरी ज्ञान तो सन्मार्ग पर ले लाने वाला दया का सागर होना चाहिये न कि विनाशकारी शिक्षा ।

वह निगाहें जिन सी थी मुझको मुहब्बत की उम्मेद ।
तिश्नए खूं, आफ़ते दिल दुशमने जां हो गई ।।

फिर देखिये यहोवः की प्रतिज्ञा, कि सब का विनाश कर दूंगा पूरी भी न हुई, और झट पैंतड़ा बदला, और कहा ।

मगर यहोवा की अनुग्रह दृष्टि नूह पर बनी रही, नूह का बृतान्त यह है, कि नूह धर्मी पुरुष और अपने लोगों के समय खरा था और नूह परमेश्वर के साथ साथ ही चलता रहा (मनुष्य के साथ चलने वाला बाइबिल का यहोवा है)

उत्पत्ति-६-१०

नूह खुदा के साथ चलता रहा, परन्तु खुदा ने नूह की शराब न हटाई और वह (नूह) दाख मधु पी कर मतवाला हुआ, और अपने तंबू के भीतर नग्गा हो गया, उत्पत्ति १८-२२ फिर नूह ने खुदा की आज्ञा से नाव बनाई और उसमें कुछ मनुष्य पशु, पक्षी, आदि को चढ़ा लिया, जल प्रलय ने उनको छोड कर शेष सब को विनष्ट कर दिया ।

फिर यहोवा का क्रोध कैसे शान्त हुआ

—:—

जब वाड का जल सूख गया, तब नूह और नाव के सब जीव जन्तू भूमि पर उतरे, तो नूह ने एक वेदी बनाई, और शूद्ध पशुओं और पक्षियों में से कुछ लेकर यहोवा के लिए होम बलि चढाई बस फिर यहोवा ने सुख दायक सुगन्ध पा कर सोचा कि मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को कभी स्राप न दूगा। यद्यपि मनुष्य के मन वचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है। सो पूरा ही होता है तो भी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है। वैसा उन को फिर कभी न मारूगा।

उत्पत्ति ८-२० से २२

यहोवा की हालत ठीक उस अस्थिर मनुष्य जैसी है जो क्षणे रूण्ठे, क्षणे तूष्ठे रूण्डे तुष्डे क्षणे क्षणे।

अव्रि वस्थित तु चित्तानां प्रसादोपिभयन्करा।

झट ही रुठा झट हो सन्तुष्ट गया क्षण में रूष्ठ और क्षण में प्रसन्न जिस का चित्त स्थिर न हो उस की कृपा बडी भयंकर होती है।

यह यहोवा भी कैसे विचित्र मस्तिष्क वाला प्राणी है नूह ने कुछ पशु तथा पक्षी अग्नि में डाल कर यहोवा को बलि भेट की, यहोवा उस जलते मांस की गंध सुंघ कर प्रसन्न हो गया, आग में जलते मांस की इतनी भयंकर दुर्गन्ध होती है कि यदि कोई शुद्ध मस्तिष्क रखने वाला व्यक्ति उस आग में जलते मास

के पास से निकल जाय तो दुर्गन्ध के मारे उश का नाक में दम आ जायगा और यह बाइबिल का यहोवा उस दुर्गन्ध को सुगन्ध हीं मानता हैं, और उस सुगन्ध से बड़ा प्रसन्न होता है, क्या ? निर्दोष पशुओं को अग्नि में जलाना और उस से प्रसन्न होना ईश्वर का काम है क्या यह न्यायकारी और दयालु भगवान हैं। जो निर्दोषो की बलि से प्रसन्न होता।

जिस दिल से थी उमेद चढायगा ला के फूल ।
गुल कर गया चिराग वह मेरे मिज़ार का ॥

मैं लम्बे चोगे वाले पादरियों से कहता हूँ यह अत्याचार की शिक्षा यह बे गुनाहों का खून क्या वह सब का मालिक कभी कह और कर सकता है, ऐ मान्स खोरो।

आह से मजलूम की डर ज़ालेमे नख़वत प्रस्त ।
सामने जिस के ज़मीनों आसमां कुछ भी नहीं ॥
बे कसों की आह से ज़ालिम को लाज़िम है ग्रेज़ ।
आतिमे कहरे खुदा है हर शरारा आह का ॥
बे जुल्मों खता जिस ज़ालिम ने मज़लूम ज़िनह कर डाला ।
उस ज़ालिम के लोहू का फिर बहता नदी नाला है ॥
मत ग़रीब को छेड़िये बुरी ग़रीब की आह ।
मरे बकरे की खाल से लोहा सस्म हो जाय ॥

यह यहोवा ऐसा है, जो मांस की ही भेंट स्वीकार करता हैं। देखें—

कुछ दिन बीतने पर कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया।

और हाविल भी अपनी भैड़ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट करने को ले आया, और उनकी चर्वी चढ़ाई, तब यहोवा ने हाविल और उसकी भेंट का मान्य किया पर कैन और उस की भेंट का उसने मान न किया तब कैन अति क्रोधित हुआ। उत्पत्ति-बा-४-वा० २ से ५

यहां पर भी खुदा ने मांस की भेंट स्वीकार की और सात्विक भेंट का तृस्कार किया जिसके परिणाम स्वरुप कैन ने हाविल को मार डाला। ४—८ उत्पत्ति

ऐसे खुदाओं के मानने वालों ने ही दुनिया में अंधेर मचा रक्खा है। और एक को दूसरे के खून का प्यासा वना दिया है। फिर कैसा खुदा है—

हनोक खुदा के साथ तीन सो वर्ष चलता रहा।

और हनोक तीन सौ वर्ष लों परमेश्वर के साथ चलता रहा। उत्पत्ति-५-२३

खुदा के साथ हनोक के चलने की मिथ्या वात कल्पना कर के बाइविल ने यह प्रमाणित कर दिया—कि इसका माना हुआ खुदा इनसान के सदृश ही है।

यहोवा मनुष्यों में एकता नहीं चाहता।

सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थीं, उस समय लोग पूर्व की ओर चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उसमें वस गए, तव वे आपस में कहने लगे, आओ हम ईंटे बना बना के भली भांति पकाएं सो उसके लिए ईंठे,

पत्थरों का और मिट्टी की राल गारे का काम देती थी, फिर उन्होंने कहा, कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें,............न हो कि हमको सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े, जब आदमी नगर और गुम्मट बनाने लगे, तब उन्हें देखने के लिए यहोवा उतर आया, और यहोवा ने कहा, कि मैं क्या देखता हूं, कि सब एक हो दल के हैं, और भाषा भी उनकी एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरंभ किया, सो अब जितना वे करने का यत्न करेंगे उसमें से कुछ उन के लिए अनहोना न होगा। सो आओ हम उतर कर उनकी भाषा में वहीं गड़-बड़ डालें, कि वे एक दूसरे की बातों को न समझ सकें। सो यहोवा ने उन्हें वहाँ से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।

बाब ११-आ-१ से ९

तब वे लोग नगर न बना सके और इस स्थान का नाम बाबिल हुआ क्योंकि यहोवा ने सारी पृथ्वी की भाषा में यहाँ ही गड़बड़ डाली थी, अब यहोवा के इस कृत्य को आपने देख लिया—कि यहोवा कैसे मनुष्यों की एकता और उन्नति में बाधक है।

याकूब से मल्ल युद्ध-

और याकूब आप अकेला रह गया, तब कोई पुरुष आकर पह फटने लों उससे मल्ल युद्ध करता रहा।

उत्पत्ति ३२-आ--२५

इस जगह का नाम—

तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान का नाम फ़ना एल रक्खा, कि परमेश्वर को सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।

उत्पत्ति ३२--३१

वाह कैसा जिन्दा दिल खुदा है, दिल में सूझी तो रात मल्ल युद्ध करते ही गूजार दी।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुरदा दिल क्या खाक जिया करते है।।

(ऐसा है यहोवा)

तब यहोवा ने मूसा से कहा—

यहोवा बादल के अन्धेरे में होकर आयेगा।

सुन मैं बादल के अंधयारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इस लिए कि जब मैं तुम से बाते करूं, तब वे लोग सुनें, और सदा तेरी प्रतीति करे।

निर्गमन बा १६—आ १०

मूसा को अन्ध विश्वासी बनाने के लिए चाल चली। (ऐसे तमाशे मायावी बहुत करते है) जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका, तब उसने मूसा को अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देने वाली पत्थर की दोनों पट्टियायें दी।

३१—१८ निर्गमन

खुदा की अंगूली बड़ी शक्ति-सालिनी है-कि पत्थर पर लिखने की क्षमता रखती है। उस समय खुदा को पता तक न था-कि कागज भी कोई वस्तु होती है और कागज बन सकता है।

सत्तर व्यक्ति एकत्रित करके लाओ

यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएली पुरनियों में से सत्तर

ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर जिनको तू जानता हो, जो उनके सरदार हों, और (उन्हें) मिलाप वाले तंबू के पास ले आ कि वे तेरे साथ वहां खड़े हों, तब मैं वहां उतर कर तुझ से बातें करूंगा।

गिन्ती ११-१६-१७

खूदा का उतरना और बातें करना स्पष्ट करता है—कि खुदा भीं मनुष्य की भान्ति सीमित तथा एकदेशी। यह नाटक लोगों को पथ भ्रष्ट करने के लिए बहुत अच्छा था, तंबू में से जो चाहे बोले, लोगों को बहकाना हो तो हैं।

कैसे यहोवा उतरा-

तब मूसा ने सत्तर पुरुष तम्बू के चारों ओर खड़े किये, तब यहोवा ने बादल से उतर कर मुसा से बातें की।

गिन्तीं ११—२५

यह बादल तो इस्राएलियों के खुदा का वाहन है और हवाई जहाज का काम देता है।

खुदा पहाड़ पर लोगों की जेवनार (जयाफ़त) चिकने पदार्थों और शराब से करेगा

ओर सैनाओं का यहौवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिए ऐसी जेवनार करेगा, जिस में भान्ति भान्ति का चिकना भोजन और थिराया हूआ दाख मधु होगा, चिकना भोजन होता उत्तम से उत्तम और थिराया हुआ दाख मधू खुब थिराया हुआ होगा और जो पर्दा सब देश के लोगों पर पड़ा हैं, और जो ओंहार

परदा अन्य सब जातियों पर पड़ा हुआ है। उन दोनों को वह इसी पर्वत पर नाश करेगा।

यशायह २५-६-७

खुदा के जेवनार में शराव की क्या कमी, पेट भर कर पीने को मिलेगी।

यहोवा परमेश्वर का आगमन, परमेश्वर अपना तेज दिखायगा हमारा परमेश्वर आयगा और चुप न रहेगा, उसके आगे आग भस्म करती जायगी और उसके चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी, वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए ऊपर से आकाश को और पृथ्वी को भी पूकारेगा।

भजन संहिता ५०—३—४ भापक

न्याय के लिए यहोवा आ रहा है तभी तो इतने वडे तमतराक से आयगा, अन्यथा कौन जाने यह न्यायकारी है आकाश को ऊपर से पूकारेगा, हां जंगली लोग आकाश को ऊपर ही समझते हैं।

क्यों पाठक वृन्द ! देखा आपने कैसा खूदा हैं।

यहोवा के कृत्यों को देखो–

(यहोवा ने कहा) क्योंकि उस रात को में मिस्र देश के वीच होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य, क्या पशु सब के पहिलौठों को मारूंगा, और मिस्र के सारे देवताओं को भी में दण्ड दुंगः. मैं तो यहोवा हूं, और जिन घरों में तुम रहोगे, उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित चिन्ह ठेरेगा, अर्थात मैं उस लोहू को देख कर तुम को छोड़ जाऊंगा।

निर्गमन १२—१३

आगे भी देखें खुदा रात्रि को तुम्हारे घर कैसे पहचाने-

फिर मुसा ने कहा, यहोवा यों कहता है. कि आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूंगा, तब मिस्र में सिंहासन पर विराजने हारे फिरऔन से ले कर चक्को पीसने हारी दासी तक सब के पहिलौठे वरन पशूओं तक के सब पहिलौठे मर जायेगे। और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा। यहां लों कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा।

निर्गमन ११—आ ५—६—७

यहोवा ने वचन पूरा कर दिया-

आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर बिराजने हारे फिरौन से लेकर गडहे में पड़े हुए बन्धत सब के पहिलौठों को वरन पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला.... मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा ऐसा कोई घर न था—जिस में कोई मरा न हो।

निर्गमन १२ आ २८—२९

(ऐसा शक्तिशाली यहोवा है, बच्चों पर ही टूट पड़ा)

यहोवा इस्राएलियों का अवज्ञाओं का वर्णन करता हुआ कहता है मैंने तुम से कहा, उन के कारण त्रास मत खाओ, और न डरो, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे

चलता है, सो आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा । जैसे कि उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिए किया ।

व्यवस्था विवरण १ आ २६—३०

कैसा हितचिन्तक यहोवा है [भयभीत] लोगों के आगे-आगे भी चलता है और उनके शत्रुओ से युद्ध भी करता है ।

खुदा यहोवा के लिए मकान बनाओ-

उसी दिन रात को यहोवा का यह वचन नातान के पास पहूंचा, कि जा कर मेरे दास दाऊद से कहो कि यहोवा यूं कहता है कि क्या तू मेरे निवास के लिये घर बनवायेगा, जिस दिनसे मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया । आज के दिन लौं मैं कभी घर में नहीं रहा । तंबू के निवास में आया जाया करता हुं, जहां जहां मैं सारे इस्राईलियों के बीच आया जाया किया । क्या मैंने कहीं इस्राएल के किसी गोत्र में जिसे मैंने अपनी प्रजा इस्रा-एल की चरवाही करने को ठहराया हो ऐसी बात कभी नही । कही कि तुमने मेरे लिए देव दारू का घर क्यों नहीं बनवाया ।

शमूएल भाग-२-बाव ७–आयत-४-५-६-७-८

आगे दाऊद को कहा कि मैंने तेरे साथ यह उपकार किये मगर तूने मेरा घर न बनाया मगर शौक है कि यहोवा दिन रात गर्मी और ठण्ड में बेचारा वाहर या तम्बू में ही पड़ा रहता, परन्तु दाऊद के घर बनाने के लिए कहने पर भी दाऊद घर न वना सका ।

फिर घर यहोवा का किसने बनाया

फिर नातान को कहा—यहोवा कहता है, कि तू मेरे दास दाऊद को कह कि तू मेरे निवास के लिए घर न बना पाएगा। आगे वही है जो ऊपर लिखा है।

इतिहास भाग-१-वाव-१७-आयत २ से १५ तक

दाऊद तो मकान न वना सका—किन्तु सुलेमान ने बनाया—कैसा मकान वनाया।

तव सुलेमान ने यरूशलेम में मारिया नाम पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरंभ किया।............ सुलेमान ने जो परमेश्वर का भवन वनाया उस का यह ढव हैं। लम्बाई—साठ हाथ, चौड़ाई—२० हाथ थी............और भवन के सामने—औसारे की लम्वाई भवन की चौड़ाई के वरावर २० हाथ की और उसकी ऊंचाई १२०-हाथ की थी। और सुलेमान ने उसको भीतर वार चौखे सोने से मढवाया। और भवन के बड़े ३ भाग की छत उसने सोवर की लकड़ी से पटवाई और उस को अच्छे सोने से मढ़वाया............फिर शोभा देने के लिए उसने भवन में मणि जड़वाये......... ....और उसने भवन की कडियों, ड्योढ़ियों भीतों, और किवाड़ों को सोंने से मढ़वाया ....इत्यादि वहुत कुछ यहोवा के घर वनाने के विषय में लिखा है।

इतिहास भाग २ वाव ३ आयतें २ से लेकर १७ तक

(जव मकान वन चुका) जब सुलेमान प्रार्थना कर चुका। तव स्वर्ग से आग ने गिर कर (होम) वलियों को

भस्म किया। और यहोवा का तेज भवन में भर आया और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया...... ...और फिर सुलेमान ने २२ हज़ार बैल और एक लाख बीस हज़ार भेड़ बकरियां चढ़ाई यों सारी प्रजा समेत राजा ने यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की।

इतिहास भाग २ बाब ७ आयत १ से ६

जब खुदा जो बिना मकान के मारा मारा फिरता था उसका भवन बन गया और वह भी एक नागरिक की तरह रहने लगा भला हो सुलेमान का पिदर नतगावद पिसर तमामकुनद बाप तो न बना सका किन्तु बेटे ने बना दिया और प्रतिष्ठा भी कैसी शान से की सुलेमान ने काली के मन्दिर को भी मात कर दिया पाठक भी दूर से यहोवा के दर्शन कर लें क्योंकि भवन में तो यहोवा के तेज के कारण जा नहीं सकते।

(यह है बाइबिल का खुदा)

खुदा यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा भँग की

हम पहले लिख चुके हैं—कि जब नूह ने नाव से निकल कर यहोवा को पशु बलि दी तो यहोवा ने प्रसन्न होकर कहा—कि मैं भविष्य में कभी ऐसा नहीं करुंगा—मगर अब फिर वही किया। विश्व को मिटाने के लिए प्रयोग की जो उत्पत्ति पुस्तक में नूह के समय की थी।

अलाही ख़ैर हो इन तेरे मासूम बन्दों पर।
आज रुख़ बदला हुआ उस बुते बे पीर का है॥

क्या कहा—

धरती पर से सब का अंत कर दूंगा, यहोवा की यही

वाणी है। मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूंगा। मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का और दुष्टों समेत उनकी रखी हुई ठोकरों का भी अन्त कर दूंगा। मैं मनुष्य जाति को भी धरती पर से नाश कर डालूंगा। यहोवा की यही वाणी है। यहोवा की पहली वाणी थी कि मैं मनुष्य के कारण फिर कभी भूमि को शाप नहीं दूंगा.................तो भी जैसा मैंने जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारुंगा।

उत्पत्ति ८—२२

अब देख लीजिए यहोवा अपनी पहली प्रतिज्ञा को भूल कर सबको विनाश पर तुल गया।

सपन्याह वाब १ आयत २-३-४

यहोवा का दिन कैसा होगा

सुनो यहोवा का एक दिन ऐसा आने वाला है। कि तेरा धन लूट कर तेरे बीच में बांट दिया जायेगा। क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिए इकंठ्ठा करूंगा। और वह नगर से लिया जायेगा। (कैसे लिया जायगा) और घर लूटे जायेंगे, और स्त्रियाँ भ्रष्ट की जायेगी (यह है खुदा का दिन) और नगर के आधे लोग नगर में ही रहने पायेंगे। तब यहोवा निकल कर उन जातियों से ऐसा लडेगा। जैसा वह संग्राम के दिनें में लड़ा था। (आखिर यहोवा निर्बल थोडा है वीर का काम तो युद्ध करना ही होता है) खुदा के इस दिन में लूट का बाजार गरम होगा स्त्रियों को भ्रष्ट कियाजायेगा और यहोवा ऐसा लड़ेगा जैसे पहले लड़ा था ऐसा है बाइबिल का खुदा।

जकर्याह मध्य १४ आयत १-२

अब खुदा का सोने से भढा हुआ सुन्दर मकान बन गया, उसकी प्रतिष्टा भी हो गई तब भगवान यहोवा ने एक नई घोषणा की वह । यहोवा होम बलियों और बछड़ों की चरबी से अघा गया है ।

यहोवा यह कहता है—कि तुम्हारे बहुत से मेल बलि मेरे किस काम के हैं मैं तो मेढ़ों की होम बलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा (उक्ता) गया हूँ । मैं बछड़ों वा भेड़ के बच्चों वा बकरों के लोहू से प्रसन्न नहीं होता ।

यशायाह अ. १ या ११-१२

हमने यहोवा को ठीक स्थान पर ला कर बिठा दिया हैं-मैं पाठकों से प्रार्थना करूंगा—कि वह मेरी भांति यहोवा के लिए कामना करें—कि यहोवा अपनी इस घोषणा पर सदैव स्थिर रहे, और चर्बी आदि भविष्य में न खाएं हमने खुदा के लिये थौडे से प्रमाण पुराने नियम से लिखे हैं क्योंकि पुराने धर्म नियम में तो बहुत ही ईश्वर के गुण कर्म तथा स्वभाव के प्रतिकूल लिखा है, यह हमने नमूना मात्र ही लिखा । क्योंकि नशतर को ले के हाथ में फ़स्साद ने कहा—

रग रग में है फ़तूर लगाऊं कहां कहाँ ।

कितना लिखा जाए यहां तो ऐसा ही सब है ।

अब हम थोडा सा दिग दर्शन अपने पाठकों को नये धर्म अर्थात् इंजीलों से कराते हैं—यथा ।

हम अन्यत्र लिख चुके हैं—कि नए धर्म नियम के अनुसार सृष्टि कर्ता वचन जो देह धारण कर यीशू के रूप में आया वह है । ऐसा मानने वाले मनुष्य नास्तिक की कोटी में आते हैं ।

—

प्रकरण दूसरा

नये धर्म नियम (इञ्जीलों) में ईश्वर का स्वरूप

यूहन्ना का कथन

"आदि में वचन था अ र वचन परमेश्वर के साथ था। और वचन परमेश्वर था, यही (वचन) आदि में परमेश्वर के साथ था, सब कुछ इसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ, उस में से कोई भी वस्तु उस के बिना उत्पन्न न हुई" यहूना १-१/३ अलाहाबाद १९५० ।

समीक्षा:—यीशू के सब चेलों में से किसी ने भी यूहन्ना के अतिरिक्त इस सिद्धांत को पेश नहीं किया। पुराने और नए दोनों अह्द नामों में किसीने भीं इस विचार का प्रति पादन नहीं किया, सबने एक ही खुदा माना और उसे ही जगत कर्ता स्वीकार किया जैसा कि हम आगे चलकर लिखेंगे। यूहन्ना ने बेटे के साथ खुदा की कल्पना तो की, मगर खुदा को नाम मात्र ही रख कर बेटे को ही प्रधानता दी और जगत निर्माता वचन (जो बेटा कहाया) को ही माना और ईश्वर की कोई सत्ता ही न रहने दी, मगर यूहन्ना के उपर्यु क्त कथन से भी तीनकी सिद्धी किसी प्रकार से नहीं हो सकती। बाप और बेटा दो ही तो है। पादरी साहिबान का कहना है कि इबरानी इञ्जील में अलवहीम शब्द है, जिससे बाप बेटा और पवित्रात्मा तीनों का ही बोध होता है, मगर हमारा कहना है कि यूहन्ना जिस ने इस विषय को पेश किया वह अलवहीम शब्द से क्या जानकार नहीं था ? और दूसरा भी कोई नहीं जानता था ?

हां मत्ती में जिमनन तौर से प्रसंग वश तीनों का जिकर आया है, जिसे योशू के मरने के बाद पेश किया जाता है, उससे भी किसी प्रकार तीन खुदा प्रमाणित नहीं होते जैसे मत्ती कहता है।

"गलील पर्वत पर यीशू ने कहा कि आसमान और जमीन का कुल अधिकार मुझे दिया गया है। बस तुम सब जातियों को चेला बनाओं, और उन्हें पिता पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। मत्ती २८-१८,१६।

समीक्षाः— इसमें संकेत मात्र भी नहीं कि यह तीनों खुदा है, और तीन में एक और एक में तीन है। और बेटा ही बाप है, अब देखना यह है कि यह तोनका (तसलीस) का सिद्धांत कहाँ से आया, स्वाध्याय शील महानुभाव जिन्होंने अफलातून के सिद्धातों को देखा है, वह जानते है-कि उस का कहना है कि पवित्र एक खुदा से भिन्न संसार कैसे पैदा हुआ-उसने एक परमेश्वर के तीन विभाग माने।

एक आदि कारण परमेश्वर, दूसरा बुद्धि या लुगास, तीसरा विश्व की रुह। उसने भी लुगास को बेटा मान कर दुनिया का बनाने वाला माना है।

यूहन्ना ने इस अफलातून के सिद्धांत को ले कर अपनी इञ्जील में दर्ज कर दिया। यह अफलातून का सिद्धात पौराणिक मत का माना हुआ लग भग शब्ल ब्रह्म का सिद्धांत है। और श्री रामानुजजी के साथ मेल खाता है।

मगर हम बताना चाहते हैं कि यह सिद्धांत यूहन्ना के पहले पत्र में दर्ज था, मगर नई इञ्जिलों में जो १८६० के पश्चात छपी उन में से निकाल कर बिल्कुल दूसरा वाक्य डाल दिया गया, यह कैसे निकाला गया इस के विषय में पीछे लिखेंगे।

इन इञ्जोलों में कितना फेर बदल किया, यह १८७५ से पहले की छपी पुस्तकों के साथ १६५० की इञ्जीलों के साथ मिला कर पढ़िये। यूहन्ना ने क्या लिखा और उसको निकाल कर क्या लिखा गया यह नोचे लिखते है:—

"तीन है जो आगमन पर गवाही देते है, बाप और कलाम और रुहुल कुदस और यह तीनों एक है" यूहन्ना का पहला पत्र बाब ५--आयत ७,८। अब क्या लिखा वह भी देखे-

जो गवाही देता है वह रुह है और गवाही देने वाले तीन हैं, रुह और पानी और खून और यह तीनों एक ही बात पर मुत्तफिक है। यूहन्ना की पहली पत्री बाब ५-आयत ७,८।

यूहन्ना का पहला पत्र

समीक्षा:—पाठक महोदय! आप भी सोचें कि कैसे गवाह है, और किस चोज की गवाहो देते है, और बाप और बेटा के स्थान पर पानी और खून बदल कर इन्हें गवाही देने वालों में क्यों रक्खा गया यह पादरी साहिबान से पूछना चाहिये। अंग्रेजी की पुरानी इञ्जीलों में भी वही है जो हम ने ऊपर लिखा—जैसे—

For there are three that bear record in heaven, The father. The word and The Holi Ghost aud these three are one. John 5. 7

And there three that bear witness in earth, the Spirit and the water and the bloodand thesethree agree in One.

उपर्युक्त अंग्रेजी वाक्यों को जिन्हें हमने रेखांकित किया है उनका अर्थ पहले किया जा चुका है अर्थात तीन स्वर्ग में है बाप, शब्द, पवित्र आत्मा जो रिकार्ड रखते हैं ये वाक्य नई इन्जीलों में से पूरे केपूरे निकाल दिये गये हैं, क्योंकि स्वर्ग में रहने वाला Word जो तीनो मिलकर ही एक हैं उनमें से अकेला वह देहधारो नहीं हो सकता दूसरे वाक्य का अर्थ है कि तीन जमीन पर हैं अर्थात् आत्मा जल, और लहू जो गवाही देते है। क्या स्वर्ग का पवित्र आत्मा और यह जमीन का आत्मा दो सत्ताएं हैं या एक ही हैं ?

वचन देह धारी हुआ (यूहन्ना)

"उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि में था जिसे हमने सुताऔर जिसे अपनी आंखों से देखा......तुम्हें उसे अनंत जीवन के समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रकट हुआ" यूहन्ना की पहली पत्री १ अ १,२।

'वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा डाला' यूहन्ना —१— १४।

समीक्षाः—ऊपर वाले दोनों प्रमाणों से सिद्ध होता है-कि आदि वचन देह धारी हुआ और योशू बना इससे यह बातें स्पष्ट होती हैं कि पहले देहधारी नहीं था पहले तो वचन था और वाचक भी वही था अब वचन अकेला देहधारी हुआ और वाचक कहां रहा, वाचक के साथ ही वचन होना चाहिये और दूसरे यह भी जाना गया कि पहले अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण न था, वचन क्या है ईसाई परिभाषा में इसे अकनूम कहा गया है, और यह तीनों बाप बेटा और रुहुलकुदस अकनूमे सलासा है (अकनूम कहते हैं महल्ले सफात को) जैसे हम द्रव्य कहते हैं। (तीन अकनूम हे)।

क्रिया गुण वत्समवायि कारण मिती द्रव्य लक्षणम्

वचन क्या था और वह वचन खुदा का बैटा कैसे हुआ और ऐसा वचन जो वचन भी था और परमेश्वर भी था तो फिर बेटा किस का हुआ, यह तो दोनों एक ही थे अक़नूम जिस में गुण हो वचन कैसे हो सकता है। वचन अकनूम (द्रव्य) नहीं होता वह तो स्वयं गुण ही होता है।

हां! लोग वृक्षों को पत्थरों के बेटे बेटियां बना कर विवाह करते हैं शायद खुदा ने भी वचन को ही बेटा बना लिया हो-तो क्या आश्चर्य है मगर दुनिया में बेटे तो निम्नरीति से माने जाते हैं (१) बेटा तो नसबी होता है जो पिता के वीर्य से हो, दूसरा बेटा गोद लिया होता है, तीसरा बेटा आज्ञाकारी होने से भी कहा जाता है अब इन तीन प्रकार के बेटों में यह वचन देहधारी कौन सा बेटा है यह तो ईसाई ही बतावेंगे कि कौनसा है। यूहन्ना ने

जो बाप और बेटें का गठ-बन्धन किया है वह इन तीनों से विलक्षण है जैसे "आदि में बेटा था—बेटा बाप के साथ था और बेटा ही बाप था," क्या किसी ने ऐसा विलक्षण बेटा देखा और सुना है, जो आदि से बाप के साथ हो और फिर बेटा ही बाप हो—हम पूछते हैं कि यदि बेटा ही बाप था-तो फिर आदि में बाप के साथ कौन था जब कि बेटा ही बाप था—अब देखिये पहिले बाप और बेटे की दो सत्तायें जुदा जुदा मानी और पीछे से दोनों को एक ही मान लिया यह तो न द्वैतवाद सिद्ध होता है न अद्वैतवाद और न तसलीस, आखिर बेटे और बाप के उस फसाने को किस दलील से सिद्ध किया जा सकता है-वजूद तीन प्रकार के होते हैं।

(१) वाजबुलवजूद (सनातन सत्यस्वरूप सत्ता) (२) मुमकनुलवजूद (जिसका वजूद सम्भव हो सकता है) तीसरा है मुमतने अलवजूद (मना है वजूद जिसका) आप के इस बेटे का कौनसा वजूद है-यदि वाजबुलवजूद हो दोनों सत्ताएं हैं तो दोनों के वजूद जुदा २ होने चाहियें, एक वाजबुलवजूद दूसरे वाजबुलवजूद के साथ मिलकर एक नही हो सकता उनके वजूद जुदा-जुदा रहने चाहियें, दूसरा है मुमकबुलवजूद, यह सनातन सत्ता की निश्चित कोटि से बाहर है, तीसरा है जिसका वजूद (सत्ता) ही मना है अर्थात अत्यन्ताभाव। हम पूछते हैं कि यह बाप और बेटे का नाता अनादि है तो किस दलालत से यह बाप और बेटे का रिश्ता सिद्ध होता है और ऐसा रिश्ता जो बेटा भी हो और बाप भी हो। अब हम पूछते हैं कि कौन से लक्षण और प्रमाण से इस विचित्र जोड़े को, जो एक भी है और दो भी है, सिद्धी होती है। प्रत्यक्ष अनुमान आदि किस से, श्री अब्दुलहक पादरी ने अमृतसर के शास्त्रार्थ में कहा था कि पूर्ववत अनुमान से सिद्धी होती है।

हम तीनों प्रकार के अनुमान यहाँ लिखते हैं ताकि प्रत्येक महानुभाव समझ सके कि इस विचित्र बाप बेटे की किसी भी अनुमान से सिध्दी नही हो सकती ।

अनुमान की सिद्धी कैसे

साधन साध्य, लिङ्ग लिङ्गी तथा कार्य कारण के सम्बंध से जो ज्ञान होता है वह अनुमान कहाता है, वह तीन प्रकार का होता है-पूर्ववत, शेषवत, सामान्यतो दृष्ट-अनुमान में व्याप्ति का होना आवश्यक है । चाहे वह समव्याप्ति हो या विषम ।— जिसके द्वारा अनुमान किया जाता है, वह लिङ्ग होता हैं और जिसका अनुमान करते हैं वह लिङ्गी है । जैसे धूम को देख कर अग्नि का ज्ञान, अर्थात जहां जहाँ धूम वहां वहाँ अग्नि । इस में विषम व्याप्ति है क्योंकि जहाँ जहां धूम वहां अग्नि होगी और जहां जहाँ अग्नि वहां वहां धूम का होना नही होता, क्योंकि अग्नि बिना धूम के भी होती है मगर इसमें दोनों का प्रत्यक्ष होना आवश्यक है पहले धूम को प्रत्यक्ष देखा फिर अग्नि को रसोई घर में देख लिया दोनों का प्रत्यक्ष होना आवश्यक है । और जहां सम व्याप्ति होती है जैसे-गन्ध और पृथ्वी जैसे जहां जहाँ पृथ्वीत्व वहाँ वहां गन्ध और जहां जहां गन्ध वहां वहां पृथ्वी यह सम व्याप्ति है-अर्थात जहाँ प्रत्यक्ष भूत लिङ्ग लिङ्गीं में से एक के देखने से दूसरे का अनुमान होता है उसे पूर्ववत कहते हैं बेटे को देख कर बाप का अनुमान तो होता है मगर ऐसा अनुमान कभी नहीं होता कि बेटा शरीर धारी है और बाप निराकार, ऐसा अनुमान

होता है कि ऐसे ही शरीर धारी के वीर्य से यह लड़का पैदा हुआ होगा और दूसरे यह अनुमान कैसे कि जिसका यह बेटा हें वह बाप यही बेटा है। ऐसा अनुमान तो हो सकता है कि जहां जहाँ बेटा होता है वहां उस का बाप होना आवश्यक है, मगर ऐसा अनुमान कि बेटा भी वही है किसी को आज तक नही सूझा सिवाय पादरी अब्दुलहक साहिव के।

दूसरा शेषवत-जहां जहां प्रसंग जाता उसके प्रशेष को शेषवत कहते हैं जैसे शब्द के लिये कहा जाये कि आकाश का गुण है जैसे परिशेष लिङ्ग माकाशस्य अर्थात परिशेष से यह आकाश का लिङ्ग है ।

यही परिशेष अनुमान शेषवत कहाता है. तीसरा अनुमान है, सामान्यतो दृष्ट-यह अनुमान वहाँ होता है, जहां लिङ्गी को पहले प्रत्यक्ष देखा न हा जैसे सुनने, देखने आदि क्रियाओं से ज्ञानेन्द्रियों का अनुमान देखना सुनना आदि क्रियायें हैं, और क्रिया का आवश्य कोई साधन (कारण) होता हैं, जैसे छेदने के लिए कुल्हाड़ा, पर जैसा कारण यहां अनुमान करना है वैसा करण कभी देखा नही गया जैसे जगत को रचना से रचने हारे का अनुमान सामा-न्यतो दृष्ट है, अतः इन तींनों अनुमानों में से ईसाइयों की तसलीस की गुत्थी सुलझ नहीं सकती, हम पूछते हैं कि क्या बाप, बेटा और पवित्रात्मा वाजबुलवजूद हैं यदि वाजबुलवजूद (सत्य स्वरुप) हैं तो तीनों मिलकर एक किस तरकीब से हो सकते हैं; कि तीनों एक भी हों, और जुदा-जुदा भी हों, एक जमीन पर गर्भ में आ जाए एक कबूतर की शक्ल में आकाश में सैर करे एक चौथे आसमान पर बैठा रहे क्या यह किसी ऐसी वस्तु के बने हैं जो जब चाहें जुदा-जुदा भी हो

जाएं और बेटा बाप के साथ भी हो और बेटा ही बाप हो, बेटा बाप के साथ हो यह दो सत्ताएं पृथक २ साबित होती हैं, और बेटा ही बाप का आस्तित्त्व ही कोई नहीं रहता; तीसरी पवित्रात्मा तो युहन्ना की गिन्ती में हीं नहीं, इस से न तो यह प्रमाणित हो सकता है, कि तीनों का वजूद एक है या तीन, क्यों कि पृथ्वी पर जन्म लेना और दहनी तरफ बैठना (इब्रानियों के नाम पत्र १-४-मत्ति २६-६५-मरकुस-१६-१६) तो दोनों जुदा जुदा सत्ताएं साबित होती है। अब प्रश्न यह है कि यदि बेटा ही बाप था तो दहनी तरफ कौन बैठा और किस की दहनी और बैठा और मरियम के गर्भ में कौन आया-अतः किसी प्रकार भी तीन एक और एक तीन साबित नहीं हो सकते, उपरोक्त अवस्था में एक के जुदा जुदा तीन टुकड़े होने से तरकीबे वजूदी माननी पड़ेगी जिससे हदूस लाजम आएगा और हदूश से विनाश; तो फिर न एक रहेगा न तीन और न तसलीस रहेगी और अलवाहिय्यत की अमारत भी चकना चूर हो जायेगी। हम पूछते हैं कि जब बेटा ही बाप था तो फिर गर्भ में आने की हालत में बाप और बेटा जो जुदा जुदा होकर तसलीस को जड़ मूल से केसे खतम कर दिया? दूत को तो यह कहना चाहिये था कि बेटा जो दर असल बाप ही है वह गर्भ में आयेगा।

वहदत (एकत्व) में कसरत (अनेकत्व)

ऐसी सत्ता जो अपने स्वभाव से ही अव्यक्त, निराकार, सर्वव्यापक, एक रस अजर अमर नित्य पवित्र तथा शुद्ध स्वरुप हो, उसके लिये यह कल्पना करना सर्वथा मिथ्या है, क्योकि एकत्व तथा अनेकत्व दोनों परस्पर विरोधी सत्ताएं हैं,

और फिर ऐसी सत्ता जो आकार रहित हो, परम सूक्ष्म हो उस अद्वैत तत्व के साथ किसी दूसरो ऐसी सत्ता की कल्पना कर के एक मान लेना, जो पंच भौतिक शरीर को भी धारण करे और मृत्यु के चक्कर में भी फंस कर हाहाकर करे, किसी आकार रहित सर्व व्यापक वस्तु के विभाग नहीं हो सकते, किन्तु ईसाइयों को यहोवा का एक भाग मनुष्य रूप भी धारण कर लेता है, एक कबूतर के रुप में भी प्रगट हो जाता है, और एक भाग आसमान पर रहता है. यह तकसीम वजूदी निर्विकार सत्ता में असम्भव है क्योंकि काया रहित सत्ता के विभाग नहीं हो सकते, अतः उस अव्यक्त सत्ता के लिए यह कहना कि वह एक तीन है और तीन एक सर्वथा मिथ्या है।

यूहन्ना का कथन भाषा विज्ञान की कसौटी पर

भाषा विशारद लोग जब किसी व्यक्ति का महत्व बढ़ाना चाहते हैं तो उसके लिए ऐसे उच्च शब्द उपर्युक्त स्थान पर प्रयोग में ला कर जनता के समक्ष पेश करते हैं जिन लोगों की दृष्टि में वह सर्वोच्च प्रमाणित हो जाय, और जिसकी प्रतिष्ठा को कम करना हो उसके लिए साधारण शब्द और महत्व हीन स्थान पर प्रयोग में लाकर उसे पीछे डाल देते हैं।

उसी शैली को लक्ष्य में रख कर यूहन्ना के वाक्य हैं जैसे आरंभ में वचन अर्थात् बेटा था और बेटा बाप के साथ था, मगर शब्द की प्रतिष्ठा और प्राथमिकता को देखते हुए वाक्य इस प्रकार चाहिये था, कि आरम्भ में बाप था और बेटा बाप के साथ था।

इस में आरम्भ शब्द बेटे के साथ जोड़ कर पिता के पितृत्व को सर्वथा पीछे डाल दिया गया है।

मगर युहन्ना की यह बात भी सहन न हो सकी क्योंकि बाप की सत्ता ज़िमनन तौर (सामान्य रूप) से तो बेटे के साथ फिर भी रह ही जाती है और बाप का अस्तित्व तो बना ही रहता है तो फिर बाप को सत्ता को सर्वथा खतम करने के लिए खिल दिया कि "वह वचन (बेटा) ही बाप था" अब इस कथन से बाप की रही सही सत्ता भी इस शब्द चकर और वाक्य जाल में पड़ कर सर्वथा नष्ठ हो गई और बेटा ही, बेटा और बाप दोनों बन कर वास्तविक रूप धारण कर बैठा और बाप का निशान तक भी मिटा दिया, और यहां तक मिटाया कि विश्वकर्ता भी बेटे को बना दिया, जैसे—सब कुछ उसी (बेटे) द्वारा उत्पन्न हुआ उस में से कोई भी वस्तु उस के बिना उत्पन्न न हुई, उसमें जीवन था, खुदा यीशू से कहता है।

"कि ए खुदावन्द तूने आरम्भ में ज़मीन की नीव डाली और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है वह नष्ट हो जायेंगे मगर तू बाकी रहेगा" इब्रानियों के नाम पत्र १–१०।

अब सृष्टि कर्तृत्व से भी बाप को परे कर के बेकार बना दिया जब यूहन्ना ने इस बात को पहले ही स्पष्ट कर दिया कि बेटा ही बाप था, तो फिर जो ऊपर लिखा गया कि सब विश्व बेटे ने बनाया, इस की आवश्यकता ही नहीं रह जाती क्योंकि बाप की कोई जुदा सत्ता यूहन्ना नहीं मानता।

यूहन्ना का एक और चक्कर

(आरम्भ वाला) "वचन देह धारी हुआ और उस ने अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण हो कर हमारे बीच में डेरा डाला" यूहन्ना १,१४।

समीक्षा—हमारा कहना है कि जब वचन देहधारी हुआ, तो देह अन्य वस्तु है और देही वचन है। तो जब वचन (बेटा) ही बाप है तो फिर बाप जुदा कैसे रह सकता है और जुदा होने पर तसलीस नहीं रह सकती।

यूहन्ना का अधूरा गठ बन्धन

यूहन्ना ने बाप और बेटे का गठ बन्धन तो कर दिया, मगर तीसरी पवित्रात्मा जिसके मिलने से तसलीस बननी थी, उसका इस प्रसंग में नाम तक नही लिया। मत्ति, मरकुस, लूका आदि में इस तसलीस रूपी गठ बन्धन का सकेत मात्र भीं नहीं है। और यूहन्ना के कथन से भी दो बाप और बेबा का ही जोड़ा है इस तीसरी को गठ बन्धन में शामिल नहीं किया वचन और परमेश्वर केवल दो का ही वर्णन किया, और दो से तो तसलीस बनती नहीं, मगर हम इस गठ-बन्धन को तसलीस की शक्ल देने के लिए पादरी साहिबान के समक्ष एक विशलेषण पेश करते हैं और इस में भी शर्त यह है कि यदि कोई पादरी साहिब इस से अच्छी सूरत पेश करेगा, तो हमें उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी। तीनो का गठ-बन्धन इस प्रकार हो सकता

है। पादरी साहिबान ध्यान से पढ़ें आरम्भ में बेटी थी, बेटी अपने भाई और बाप के साथ थी और बेटी ही बाप और भाई थी, अब इस से तीनों का गठ-बन्धन भी हो गया ओर तसलीस भी बन गई, यदि पादरी साहिबान न मानें तो तसलीस के गठ-बन्धन का कोई और विश्लेषण पेश करें हमें उसके मानने में कोई आपत्ति नहीं होगी। अतः जब तक पादरी लोग किसी इंजील से तसलीस का प्रमाण पेश न करें तब तक इस पर बहस करना व्यर्थ होगी।

खुदा एक ही है तीन नहीं यह बाइबिल का मत हैं

हम पहिले लिख चुके हैं कि व्यवस्था, जबूर और भविष्यद्वक्ता कहलाने वालों की पुस्तकों में तीन खुदाओं का नाम तक नहीं और नई इंजीलों में भी यूहन्ना के इस गठ-बन्धन की पुष्टी तो एक ओर रही अपितु विरोध है "आदि में खुदा ने आकाश और पृथ्वी को सृष्ठि की" —उत्पत्ति—1,1।

मगर यूहन्ना कहता है बेटे ने की। यूहन्ना १/३-१/११ इब्रानियों के नाम खत,१,१०।

मैं ही खुदा हूं और कोई नहीं मेरे सिवा और कोई खुदा नहीं" यशाया: ४५,५ वा—४६,६ मगर यूहन्ना कहता है कि बेटा ही बाप था, ॥ आकाश और पृथ्वी को उस ने ही बनाया।

इब्रानियों के नाम पत्र

निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है, उसी ने हमको बनाया। ज़बूर १००,२।

खुदावन्द वही खुदा है और उसके सिवाय कोई नहीं। इस्तिमना ४, ३५,३६।

खुदा एक है इसितसना ६, ५, तथा ५, ३६

तुझ सा कोई खुदा न आसमान में है न ज़मीन में—२ तवारीख—६, १४ मगर यह तीन कहते हैं।

पुरानी बाइबिल में तो एक खुदा के हज़ारों प्रमाण है। तीनका एक भी नहीं। भजन सहिता तो कुल इस से ही भरी है।

अब नये धर्म नियम में देखो

"मैं तुम को उस की खबर देता हूं जिस खुदा ने दुनियां और उसकी सारी चीजों को पैदा किया वह आसमान और जमीन का मालिक है" एमाल १७/ ४। मगर इब्रानियों और यूहन्ना कहता है। यीशू ने बनाई। यूहन्ना १/३—१/११ इब्रा १—१०। दोनों में कौन सच्चा है यह पादरी साहिबान बतावें।

नजात देने वाला खुदा है। मरकुस १०/२७। तीन नहीं लेकिन हमारे नजदीक तो एक ही खुदा है अर्थात बाप कुरन्थियों ८/६। यीशू स्वयं कहता है "ह इस्राएल सुन प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही है और तू प्रभु अपनेप रमेश्वर से ...... सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्रेम रखना।" मरकुस —१२—१६ से ३०।

यीशू ने कहा कि तू मुझे क्यों नेक कहता है कोई नेक नहीं मगर एक खुदा। मरकुस १०—१८,१६।

नेक तो एक ही है मति १६, १७ और भीइ स विषय में बहुत प्रमाण है

पाठक गण! उपरोक्त प्रमाणों से आप इस परिणाम पर पहुँचेगे कि बाईब्ल तथा नई इंजीलें भी एक ही खुदा को मानती हैं, और यीशू जिस को यूहन्ना कहता है कि बेटा ही बाप था ऐसा कोई मानने को तैय्यार नहीं बल्कि यहां तक कि यीशू तो अपने आप को नेक तक भी कहलवाने को तैय्यार नहीं इस इतने वड़े विरोध को पादरी साहिवान समझें।

इंजीलो में यीशू के विषय में तीन प्रकार के विरोधी वचन इब्ने आदम, इब्ने खुदा इब्ने यूसुफ

इब्ने आदम

मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया। मति ११—१६। मनुष्य का पुत्र सब्त का मालिक है। मति १२-८/३२, १२/४० मति -८/२०, १३/३७, १३/४१, १६/१३, १६/२८, १७/२१, १६/२८, २४/-७, २४/३७, २५/३१, २६/२ इन सब स्थानों पर यीशू को मनुष्य का पुत्र लिखा हैं।

मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की जगह नहीं। मति ८/२। मनुष्य के पुत्र के लिए देखें, मरकुस ८/३१-८/३८-८/१२ -१०/४५-१४/४१-१८/६२। मनुष्य को जमीन पर गुनाहों के मुआफ करने का अधिकार है। लूका ५/२४ लूका ६/५, ७/३४, १२/४०, १७/२४, २४/७, १८/८। मनुष्य के पुत्र को ऊपर से

उतरते देखोगे, यूहन्ना १—५१ । अब देखें कि योशू तो अपने आपको बार बार मनुष्य का पुत्र कहता है, मगर पादरी ईश्वर पुत्र कहते हैः- "मुद्दई सुस्त, और गवाह चुस्त।"

अब देखिए यीशू खुदा का बेटा

आसमान से यह आवाज आई कि यह मेरा प्यारा बेटा है, मत्ति ३/१७ मरकुस ११/१। किश्ती वालों ने सजदा करके कहा सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है, मत्ति १४/३३ और कोई पुत्र को नही जानता, केवल पिता और कोई पिता नहीं जानता केवल पुत्र, मत्ति १/२७। और नापाक रूहे जब उसे देखती थी तो उस के आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्ला कर कहती थी कि तू परमेश्वर का पुत्र है-और उस ने (यीशू ने) बहुत चिताया, कि मुझे प्रगट मत करना। मरकुस ३/११-१२ (समीक्षक-उस्ताद यह बड़ा अच्छा और विश्वस्त गवाह लाया)" "एक अशुद्ध आत्मा ने कबरों से निकल कर कहा.... प्रणाम किया और ऊंचे स्वर से कहा.... हे यीशू परम प्रधान के पुत्र, मरकुस" ५/७। (खैर दूसरा गवाह भी बड़ा विश्वस्त है) तब एक बादल ने उन्हें छा लिया और उस बादल में से यह शब्द निकला कि वह मेरा पुत्र है, मरकुस ६, ७। (अब तो स्वय ईश्वर बोल पड़े इस से बड़ा कौन होगा, मगर लूका में प्रिय पुत्र को जगह पवित्र जन है लूका ८/३८। पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परम प्रधान की सामर्थं तुझ पर छाया करेगी, इस लिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। लूका १/३५। परमेश्वर का चाहता बेटा है, हो सकता है, जैसे सब नेक प्रभु पुत्र है।

यूहन्ना

"परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा पहिलोठा पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने प्रगट किया" यूहन्ना १/१८।

समीक्षा:—क्या पादरी महोदय ! बाग में सैर करते हुए समय आदम हव्वाने, याकूब से मल्ल युद्ध करने पर, मूसा के टैन्टों में वार वार आते समय किसी ने नहीं देखा-क्या वह मिथ्या प्रलाप था। "पिता किसी का न्याय भी नहीं करता परन्तु न्याय का सब काम पुत्र को सौंप दिया", यूहना ५/२८-८/३५

यीशू कैसा खुदा का बेटा और खुदा था

यीशू ने कहा मैं और पिता एक है, इस बात पर पत्थरबाह करने को तैय्यार हुए यीशू ने कहा में और पिता एक है।

"यीशू के यह कहने पर कि मैंने पिता के कहने पर बहुत भले काम किये तो क्या उस के लिए मुझे पत्थरवाह करते हो, यहूदियों ने कहा कि भले काम के लिए पत्थरवाह नहीं करते परंतु परमेश्वर की निंदा के कारण और इस लिए कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बताता है। यीशू ने उन्हें उत्तर दिया "क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम ईश्वर हो।" यदि उसने (ईश्वर ने) उन्हें ईश्वर कहा, जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती) तो जिसे पिता ने पवित्र ठहरा कर जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो किन्तु निन्दा करता है, इस लिए कि मैंने कहा मैं परमेश्वर का पुत्र हूं" यूहन्ना १०/३० से ३६।

समीक्षा:—यीशू कैसा ईश्वर और ईश्वर पुत्र है ? उपरोक्त वाक्यों से सब असलिय्यत प्रकट हो जाती है। वह भी यीशू की अपनी जबान से । जैसे यहूदियों ने यीशू पर यह दोष लगाया था, कि तुम मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहते हो उत्तर में यीशू ने कहा कि क्या व्यवस्था में तुम को खुदा का कलाम पहुंचने पर तुम्हें खुदा कहा गया है, तो फिर मुझे क्यो दोषी ठहराते हो।

जिस वचन कि और यीशू ने संकेत किया है वह यह है:- मैंने कहा था कि तुम ईश्वर हो और सब के सब परम प्रधान के पुत्र हो "भजन सहिता ८२/६ ।

समीक्षा:—अब तो यीशू ने स्वयं ही फैसला कर दिया कि तुम ईश्वर हो, और सब के सब परम प्रधान के पुत्र हैं। वैसे यीशू की है ।

"हुआ है मुद्दई का फेसला अच्छा मेरे हक में;
जुलीखा ने किया खुद चाक दामन नाहे किनआं का।"

प्रमाण, कौन कौन खुदा के बेटे है।

सभी परमात्मा के पुत्र हैं।

"तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य को पुत्रियों को देखा" उत्पत्ति ६—२। "जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों के पास गए" उत्पत्ति ६/४।

समीक्षा-यहां पर सब मनुष्यों को ही ईश्वर पुत्र कहा हैं।

"और तू फ़िरौन से कहना कि यहोवा यूं कहता है कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है" निर्गमन-४/२२ । "धन्य है वह जो मेल कराने वाले हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे" मत्ती ५/९ ।

खुदा किस प्रकार बेटे बनाता है

"क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है उसको ताड़ना भी करता है और जिसे पुत्र बना लेता है उस को कोड़े भी लगाता है तुम दुःख को ताड़ना समझ कर सह लो, परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ वर्ताव करता है वह कौन सा पुत्र है जिस की ताड़ना पिता नहीं करता, इब्रानियों १२-९-१० ।

यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे इब्रानियों बा-१२-आ ६ से ९ ।

पाठक बृन्द ! यहोवा के पुत्र वनाने का नियम देख लिया जो कोडे खाता है और उसे सहन न करे, वह हरामी है, पुत्र बनने के लिए कसौटी-सदाचार, अहिन्सा, सत्य, सत्य-वादिता, परोपकार आदि नहीं कोढ़े सहन करना है, भाई कोई बात नही इन्जीलों का ईश्वर है ।

पिता ने हम से कैसा प्रेम किया कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं और हम हैं भी—ह प्रियों अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं और अब तक यह प्रगट नही हुआ कि हम क्या कुछ होंगे इतना जानते हैं कि जव वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे । यूहन्ना की पहली पत्री ३/१-२ ।

ऊर्दू बाइविल ।

समीक्षाः—हाँ संग से बुत और बुत से खुदा बन गए (ईश्वर प्रगट होने पर उसके समान होंगे कैसा सस्ता सौदा है जनाब)।

'जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है।' यूहन्ना की पहिली पत्री ४—७। "और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहन करूंगा और तुम्हारा पिता हूंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे।

'मैं उसको अपना पहिलोठा बनाऊंगा' भजन संहिता ८९-२६। तुम परम प्रधान की सन्तान ठहरोगे। लूका ६-३५ परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया। उसने (याशू ने परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया) यूहन्ना १/१२।

यीशु यूसुफ का बेटा था

अब हम अकाट्य और निर्विवाद प्रमाणों से प्रमाणित करेंगे कि यीशु यूसुफ का ही बेटा है—पहले मत्ती को देखिए 'मतान से याक़ूब पैदा हुआ और याकूब से युसुफ पैदा हुआ यह उस मरियम का पति था जिस से यीशु पैदा हुआ जो मसीह कहलाता है" मत्ति १/१६।

समीक्षा—इस में स्पष्ट तौर से युसुफ को मरियम का पति लिखा है जिससे योशू पैदा हुआ है। आगे पढ़ने से और भी साफ हो जाता है।

'और बन्दी होकर बाबुल के पहुंचाये जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई मत्ति। १/१७

समीक्षा—यीशु तक १४ पीडी गिनने का स्पष्ट मतलव यह है कि यीशु यूसुफ की पीढ़ी में होने से उस का ही पुत्र है क्योंकि पीढ़ी तो पिता से ही चलती है न कि माता से यदि यीशु यूसूफ का पुत्र न होकर खुदा का पुत्र होता तो जैसे आदम को खुदा का पुत्र लिखा यीशु को भी वैसे ही लिखते।

देखिये—लूका कहता है कि रासि आदम का और आदम खुदा का। लूका ३/३८।

जब यीशु आप उपदेश करने लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु का थो (जैसा समझा जाता था) युसुफ का वेटा था, और वह ऐली का, और वह मत्तान का, और वह लेवी का .... आदम परमेश्वर का लूका ३-२३ से ३८ तक।

साफ लिख दिया कि यीशु युसुफ का बेटा था,मनर कोष्टक में न जाने किसने लिख दिया, (जैसाकि समझा जाता था) मगर फिर भी कोई अंतर नही आता बल्कि और भी स्पष्ठ हो गया कि यह अर्थात उसको यूसूफका पुत्र ही समझा जाताथा और दरअसल किसी को किसी का वेटा निश्चित करना समझने पर ही निर्भर होता है-इन उपरोक्त दोनों प्रमाणों से सिद्ध है कि यीशू यूसुफ का वेटा था, अव आगे देखिये। लूका-३-अ २३ से ३८।

"यीशू ने ऐसा उपदेश दिया कि वह चकित होकर कहने लगे,——क्या यह वढ़ई का बेटा नही और क्या इसकी माता का नाम मरियम और उसके भाईयों का नाम याकूब और युसूफ और शमौंन और यहोदा नही, इसकी सब वहनें हमारे यहां नहीं।" मत्ति १३/५५-५६।

समीक्षाः—यह सब लोग घर के एक २ व्यक्ति का नाम लें कर कह रहे हैं कि यह युसूफ का बेटा है, और यदि युसूफ के साथ निकाह होने से पहले मरियम को गर्भ हो जाता तो यह खबर ऐसी है जो विजली की तरह फैल जाती है। और प्रत्येक इस बात से भली भांति परिचित हो जाता–मगर ऐसा नहीं हुआ।

माता पिता अपने बच्चों के लिये जो रस्में अपको वंश परम्परा से करते हैं। वह सब मरियम और युसूफ ने कीं जैसे–और जब मूसा कीं व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वह उसे यरुशलेम में ले गये कि प्रभु के सामने लाएं, जैसा कि प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे लाकर बलिदान करें।" लूका–२/२२ से २४।

समीक्षाः—यदि यूसूफ यीशू का बाप नहीं था, तो बलिदान करने का उसे कोई अधिकार नहीं था।

और जब माता पिता उस बालक यीशू को भीतर लाए, कि उस के लिए व्यवस्था की रीति के अनुसार करें, लूका २/२७। "उस के (यीशू के) माता पिता प्रति वर्ष फ़सह के पर्व में यरूशलेम को जाया करते थे।" लूका २/४१।

"जब वह १२ वर्ष का हुआ तो यरुशलेम में ही खो गया..........तलाश करने के बाद मिल जाने पर माता ने कहा कि हे पुत्र तुने हमसे क्यों ऐसा व्यवहार किया, देण तेरा पिता और में कुढ़ते हुए तुझे ढूंढते थे।" लूका २/४२ से ४६–तक।

समीक्षाः—माता की गवाही बच्चे के लिए पिता होने के विषय में प्रमाणित होतो है, वही एक मात्र जानती है कि पिता बच्चे का कौन हैं—जब मरियम स्वयं योशू को कहती है कि तेरा पिता यूसुफ है तो मां से बढ़ कर वह कौन है। जो यूसुफ को यीशू का पिता नहीं मान रहे । "मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त" वाली बात है।

"फिलिप्पुस ने नतन एल से मिलकर उस से कहा, कि जिसका वर्ण नमूसा से व्यवस्था में भविष्य वक्ताओं ने किया है, वह हमको मिल गया है वह यूसुफ का पुत्र यीशू नास है।" यूहन्ना १/४५ ।

समीक्षाः—यह गवाह भी जानकार है । इसकी गवाही ठीक मानी जावेगी।

यीशू ने स्वयं भी कहा । और मनुष्य के ऊपर उतरते देखोगे।" यूहन्ना १।५१ ।

"उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इस लिए वह मनुष्य का पुत्र है।" यूहन्ना ५/२७ ।

और उन्होने कहा, क्या वह यूसुफ का पुत्र यीशू नहीं जिस के मातापिता को हम जानते हैं ! तो वह क्यों कर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हुं ? युहन्ना ६/४२-४३ ।

समीक्षाः--यहां किस ज़ोर से यीशु के माता पिता की जानकारी दी है, योशु को इब्ने दाऊद भी जगह जगह कहा गया है युसुफ का लड़का होने के कारण हमने प्रबल प्रमाणों से प्रमाणित किया है, कि यीशु युसुफ का बेटा है, और खुदा का बेटा उसी प्रकार है जैसे दाऊद सुलेमान मेल कराने वाले अहले

क़िताव, नेक मनुष्य, क्षमा करने वाले, इत्यादि, न कि वंश के लिहाज़ से, वंश की दृष्टि से तो हमने प्रमाणित कर दिया कि यीशु यूसुफ का बेटा है अब अगले लेख से पूरी हकीकत और भी प्रत्यक्ष हो जाएगी उपरोक्त लेख के साथ मिलाकर पढ़ें।

यूसूफ का निकाह मरीयम से हो चुका था

सर सय्यद अहमदखां की सम्मति

देखिये—तफसीरूल कुरआन जिल्द—१—लेखक श्री सर सय्यद अहमद खां। मत्ति की इन्जील में लिखा है—कि यूसुफ हज़रत मरीयम का शौहर (पति) दाऊद की नस्ल(वंश) से था। मुसलमान भी कुरआन की रू से उसे जैसा कि सूरत अनआम में लिखा है-हज़रत ईसा को हजरत इब्राहीम की जुर्रिय्यत(सन्तान)समझते है। पस हज़रत ईसा यदि बिना बाप के पैदा हुए हों तो वह दाऊद के वंश और इब्राहीम की सन्तान क्यों कर करार दिए जा सकते हैं (अर्थात् ठहराय जा सकते हैं पृ.—२७।

यदि यह कहा जाए, कि माता के कारण से उनको दाऊद की नसल करार दिया गया हो, तो यह बात दो कारणों से गलत (मिथ्या) है।

नं०—१ इसलिए कि यहूदी शराअत में (धर्म शास्त्र) औरत की तरफ से नसब कायम नहीं होती –(२) यह कि हज़रत मरियम का दाऊद की नसल से होना साबित नहीं होता।

पृ.-१६-१७

कुरआन मजीद में हज़रत मरियम के बाप का नाम इमरान लिखा है इस पर इस्तिदलाल करने पर भी दाऊद की नसल

से हज़रत मरीयम का होना साबित नहीं होता । यही हज़रत ईसा मसीह की निस्बत जो शोन गोई थी कि वह दाऊद की नसल में से होंगे, किसी तरह मां की तरफ मनसूब नहीं होती ।

पृ—१७—१८

जार्ज रीचार्ड वारसन ने तफसीर इन्जील लूका में लिखा है—यह आम यकीन था— कि हज़रत ईसा युसुफ के बेटे है-और उनका मोजजा (चमत्कार) के तौर से पैदा होना मशहूर नहीं किया गया था। बल्कि यूसुफ और मरियम के दिलों में ही मखफी [निहित] था पृ०—१८।

मरीयम का यूसुफ से निकाह हो चुका था, जैसा कि शरई निकाह होता है पृ—१९ यहूदियों ने नऊज़ बिल्लाह हजरत मरियम पर जो बुहतान (दोष) बांधा था, वह यूसुफ के साथ नही बांधा था, बल्कि पन्थ राटोल के साथ मनसूब किया था, इत्राला कैरो साएकलो पीडिया पृ—२०।

पस कोई वजह इस बात के ख्याल करने की नही है, कि यसू पि.ल वाकआ (निसंदेह) हज़रत मसीह के बाप नही थे, अर्थात मसीह के बाप यूसुफ ही थे हज़रत ईसा को खूदा का बेटा यूनानियों की नकल और उनमें प्रचार की गरज़ से किया गया, क्योकि ऐसे लडके वह मुकद्दस (पवित्र) मानते थे, अफलातून के लिए भी ऐसा ही मशहूर था, पृ. २१। हमने यूसुफ को मरीयम का शौहर (पति) और मसीह को उनके बाप यूसुफ का बेटा तस्लीम (स्वीकार) किया है पृ २२ सहाबी एतबार से मसीह को खुदा का बेटा कहते थे, मरियम के पास फरिश्ता का आना वगैरह यह वाकेआ स्वप्न का है । यह सम्मति एक विख्यात मुस्लिम विद्वान की हैं, जो भारत भर में मशहूर है ।।

हमने ईसाईयों के तीन खुदाओं का वर्णन किया, परंतु इन तीनों के अतिरिक्त इन्जील में एक ऐसे व्यक्ति का भी वर्णन है जो इनके ही तुल्य हैं उसका नाम है मलिकि सिदक, यह मलिकि सिदक, क्या और कैसा है। इन्जील के शब्दों में देखें।

मलिकि सिदक का न आदि है न अन्त

यह मलिकि सिदक शालेभ का राजा और परम प्रधान् परमेश्वर का याजक-सर्वदा याजक बना रहता है। जब इब्राहीम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उससे भेंट करके आशीष दी। उसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया। यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार धर्म का राजा और फिर शालेम अर्थात शांति का राजा है।

जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है। जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अंत है।

परंतु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा

अब इस पर ध्यान करो, कि यह कैसा महान था, जिस को कुलपति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया। इब्रानियों, वा० ७ आ० १ से ५।

अब पाठक महोदय सोचें कि परमेश्वर का ही न आदि है न अन्त है, न माता हैं न पिता है परन्तु यह एक चौथा ईसाईयों का खुदा और माना गया है जिसका आदि अन्त नहीं है।

आगे यीशु के लिए लिखा

और जंब मलिकि सिदक के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न होने वाला था, जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हो तो हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रगट हो गया।

क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है कि तू मलिकि सिदक की रीति पर युगानू युग याजक है।

इब्रानिनों—७-१५ से १७ आयत

अब तो मलिकि सिदक का नित्य होना यीशू की उपमां के साथ और भी प्रमाणित और दृढ़ हो गया।

मलिकि सिदक के साथ यीशू की उपमां

और पुत्र होने पर भी उसने दुःख उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बन कर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया। और उसे परमेश्वर की ओर से मलिकि सिदक की रीति पर महा याजक का पद मिला।

इब्रानियी बा-५-आ ८ से १०

उपरोक्त विषय पर और भी लिखा

जहां यीशू मलिकि सिदक की रीति पर सदा काल का महा याजक बन कर हमारे लिए अगुवा की रीति पर प्रवेश हुआ है।

इब्रानियों-बा-६ आ० २०

यहां भी मलिकि सिदक के साथ नित्य रहने की उपमां यीशू के लिए कही है।

इन प्रमाणों से मलिकि सिदक का सदैव रहना प्रमाणित होता है, अब तो खरे चार खुदा हो गए ओर खुदा का याजक तो मलिकि सिदक ही अनादी काल से है, यीशू तो पीछे उसके अनुसार उत्पन्न हुआ।

प्रकरण—चौथा

यीशु की उत्पत्ति पर इंजीलों की विभिन्न बोलियाँ

इस पहले कि यीशु की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इन्जीलों के विभिन्न विचार आपके समक्ष उपस्थित किये जावें अपने इस क्रम को अधिक स्पष्ट करने के लिए एक बात अवश्य लिखना चाहता हुं कि जिससे पाठकगण इसकी ठीक जानकारी और वास्तविकता को भलि भांति समझ सकें—और वह यह कि ईसाई साहिबान के कथनानुसार थोड़ी देर के लिये इस बात को मान लिया जावे कि मरियम का निकाह युसफ के साथ नहीं हुआ था केवल सगाई हुई थी मगर जब गर्भ रह गया तो किस आधार से मरियम गर्भ होने के पश्चात निसंकोच होकर ज़कर-याह के घर अलशिबा के पास तीन मास रह कर अपने घर चली आई। लूका १-४-५६। क्या निकाह न होने की अवस्था में मंगेतर देवी को यह अधिकार होता था कि गर्भ होजाने पर अपने भावी पति के घर आजावे या क्या आदमी को यह अधिकार होता था कि वह ऐसी औरत को अपने घर लेआवे और फिर ओगुस्तुस केसर की आज्ञा पर नाम लिखाने के लिए बैत लहम में मरियम

को अपने साथ लेजावे और फिर घर कैसे लेआया जब कि उसका विवाह नहीं हुआ था। लूका २/१-६ और क्या बेतलहम में यह लिखवाया था कि मरियम पवित्र आत्मासे गर्भवती हुईहै! यदि नहीं लिखवाया तो मति १/१६ में जो कहा गया है कि युसुफ रास्त-बाज था, क्या उसकी रास्तबाजी फिर कायम रह सकती है। और मरियम वहां बेतेलहम में ही लड़का जनी। लूका २/७। यदि इस बात को मान लिया जावे कि गर्भ युसूफ का नहीं था तो हम पूछते हैं यीशु की उत्पत्ति के पश्चात् मरियम आयु भर विवाहिता स्त्री की तरह युसुफ के घर रही और उस से यीशु के भाई और बहनें उत्पन्न हुई तो क्या वह भी खुदा के बेटे ही थे, या यूसुफ की सन्तान थी और क्या योशू के पैदा होने के बाद यूसुफ ने मरियम से निकाह यहूदी शरीअत के मुताबिक कराया था। यदि नहीं हुआ तो बिला निकाह की सन्तान किस नाम से पुकारी जाएगी और यूसुफ की रास्त बाजी पर धब्बा तो नहीं आयगा! जब कि प्रति वर्ष युसुफ और मरियम अपनी सन्तानों को यरू-शलेम में ले जाते रहे तो उन्होंने बिना निकाह सन्तान को कैसे स्वीकार किया। और बरादरी ने कैसे सहन किया जब कि यहूदी शरीअत को पालन करना उस समय कितना आवश्यक था। और कितने कड़े नियम थे, मगर यीशु के बहिन भाईयों को किसी ने भी दोषी करार नहीं दिया। इस पर या तो यह मानना पड़ेगा कि निकाह हो चुका था, या यह मानना पड़ेगा कि सगाई के समय ही निकाह आदि की पूरीं कार्यवाही कर दी जाती है, ऐसी रसम बांसवाड़ा के भीलों में अब भी पाई जाती है, कि बरात सगाई के समय हो जाती है और विवाह सम्बन्धी कार्यवाही उसी समय पूर्ण हो जाती है, उसके पश्चात जब भी लड़का चाहे अपनी पत्नी को अपने घर ले आता है और बारादरी को उस पर कोई आपत्ति नहीं होती हमने व्यवस्था में बहुत तलाश की

मगर ऐसा कोई स्पष्ठ कानून हमें न मिला, एक इसी प्रकार की वात मिली यदि किसो पुरूष को कोई कंवारी कन्या मिले जिस के विवाह की वात न लगी हो और वह उसे पकड़ कर उस के साथ कुकर्म करे और वह पकड़े जाएं तो जिस पुरूष ने उस से कुकर्म किया होवह उस कन्या के पिता को ५० शेकेल रुपया दे और वह उसी की पत्नि हो वह उसे त्यागने न पावे। व्यवस्था विवरण २२/२८,२९। इस में निकाह का ज़िकर नहीं है, शायद सगाई के लिए भी इसी प्रकार का नियम हो,इस के लिए मत्ति के यह शब्द काबिलेग़ौर हैं। "जब मरियम पवित्रात्मा से गर्भवती हो गई तो यूसुफ उसे छोड़ देने का विचार कर रहा था तो खुदा के फरिश्ते ने स्वप्न में कहा कि अपनी पत्नि को अपने घर लाने से न डर...और वह घर ले आया,क्या किसी स्त्री को जिस की केवल सगाई ही हुई हो अपने घर लाते किसीं मनोनीत पति को देखा है ? बस यही बात हमारे विचारों की पुष्टी के लिए काफी है कि वह पत्नी के रूप में थी न कि मँगेतर रूप में यदि केवल सगाई ही होती तो किसी प्रकार भी यूसुफ मरियम को घर नहीं ला सकता था, मरियम को घर लाने के लिए कहना और ले आना ही हमारे उपरोक्त कथन का प्रमाण है। मत्ती १-१-२४

यदि ऐसी बात नहीं तो व्यवस्था की निम्न आज्ञा का पालन क्यों नहीं हुआ "कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पावे किन्तु १०—पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पावे। व्यवस्था विवरण २३/२।

ऐसी आज्ञा होते हुए यदि युसुफ का निकाह मरियम से नहीं हुआ था तो युसुफ की सारी सन्तान किस प्रकार यरूशलेम में दाखिल होती रहीं, पादरी साहिबान से हम नम्रता पूर्वक

प्रार्थना करेंगे-कि जो पोजीशन हमने पेश की हैं वह मरियम तथा युसुफ और शेष सन्तान को पवित्र साबित करने के लिए उत्तम पोजीशन है अन्यथा जो दोष आते हैं उनकी निवृत्ति किसी प्रकार भी नहीं हो सकती हम इन सब को पवित्र देखना चाहते हैं अब आगे एक इंजील का मत लिख कर उनका विरोध लिखेंगे।

मत्ती

"जब उस (यीशु) की माता मरियम की मगनी युसूफ के साथ हो गई तो उनके इकट्ठा होने से पहिले वह पवित्रात्मा की ओर से गर्भवती पाई गई, सो उस के पति युसुफ ने जो धर्मीथा और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया, जव वह इन बातों की सोच में ही था, तो प्रभु का स्वर्ग दूत उसे स्वप्न में दिखाई दे कर कहने लगा, हे युसुफ दाऊद की सन्तान तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उस के गर्भ में है, वह पवित्रात्मा की ओर से है "मत्ति १/१८—२५ तक"। सो यूसुफ नीन्द से जाग कर—— अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया। मत्ति --१--२४--२५।

जिन २ शब्दों को हमने अडर लाईन कर दिया है उन को गौर से देखो (अकट्ठा होने से पहिले मंगनी में इकट्ठा होने का प्रश्न पैदा नहीं होता, चाहिये तो यह था कि निकाह होने से

पहिले इस वाक्य से स्पष्ट हो गया कि मंगनी होने के पश्चात् मनोनीत पति को इकट्ठा होने का अधिकार था, (गर्भवती पाई गई) युसुफ को कैसे जान पड़ा कि मरियम गर्भवती है और फिर अकेले युसूफ को ही जान पड़ा और किसी को नहीं ईस मुइम्मे को समझना चाहिये (युसुफ उसे बदनाम नहीं करना चाहता था चुपके से उसे त्याग देने का विचार कर रहा था) कितनी बनावट इस वाक्य में है त्याग देने से और बदनामी होती या बदनामी खतम होती और त्याग का मतलब ही क्या वह युसूफ के घर में थी--कि त्याग रहा था, उसका गर्भ के साथ यदि कोई सम्बन्ध नही था तो त्याग देने का प्रश्न ही नहीं उठता--क्योंकि मरियम युसुफ के घर नहीं थी, त्याग शब्द को जो बड़ा रहस्य मय है मसि्ह ने उसे फरिश्ता के दामन में लपेट कर पवित्रात्मा का गिलाफ चढ़ा दिया और अन्धविश्वासी युसुफ को सन्तुष्ट कर दिया। (अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर) इन शब्दों ने तो सारा मुआमला ही साफ कर दिया, जब मंगेतर को कोई घर नही ला सकता था तो फिर लाने का विचार ही नहीं पैदा होता और [फिर जाग कर युसुफ अपनी पत्नी को घर ले आया] अब तो किसी को रत्ती भर भी संदेह नही रह सकता कि मंगेतर को अपने घर ला कर उसे पत्नी वत् रक्खा जा सकता है मरियम को घर लाने के बाद कोई चर्चा जनता और बारादरी में नही हुई न बदनामी हुई और न मुखालिफत बल्कि सब ने जैसा कि हमनें पहिले प्रकरण में साबित किया इस गर्भ को युसूफ का गर्भ मान लिया और सन्तान को भी जाइज करार

दिया इस से और स्पष्ट क्या हो सकता है कि उस समय मँगनी को ही विवाह समझा जाता था और उस के पति को पूरे अधिकार अपनी पत्नि के लिये होते थे [जब तक वह पुत्र न जनी तब तक युसुफ उसके पास न गया) इन्जील को ईसाई इलहामी पुस्तक मानते हैं, हो सकता है युसूफ के इस कृत्य का पता मत्ति को लग गया हो, इस से हमें गरज नहो हमें तो यह कहना है कि मंगनी के बाद पति अपनी निर्धारित पत्नी को घर लाकर पत्नी व्यवहार कर सकता था--और युसुफ ने ऐसा ही किया भी और सन्तान पैदा की, मती कहता है, "हेरो देस राजा के दिनों में जब यहोदिया के बैतेलहम में यीशु का जन्म हुआ तो देखो पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पुछने लगे कि यहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है, कहाँ है" मत्ति २/१-२ ।

समीक्षा:—कैसी मन घड़न्त बात है कि पूर्व से चलकर ज्योतिषी यरुशलेम तक तो आ गये, और घर के पास आकर पूछने लगे, अस्तु, मत्ति के प्रतिनिधी बतावें कि न जाने कितने बच्चे जन्मे हों किस को यहूदियों के राजा के जन्म लेने का पता था, कि ज्योतिषियों ने उस से पूछा, ज्योतिषी कहते हैं क्योंकि पूर्व से हम ने उस तारे को देखा है। और उस को (यीशु) को प्रणाम करने आये हैं (अ०) तारे पर मुहर थी कि ज्योतिषी समझ गये, यह विशेष तारा भी ज्योतिषीयों का कोई विशेष स्नेही मालूम होता है, जिसने उन को बता दिया कि यहूदियों का राजा पैदा हो गया, मत्ति महोदय को बड़ी दूर से गवाह लाने पड़े, और तारा क्या है, कोई अन्तर्यामी शक्ति है (शोक कि इस समय में भी ऐसी बातें मानने वाले अन्ध विश्वासी मौजूद है) "यह सुनकर हेरो देस राजा

और सारा यरुशलेम घवरा गया । मत्ति २/३ (अ०) राजा का घबराना तो कुछ ठीक भी था । मगर यरुशलेम क्यों घवरा गया, आखिर ज्योतिषीयों को वेतेलहम भेजा गया, किस ने भेजा हेरो देस ने मत्ति २/७-८ । मत्ति का सारा हवाई किला इसी से धड़म गिर जाता है कि ज्योतिषोयों के कहने से हेरो देस को यीशु का पता लग चुका था, और उस ने ही वेतेलहम भेजा, क्योंकि हेरो देस ने काहनों फकीहों से निश्चय कर लिया था, कि वैतेलहम में पैदा होना चाहिये मत्ति २/४-५ । और जब हेरो देस निश्चय कर चुका था, कि वैत लहम में वह वच्चा है, तो बैतेलहम और उसकी सरहदों के सव बच्चे कतल करवा दिये । जिन फकीहों और काहनों ने यीशु के पैदा होने का पता बेतेलहम बता दिया था, वह क्या जगह नहीं वता सकते थे, और सब आसपास के लड़कों को फिर कतल कराने की क्या आवश्यकता थी । त्तमि २-१७ यह साफ मनघड़न्त कहानी प्रतीत हो रही है, यह सारी कल्पित कहानी मति की ही कल्पना है, और किसी ने इसको नहीं लिखा मत्ति ने आगे लिखा और देखो जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था वह उन के आगे आगे चला (बीच में तारा विश्राम करने लग गया था कि ज्योतिषयों को पूछना पड़ा) और जहां वालक थां, उस जगह के ऊपर पहुंच कर ठहर गया। [तारा क्या है सर्वज्ञ शक्ति है] ज्योतिषयों ने प्रणाम किया तथा सोना, लोहबान, गंध भेन्ट कर के चल दिये । मत्ति २/९ से १२ । (शोक ! इस वीसवीं शताब्दी में ऐसे अन्ध विश्वासो लोग हैं जो सृष्टि नियम विरुद्ध सर्व साधारण को चमतकारों के जाल में फंसा कर पथ भ्रष्ट कर रहे हैं) आगे मत्ति कहता है देखो खुदावन्द के फरिश्ते ने यूसूफ को सपने में दिखाई देकर कहा कि

उठ बच्चे और उसकी मां को साथ लेकर मिस्र को भाग जा.... क्योंकि हेरो देस इस बच्चे को कतल करने का विचार रखता है। पस वह [यूसुफ] उठा और रात को ही बच्चे और उसकी मां को लेकर मिस्र चला गया। मत्ति २/१३-१४। सब इंजिलों को लिख कर पीछे विरोध दिखायेगें—मरकुस ने यीशु के जन्म का हाल नहीं लिखा आगे लूका की कल्पनाएं देखें।

लूका

"छटवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गुलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया जिस की मंगनी यूसुफ नाम....से हुई थी, उस कुंवारी का नाम मरियम था, स्वर्गदूत ने उस के पास भीतर आकर कहा; "आनन्द और जय तेरी हो" लूका १/२६, २७, २७, २८।

"स्वर्गदूत ने उस से कहा कि मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ हैं और देख तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा।" लूका १/३०, ३१

"उन दिनों में मरियम उठ कर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई और ज़करियाह के घर में जा कर अलीशिबा को नमस्कार किया, ज्योंही अलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, त्यों ही बच्चा उस के पेट में उछला, और अलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई।" लूका १/३९, ४१।

"और मरियम तीन महीने उस के साथ रह कर [अलीशिबा के] अपने घर लौट गई।" लूका १/५६।

[उस समय मालूम होता है स्त्रियों को बड़ी स्वतंत्रता थी] आगे लिखा है कि यूसुफ भी मरियम अपनी मंगेतर जो गर्भवती थी, नाम लिखवाने के लिए बैतेलहम में गया।" लूका २/५–६। और उसके जनने के दिन पूरे हो गए, और वह····पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रक्खा, क्योंकि उन के लिए सराय में जगह न थी, लूका २/७। आगे लिखा है कि "गडरियों के पास स्वर्गदूत ने आकर कहा, कि एक उद्धार कर्ता पैदा हूआ है और वह कपडे में लपेटा चरनी में पड़ा है····गडरियों ने आ कर बेतलहम में वैसा ही देखा" लूका २/८-१५। (गडरिये बड़े ही विश्वस्त थे कि उन के पास स्वर्गदूत आया और लड़का चरनी में पड़ा है इसमें अचंभे की बात ही क्या थी. (यह पुस्तक और ईश्वरी ज्ञान) आगे जब आठ दिन पूरे हूए और उस के खतने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, और शुद्ध होने के पश्चात उसे यरूशलेम में ले गए, वहा कबूतर आदि के बच्चों का बलिदान किया। लूका २/२१, से २४।

उसके माता पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व पर यरूशलेम को जाया करते थे, आगे लूका में वही हाल है जो पहले लिखा गया कि १२ वर्ष का हो कर जब यीशू यरूशलेम गया तो खो गया इत्यादि यूहन्ना ने इस विषय में कुछ नही लिखा।

मत्ती और लुका का विरोध जरा ध्यान पूर्वक देखिये

मत्ती क्या कहता है	लूका क्या कहता हैं
(१) यूसुफ ने मरियम को गर्भवती जान कर त्याग देने का विचार किया।	(१) गर्भ होने या न होने का यूसुफ में चिन्ह मात्र भी कुछ ख्याल नहीं हूआ और न त्याग देने का विचार हुआ।

(२) स्वर्गदूत ने यूसुफ को स्वप्न में कहा अपनी पत्नी को अपने घर ले आ।	(२) किसी स्वर्गदूत का जिकर तक लूका ने नहीं किया वह तो रात भर सोया रहा मालूम होता है।
(३) नीन्द से जागकर यूसुफ मरियम को अपने घर ले आया।	(३) स्वर्गदूत से फारिग हो कर अर्थात् बातचीत खतम होने पर मरियम सीधी जकरिया के घर पहाड़ी प्रदेश में चली गई और तीन मास वहां रह कर स्वयं घर चली आई।
(४) पूर्व के कई ज्योतिषी एक तारे के पथ प्रदर्शन में यीशू के जन्मस्थान की जगह आए और गिर कर प्रणाम किया और सोने लोहवान और गंध भेंट कर के ज्योतिषी लोग चले गये।	(४) पूर्व से ज्योतिषी आने का जिकर तक नहीं पशु चराने वाले गडरिये आए और कपडे में लपेटा चरनी में पड़ा बच्चा देखकर बिना कुछ भेंट दिए चले गए।
(५) यूसुफ को स्वर्गदूत ने स्वप्न में कहा हैरो देस इस बच्चे के मारने की फिकर में है अतः इस बच्चे और इस की मां को झट मिस्र में ले जा और जब तक में न कहूं लौटना नहीं अतः यूसुफ दोनों को साथ ले मिस्र को चला गया।	(५) किसी स्वर्गदूत ने यूसुफ से कुछ नहीं कहा वह तो घर में ही रहे नाम करण किया मन्दिर में कबूतरों के बच्चे बलिदान किये और हर वर्ष फसह के पर्व पर उसे यरुशलेम ले जाते थे।

समीक्षाः-हमें इस पर कुछ अधिक नही कहना केवल यही कि तुम्हारे दावे का तुम से ही हम इन्साफ चाहते हैं।

न्याय के नये पहलू में हम विश्वास लाते हैं।

यीशु के शैतान से आजमाए जाने में विरोध

"यीशु के युहन्ना से वपतिस्मा लेने के पश्चात यीशू शैतान से आजमाया गया तव उस समय आत्मा उसको जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो, वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा। मत्ती"४/१-२। मरकुस १/१२ में है कि तव आत्मा ने उसे तुरन्त जंगल की ओर भेजा और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उसको परीक्षा की और स्वर्ग दूत उसकी सेवा करते रहे "मरकुस १/१२,१३ लूका में हैं चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा लूका"४/१

समीक्षा-तीनों इंजीलों में है कि यीशू आत्मा के ले जाने से, भेजने से या सिखाने से चालीस दिन रात जंगल में शैतान से आजमाया गया, (आत्मा की आजमायश करने का ढंग तो वहुत ही महत्व पूर्ण है। शैतान सम्भवतः खुदा का परीक्षक है, जो उस से सफल हो जाए वही सफल है। मगर युहन्ना इन तीनों के विपरीत कुछ और ही कह रहा है युहन्ना ने उस दिन से लेकर अन्त तक सारा यीशू का प्रोग्राम लिख दिया अन्त तक न आत्मा के जंगल में जाने का, न शैतान से ओजमाए जाने का जिकर है आप युहन्ना को पढ़ लें शैतान से आजमाए जाने का नाम तक नहीं (इलहामी पुस्तक में इतनी गड़बड़)।

—:—

पांचवां-प्रकरण

यीशु के शिष्य बनाने के बारे में—

इञ्जीलों में विरोध।

उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया हैं। उसने गलील की झील के किनारे फिरते हुये दो भाई अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उस के भाई इन्द्रियास को झील में जाल डोलते देखा, क्योंकि वह मछुवे थे और उन से कहा मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम को मनुष्यों को पकड़ने वाले बनाऊंगां, वे तुरन्त जालों को छोड़ कर उस के पीछे हो लिये। "मत्ति ४/१७-२०।

फिर दो चेले और बने।

यहां शमौन और इन्द्रियास दो चेले बने।

और वहां से आगे बढ़ कर उस ने दो भाईयों अर्थात् जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने पिता जबदी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा और उन्हें भी बुलाया वह तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़ कर उसके पीछे हो लिये। मत्ती ४/२१-२२। "और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता" मत्ती ४/२ मरकुस में भी ऐसा ही है। मरकुस-१-आयत १६ से २०।

इन चेलों के विषय में लूका।

और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा, था तो ऐसा हुआ कि उस ने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखी, और मछुवे उन से उतर कर जाल धो रहे थे, उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी; चढ़कर उसने (यीशु ने) उन से विनती की, कि किनारे से थोड़ा हटाले चलें, तव वह बैठ कर लोगों की नाव पर से उपदेश देने लगा, जव वह बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहरे में ले चल, और मछलियां पकड़ने के लिए अपने जाल डालो। शमौन ने उस को उत्तर दिया, कि हे स्वामी ! हम ने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा, तो भी तेरे कहने से जाल डालूंगा, जव उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत सी मछलियां घेर लाए, और उन के जाल फटने लगे, इस पर उन्हों ने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आ कर हमारी सहायता करो। और उन्होंने आकर दोनों नावें यहां तक भर ली कि वे डूवने लगीं......और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़ कर उस के पीछे हो लिये।

लूका में केवल शमौन, याकूब और यूहन्ना का ही नाम है, इन्द्रियास का नही देखिये उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी। लूका ५/३। इतनी अधिक मछलियां पकड़ी जाने पर शमौन को बड़ा अचम्भा हुआ। और वह आकर पांव पर गिर पड़ा........और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना जो शमौन के सहभागी थे, उन्हें अचम्भा हुआ। लूका ५/१०।

अब देखिये मत्ती और मरकुस में शमौन और इन्द्रियास पहले मिले और याकूब और यूहन्ना आगे जाने पर दूसरी जगह मिले, मगर लूका में एक ही जगह मिले मती और मरकुस में इन्द्रियास का नाम भी है— मगर लूका में तो नहीं है। मरकुस और मती में दो वार जाल डाल कर मछलियां पकड़ कर नावों भरने का लेशमात्र भी वर्णन नहीं, जैसा कि लूका में है मती और मरकुस में कहने मात्र से ही चारों पीछे हो लिये मगर लूका में मछलियों का चमत्कार देख कर पीछे हुये वह भी तीन इन्द्रियास का नाम तक नही मगर अब यूहन्ना की भी सुन लीजिए।

दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जने खड़े हूये थे। और उस ने यीशु पर जो आ रहा था, दृष्टि कर के कहा-देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है तब वह दोनों चेले उस की यह सुन कर यीशु के पीछे हो लिए, यूहन्ना १/३५ से ३८। उन दोनों में से जो यूहन्ना को वात सुन कर यीशु के पीछे हो लिये थे, एक तो शमौन पतरस का भाई इन्द्रियास था, युहन्ना १/४०। इन्द्रियास ने अपने भाई शमौन को यीशू के पास ला कर चेला वनाया, युहन्ना १/४२। दूसरे दिन यीशू ने गलील को जाना चाहा और फिलिप्पुस से मिल कर कहा, कि मेरे पीछे हो ले, 'फिलिप्पुस ने नतन एल से मिल कर कहा····और नतनएल यीशु का चेला वना अब यहाँ यह चार चेले हुये,इन्द्रियास,शमौन फिलिप्पुस और नतनएल, यूहन्ना १/४४ से ५१।

अव देखिए मती, मरकुस,लूका का कहा हुआ,यूहन्ना में न नदी का किनारा हैं न जाल न मछलियां न याकूव और युहन्ना है, उन दोनों मती मरकुस में शमौन का पहले आया है यूहन्ना में

इन्द्रियास ने शमौन को लिखा है, लुका में इन्द्रियास का नाम तक नहीं है मती में शमौन, इन्द्रियास, याकुव और यूहन्ना ४ पहले चेले हैं मगर युह्न्ना में इंद्रियास, शमौन, सिलिप्पूस और नतनएल चार पहले चेले हैं (ईश्वरी ज्ञान और इतना भेद धन के लोभ में फस कर ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों कुछ न्याय को समक्ष रख कर ईश्वरीय कहलाने वालो वाणी को गौर से पढ़ो)।

छठा प्रकरण

शान्ति या तलवार

यीशु के शाँति दायक उपदेशों के बड़े राग अलापे जाते हैं और कई अपरिचित तो उन के दिखाए " अव्यवहारिक कथन पर लट्टू हो जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने यकतरफ बात सून कर ही फैसला कर लिया है और असल हकीकत को देखा तक नहीं। हम ऐसे पथ भ्रष्ट लोगों के समक्ष दोनों पहलू रखते हैं ताकि उनकी गुमर ही दूर हो जाए और वह सत्य को ग्रहण करके निश्चयात्मिक ज्ञान को प्राप्त करें।

अवसर वादियों की हकीकत तो मदारी के थैले की भांति होतीं है, मदारी लोग भी अपने थैले में ऐसीं चीजें रखते हैं जिस से वह लोगों का घर पुरा कर सकें। इसी प्रकार अवसरवादो भी लोगों का घर पुरा करने के लिए ऐसी बातें जोड़ कर सब्ज बाग दिखाते हैं कि जिस से लोगों को प्रसन्न और मोहित कर सकें उन को सत्य और असत्यों से कोई वास्ता नहीं होता जैसे लोग देखे वेसी बात कह दी और वाह वाह प्राप्त कर ली ऐसे हो यीशु के दो प्रकार के कथन हैं जिन्हें हम पेश करते हैं:—

शान्ति

तूम सुन चुके हो, कि कहा गया था कि आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत परन्तू मैं तूझसे यह कहता हुँ कि बुरे का सामना न करना परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दुसरा भी फेर दे, और यदि कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुरता ले तो उसे दोहर भी ले लेने दे. और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, उस के साथ दो कोस चला जा, जो कोई तुझसेमांगे, उसे दे, और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़। मत्ती ५/३८-४२।

मैं तुम से कहता हूँ कि अपने वैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो। मती ५/४४। समीक्षाः-क्या किसी पादरी या ईसाई महोदय से ऊपर वर्णन किया सलूक

तलवार

जो कोई मनुष्योंके सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लुंगा पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उस से मै भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करुंगा (अभी स्वयं वैरियों के लिये प्रार्थना करना भूल गए) मति कहता है यह न समझोकि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हुं मैं मिलाप कराने को नहीं तलवार चलाने आया हूँ। क्योंकि मैं तो इस लिए आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी मां से और बहु को उसकी सास से अलग कर दुंगा मनुष्य के वैरी उसके घर के ही लोग होंगे। मत्ती १०/३२-३७। समीक्षा-देखिये अभी कैसे क्रोधित हो गए अभी तो वैरियो से भी प्रेम करने का उपदेश सुना रहे थे, और अभी तलवार ले बैठे एक और तो कह रहे हैं, कि भाई से

किया जाए तो वह यीशु के कहे उपदेश पर कटिबद्द रह कर अपने आदर्श वाद का असली सबूत देंगे, यदि कोई प्रमाणित करने को तैयार हो तो हम परीक्षा करलें अन्यथा हाथी के दांत खानेके और तथा दिखाने के और वाली कहावतही होगी, पाठकों को रोमन कैथुलिक और प्रोटस्टैन्टों का खूनी इतिहास पढ़ कर इस सब्ज बाग की सैर करना चाहिये अत: १६५७ के गदर के हालात पढ़ने चाहियें कोई तैय्यार हो या न हो, मुफ्त की वाह वाह! तो मिल जाऐगी जैसे:—

"मुफत में मिल जाए
वह माल अच्छा है।
दिल के खुश रखने को
गालिब यह ख्याल अच्छा है"

परन्तु मैं सुनने वालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो, जो तुम से वैर करें उन का वैर रखने वाला हत्यारा होता है उधर अपने आने का उद्देश्य विरोध डालना और तलवार बता रहे हैं।

यरूशलेम में मेला उखाड़ फेंका

यहूदियों का फ़सह का पर्व निकट था, और यीशु यरुशलेम को गया और उसने मन्दिर में बैल और भेड़े और कबूतर के बेचने वालों और सराफों को बैठे हुए पाया और रस्सियों का कोडा बना कर सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया और सराफों के पैसा बिथरा दिये और पीढ़ों को उलट दिया, और कबूतर बेचने वालों से कहा इन्हें यहां से ले जाओ। यूहन्ना २/१३-१६।

(इससे श्री यीशु की मनोवृत्ति का साक्षात दर्शन हो जाता है) आगे देखिए।

मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं और क्या चाहता हूं। केवल यह कि अभी सुलग जाती मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले तब तक मैं

भला करो, जो तुम्हें सराप दें, उनको आशिष दो, जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो, जो तेरे एक गालपर थप्पड मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरी दोहर छीन ले उसको कुरता लेनेसे भी न रोक, जो कोई तुझ से मांगे उसे दे, और जो तेरी वस्तु छीनले, उससे न मांग और जैसा तुम चाहते हो कि जो कोई तुझ से मांगे उसे दे, और जो तेरी वस्तु छीन ले, उस से न मांग, और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रक्खो तो तुम्हारी क्या बढ़ाई क्योंकि पापी भी अपने प्रेमरखने वालों के साथ प्रेम रखते है और यदि तुम अपने

कैसी सकेती में रहूँगा, क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हुं ! मैं तुम से कहता हुँ नहीं, वरन् अलग कराने आया हुं क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रक्खेंगे, तीन दो से और दो तीन से पिता पुत्र से और पुत्र पिता से विरोध रक्खेगा, मां बेटी से और बेटी मां से, सास बहु से और बहु सास से विरोध रक्खेगी । लूका-१२-४९ से ५३ ।

समीक्षाः—खूब बिगड़े सारे विश्व को कलह का घर बनाने लगे अभी तो प्रेम का गीत गा कर लोगों को प्रभावित कर रहे थे, और उसी प्रेम की ध्वजा पकड़ कर शांति सहन शीलता और उपकार का राग अलाप रह थे, उसी प्रेम ध्वनि में ही आपे से बाहिर होने लग पड़े यदि प्रेम का चोला न पहन कर क्रोधावेश में हो जाते तो न जाने क्या गुल खिलाते ।

भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बढ़ाई क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं, और यदि तुम उन्हें उधार दो, जिस से फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बढ़ाई, क्यों कि पापी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर पाए वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो, और भलाई करो और फिर पाने की आस न रख कर उधार दो, और फिर तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा और तुम परम प्रधान की सन्तान ठहरोगे। लूका ६/२७ से ३५।

वाह उस्ताद खूब रंग जमाया सुनने वालों को मंत्र मुग्ध कर दिया मगर शोक कि आज तक न किसी पादरी ने ऐसा चरित्र अपनाया और न किसी ईसाई राज्य ने ऐसा विधान बनाया।

जमाना कर दिया घायल,
तेरी सीधी निगाहों ने।
खुदा जाने अगर तिरछी,
नजर होती तो क्या होता।

यीशु की प्रेम मई बाणी

फरीसियों ने कहा कि यह तो बाल्ज़ बूल (शैतान) की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है इसी बात पर यीशु बिगड़ गए और बोले, हे सांप के बच्चों! तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो। मत्ती १२/३४

इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरु! हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं (तो बोले) कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूढते है। मत्ती १२/३६

यदि यीशु की मृदु वाणी जो उन्होंने फरीसियों और शास्त्रियों को कहीं, देखना हो तो मती का बाब २३ पढ़िये। हेरो देस (वहां का राजा) के लिये लोमडी कहा लूका १३/३१।

धन्य है वे जो मन के दीन है क्योकि स्वर्ग का राज्य उन्ही का है। मत्ती ५—३ ।
धन्य है वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पायेंगे मत्ती—५—४ ।
धन्य है,वे जो नम्र हैं। क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे । मती – ५—५ ।
धन्य है, वे जो धर्म के भूखे ओर प्यासे है, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। मती—५--६
धन्य हैं, वे जो दयावान है, क्योंकि,;उन पर दया की जायेगी। मती—५—७।
धन्य हैं,वे जिनके मन शुद्ध है क्योकि वे परमेश्वर को देखेंगे मती—५—८ ।
धन्य है, वे जो मेल कराने वाले हैं। क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र कहलायेंगे। मती ५—९ ।
धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताये और झूट बोल बोल कर तुम्हारे विरोध में
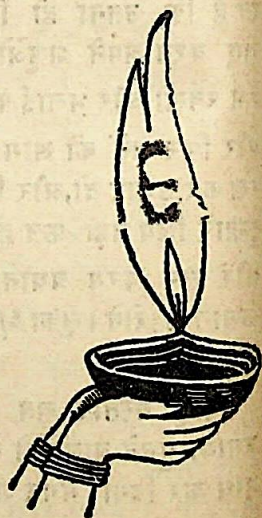
सब प्रकार की बुरी बातें
कहें मती ५—११। कितना
बड़ा आदर्शवाद बताया।

शान्ति और तलवार के विषय में हमने दोनों पहलू पाठकों के समक्ष रख दिये हैं ताकि दास वृति रखने वाले लोगों की यक तरफा बात सुन कर आप बहक न जाएं। यीशु के जितने उपदेश हैं वहां "पर उपदेश पण्डित बहुतेरे" समान हो हैं एक भी उनके जीवन में दृष्टि गोचर नहीं होता। शिष्यों को कपड़े बेच कर तलवारें ले कर देना, और बाप को दफन करने की आज्ञा मांगने पर कहना कि मुर्दों को मुर्दो रहने दो।

(यीशु ने) फिर कर उनसे कहा, अगर कोई मेरे पास आए और अपने मां बाप और बीबी बच्चों और भाइयों बहिनों बल्कि अपनी जान से भी दुश्मनी न करे। तो मेरा शागिरद नहीं हो सकता। लूका उर्दू १४/२६।

इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा कि हे गुरु हम तुम से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। यीशु ने उत्तर दिया कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढते है, परन्तु यूनस भविष्य वक्ता के चिन्ह को छोड़ और चिन्ह नहीं दिखाया जायगा। मत्ती १२—३८।

इसी प्रकार इन लोगों को सांप के बच्चों और सूरों के नामों से पुकारा गया है यह सब मत्ती में ही है।

मेंरे सामने घात करो

परन्तु मेरे उन वैरियों को जो नहीं चाहते कि मैं उन पर राज्य करूं उन को यहां ला कर मेरे सामने घात करो लूका वा—१६—आ० २७।

अब पाठक वृन्द आदर्श वाद का झमेला भी देखलें और इधर उन के साथ जो बर्ताव किया जावे उस को भी देख लो और जान लो—कि हाथी के दांत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं।

मनुष्य की पहचान के दो मार्ग।

यदि किसी मनुष्य की ठीक स्थिति को जानना हो, उसकी उत्कृष्टता तथा गिरावट को समझना हो तो वह उसके भाषणों से नहीं समझी जा सकती अपितु उसके आचार, व्यवहार, सहवास, रहन-सहन से समझी जा सकती है। ठीक अवस्था को जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम देखें कि उसकी संगत किन लोगों के साथ है और जो लोग उसके संसर्ग में आए उनके विचारों में कहां तक परिवर्तन हुआ और उनकी उसके साथ कहां तक सहानुभूति है। इसके लिए हम इन्जीलों के ही कुछ प्रमाण नीचे लिखते हैं।

यीशु की संगत किन लोगों के साथ थी और उसकी अपनी क्या स्थिति थी।

मत्ती में लिखा है-क्यों कि युहन्ना न खाता आया और न पीता। और वे कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है। मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया और वे कहते हैं कि देखो पेटू और पयक्कड़ मनुष्य, [अर्थात शराबी और मछली मांस भक्षी] महसूल लेने वालों और पापियो का मित्र, मत्ती वा—११ आ १८—१६ उपरोक्त प्रमाण से यीशु का रहन सहन और संगती का दिग्दर्शन

भली प्रकार हो जाता है, कि यीशु कैसा था और उस के मित्र कौन थे यीशु का कथन तो यह है—कि मैं दया से प्रसन्न हूं बलिदान से नहीं परन्तु देखना यह है कि यीशु का अपने लिए क्या अमल था।

यीशु का भोजन

यूं तो यीशु मछली तो आम तौर से खाता ही था–मगर पकड़े जाने से पहले खाया वह था—तब अखमीरी रोटी के पर्व का दिन आया जिसमें फसह का मेम्ना (बकरे का बच्चा) बलि करना अवश्य था उसमें यीशु ने चेलों को फसह पर्व का भोजन बनाने को कहा उन्होंने बनाया और खाते समय यीशु ने कहा–कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, तब तक में दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। लूका बा—२२--आ—आ—७ बा १८ कथन में तो यह बात आई कि मैं बलिदान को नहीं, दया को पसन्द करता हुं मगर अपना अमल तो यह कि फसह के दिन मेम्ना बकरी के बच्चा का मांस खाया—और दाख रस भी पिया क्योंकि मांस के साथ तो दाख रस (शराब) का मेल है, हमारा तो दृढ़ विचार है कि कोई मनुष्य जो अपने पेट को मुर्दा पशु पक्षी के मांस की कब्र बनाता है--वह प्रभु के राज्य में कभी प्रविष्ठ नहीं हो सकता और वह दयाबान ही कहला सकता है वह है यीशु के कर्मों का दर्शन।

यीशु की मातृ भक्ति—किसी ने उस से (यीशु से) कहा, कि देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। और तुम से बातें करना चाहते हैं; यह सुन कर उस ने उत्तर दिया—कि कौन है मेरी माता; और कौन है मेरे भाई, और अपने चेलों की ओर

हाथ बढ़ा कर कहा—कि यहहै,कि देखो मेरी माता और भाई यह हैं, हां यह चेले आपकी माता है एक ने तो पकड़वा दिया और शेष वन्दी होने के समय भाग गए। मत्ती १२-४७-४८-४६

अपने शिष्यों के विषय में यीशु के विचार

पतरस—परन्तु उस ने फिर कर और अपने चेलों को और देख कर पतरस को झिड़क कर कहा कि हे शैतान मेरे सामने से दूर हो, क्योंकि तू परमेश्वर को बातों पर नहीं। परन्तु मनुष्यों का बातों पर मन लगाता है। मरकुस ८/३३-३४

तब यीशु ने उन से (१२ चेलों से) कहा कि तुम सब ठोकर खाओगे। और लिखा है, कि मैं रखवाले को मारुंगा, और भेड़ तितर वितर हो जायेगी। मरकुस १४–२७।

तब प्रेतों ने प्रभु से कहा। हमारा विश्वास बढ़ा। प्रभु ने कहा, कि यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता तो तुम इस तूत के पेड़ से कहते, कि जड़ से उखड़ कर समुन्द्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता। लूका १७/५-६ तथा मत्ती—१७/१६-२० (राई के बराबर भी ईमान नहीं)।

यीशु ने उन से कहा, (चेलों से) हे अल्प विश्वासियो तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं मत्ती १६/८-६।

एक चेले ने यीशु के साधारण पैसे लेकर पकड़वा दिया।

तब यहूदा इसकरि योती जो बारह में से एक था, महा याजकों के पास गया। कि उसे (यीशु को) उन के हाथ पकड़वा

दे। वे यह सुन कर आनन्दित हुए और उस को रुपये देना स्वीकार किया। और वह अवसर ढूंढने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे। मरकुस १४—आ० १०—११।

तव यहोदा········एक बड़ी भीड़ ले कर आया और उसने कहा था—कि में जिस को चूमूं वही होगा। उसे पकड़ लेना, तव ऐसा करने पर उन्होंने उसे पकड़ लिया। मरकुस १४-४३-४६।

यह है विश्वासघाती चेला यीशु के साथ दिन रात रहने पर भी उस पर कोई प्रभाव न पड़ा (इस पृथ्वी, आकाश बनाने वाले को चेला बनाते समय पता ना लगा—कि यह विश्वास घात करेगा।

अब दूसरों को भी देखियो

और एक जवान अपनी नग्गी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया। और लोगो ने उसे पकड़ा। पर वह चादर छोड़ कर नग्गा भाग गया। मरकुस १४—५१—५२।

जब पतरस नीचे आंगन में था, तो महायाजक की लोंडियो में से एक वहां आई, और पतरस को आग तापते देखकर उस पर टकटकी लगा कर देखा और कहने लगी, तू भी तो उस नासरी यीशू के साथ था। वह मुकर गया और कहा, कि मैं तो नहीं जानता········फिर वह बाहर डेवडी में गया। वह लौंडी उसे देख कर उसने जो पास खड़े थी, फिर कहने लगी। यह उन में से एक है। परन्तु वह फिर मुकर गया। फिर जो पतरस के पास खडे थे। फिर पतरस से कहा। निश्चयं तू उन में से एक है क्योंकि तू गलीली भी हैं। तब वह (पतरस) धिकार देने और शपथ खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिसकी तुम चर्चा करते हो। नहीं जानते। मरकुस ६६ से ७२।

यह है यीशू का जेठा चेला, जिस ने गूरु को धिक्कार दी, हम इस पर कुछ नहीं कहेंगे, परन्तू इतना ही कहना है—कि चेलों पर जो प्रभाव यीशू का पड़ा वह ऊपर प्रकाशित हो रहा है।

●●

सांतवा प्रकरण

कफारा

ईसाई मत में जिस प्रकार तसलीस का सिद्धान्त इस मत की जान है,इसी प्रकार कफारा का सिद्धान्त भी इस मत को आत्मा है कफारा का अर्थ तो ढकना याढकांना या छुपाने वाला गुनाहों के इवज़ होता है। मगर ईसाई मत में इसका अर्थ है-पापों की क्षमा कराना। वलिदान द्वारा अर्थात यीशु सूलों पर चढ़ कर उन लोगों के पापों के लिये वलिदान हुआ । जो ईसाई बनेंगे। मत का यह यह सिद्धान्त है कि सब ही मनुष्य आदम को सन्तान होने से पापी है क्योंकि आदम ने खुदा की अवज्ञा करके पाप किया और वह पाप परम्परा से हर मनुष्य में आ गया। हमारे इस लेख से प्रत्येक इस सिद्धान्त को भली भान्ति समझ सकेगा, रोमियों में जैसे लिखा है क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान वहुतायत से पीते हैं, वह एक मनुष्य के अर्थात यीशु मुसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। इसलिए जैसे एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसे हो एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्म्मी,ठहराए जाने का कारण

हुआ क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। रोमियों ५/१७ १६।

ईसाई मत का कहना है कि एक ही आदम के पाप करने से दुनिया में पाप आया और सब मनुष्य पापी हो गए इसी प्रकार एक योशु के धर्मी होने से धर्म आया। मगर भेद इतना है कि वहां आदम का पाप तो सब में आया मगर योशु के धर्म का प्रभाव ईसाई होने वालों तक ही सीमित है शेष पर अब भी आदम के गुनाह का प्रभाव है।

कफारा

परन्तु उस के अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह योशु में है। सेत मेत धर्मी ठहराये जाते हैं। (२५)उसे परमेश्वर ने उस के लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने (ईमान लाने) से कार्यकारी होता है। कि जो पाप पहले किये गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की उनके विषय मेंवहअपनी धार्मिकता प्रकट करे। वरन उसी उसकोसमय धार्मिकता प्रगट हो। कि जिससे वह आपही धर्मी ठहरे। और जो योशू पर विश्वास करे, उस को भी धर्मी ठहराने वाला हो। रोमियो वो—३—आ २४ से २६ तक।

इसमें स्पष्ट है-कि जो योशू पर ईमान लावे उसके पाप दूर हों। परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी २ वस्तुओं का महायाजक बन कर आया तो उस ने और भी बडे और सिद्ध तम्बु से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नही अर्थात इस सृष्टि का नहीं और बछड़ों और बकरों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। क्योंकि जब बकरे और बैलों के

खून और कलोर (गौवों) की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शूद्धता कर देती हैं तौ मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष वलि चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को बुरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ! ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो; और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई हैं बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार मीरास को प्राप्त करें क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहां वाचा बांधने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है क्योंकि ऐसो वाचा मरण पर पक्की होती है और जब तक वाचा बांधने वाला जोवित रहता है तब तक वाचा काम की नहीं होतीं। इसलिए पहलो वाचा भो बिना लोहू के नहीं बाँधी गई। क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उसने बछड़ों और बकरों का लोहू लेकर पानी और लाल ऊन और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया और कहा कि यह उस वाचा का लोहू है जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिए दी है, और इसी रीति से उसने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुए लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती है और बिना लौहू के वहाए जमा नहीं होती इब्रानियों ६/११ से २२।

करे कोई भरे कोई

समीक्षा—ठीक है करे कोई भरे कोई कफारा इस को कहते हैं। कैसा अंधेर है कि मनुष्यों के पापों की निवृति बकरे और बैलों के लोहू से होती है और इसी लोहूकी समानता नजीर पर

यीशु की सलीब को रक्खा है) कैसो गलत स्तलाल है पापों को मुआफी बैल और बकरों के बलिदान और फिर उस पर अपनी सलीब से पाप निवृति की दलील, किजब बकरों और बेलों के खून गिरानें से किसी कीं मुक्ति मुहाल और असम्भव है तो इसी प्रकार यीशु की सलीब से मुक्ति भी असभव है । ईसाई भाईयों! इस मिथ्या विश्वास को छोड़ कर उस सच्चे धर्म में आओ जो आप को मिथ्या प्रलोभन और अन्ध बिश्वासों से परे रख कर सत्य ज्ञान का मार्ग बताता है, वह है वैदिक धर्म, आगे देखें लिखा है, उसीइच्छा से हम यीशु मसीह के देह को एक ही बार बलिदान चढ़ाएजाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं और हर एक याजक तो खडे हो कर प्रति दिन सेवा करता हैं और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी सी दूर नहीं कर सकते बार बार चढ़ाता है ।

पर यह व्यक्ति (यीशु) तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढा कर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा । इब्रानियों १०/१० से १२ ।

पहले प्रमाण में तो मूसा के बलिदानों को अपनी सलीब के बलिदान को आधार भूत बनाया । (मगर इस में कह दिया कि याजक का बार बार बलिदान पापों को कभी दूर नहीं कर कर सकता) ।

यीशु पर विश्वास से मुक्ति [अर्थात् ईसाई होने से]

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रक्खा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास

करे, वह नाश न हो, परन्तू अनन्त जीवन पाए, परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तू इसलिए भेजा कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए जो उस पर विश्वास करता है। उसी पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तू जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठेहर चुका, इस लिए कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। युहन्ना ३/१६ से १८। अब देखिए, जो कोई यीशू पर ईमान लावे वह कितना ही नेक क्यों न हो, स्वर्ग का अधिकारी नहीं मगर यीशू पर ईमान लाने वाले को कोई रुकावट नहीं। साधारण लोगों को फांसने के लिये खूब घड़न्त घड़ी और बहकाने का नुसखा तलाश किया।

और उसके पुत्र यीशू का लोहु हमें सब पापों से शूद्ध करता है। यदि हम कहें कि हममें कुछ भी पाप नही, तो अपने आप को धोखा देते है और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान ले तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है, यदि कहें कि हमने पाप नही किया तो उसे (यीशू) को झूठा ठहराते है और उसका बचन हम में नहीं है।

यूहन्ना की पहली पत्री १/७ से १०।

(ओहो बहुत दूर तक पहुँचे। कैसे पाप की ओर प्रवृत्ति कराने वाले वाक्य है? क्योंकि जब सब पापी हैं और पाप रहित हो ही नही सकते और पाप क्षमा कराने का ठेकेदार यीशु हैं।

और वह बिना इस से भी बढ कर एक और हाथ मारा कि यदि हम अपने आप को पापी न समझेंगे तो यीशु झुठा ठहरेगा। कर्म फल भोगे बिना पाप क्षमा कराता है, तब इससे बढ़ कर अंध विश्वास और क्या हो सकता है।

पाप क्षमा करने की और पुष्ट करते हैं।

परन्तु इस लिऐ कि तूम जान लो कि मनुष्य के पुत्र यीशु को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। मती ६/६। और भी यही—

इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना जैसा विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। रोमियों ३/२७-२८।

क्योंकि पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें। युहन्ना ५/२१-२३।

समीक्षा—खूब फांस लिया उस्ताद। क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उस रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया हे कि अपने आप में जीवन रक्खे, वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है इस लिए कि वह मनुष्य का पुत्र है। यूहन्ना ५/२६-२७।

यहां तो लोगों को प्रभावित करने में कमाल कर दिया क्योंकि जब न्याय का सब काम यीशू के अधीन है तो फिर बाकी क्या रहा ? अभी ठहरो यह न्यायपति भगवान से मुंह के बल ओन्धे गिर गिर कर प्रार्थना करेगा कि हे पिता यह प्याला मुझ से टल जाए और न्याय का अधिपति पकड़ा जाकर सलीब पर लटक जाएगा ।

अब जरा आगे देखिये

यीशु ने उनसे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यूहन्ना १४/६ ।

तब यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सत्य सत्य कहता हूँ कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ । जितने मुझ से पहले आए, वे सब चोर और डाकू हैं । परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी, द्वार मैं हूँ यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और नष्ट करने को आता है । यूहन्ना अ, १०-७-८-६ ।

जितने पहले आए वह चौर और डाकू क्यों हैं हेतु सुनिये—

तुम से सत्य सत्य कहता हूँ कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नही करता, परन्तु और किसी और से च

जाता है। वह चोर और डाकू है, परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है यूहन्ना १०/१—२ कैसी कही कलम तोड़ दी-सब को चोर और डाकू बना दिया, इसलिए कि वह यीशु पर ईमान नही लाए—सब को चोर और डाकू बनाने वाले एक आप ही उत्तम हैं—

माशूक तो यूं देखे हैं जमाना में हजारों, ।
मगर आप का अंदाजो अदा और ही कुछ है ।।

हम ईसाई भाईयों से कहेंगे कि आप ही जरा पूर्व होने वाले पैगम्बरों और महा पुरुषों की इस युक्त निन्दा को देखिये—यह है कफारा जिस पर ईसाई मत की आधार शिला है जो दुनियां को गुमराह करने वाली है:— क्या ईसाई इस सब की निन्दा पर ध्यान करेंगे—

आप ही अपने ज़रा जौरो जफा को देखें ।
हम अगर अर्ज करेंगे तो शिकायत होनी ।।

व्यवस्था [मूसा की शरीयत] दण्ड का कारण है

हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है. जो व्यवस्था के अधीन हैं इसलिए कि हर एक का मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उस के सामने धर्मी नही ठहरेगा । इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है कैसी अनोखी युक्ति है) ।

पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं

अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है, क्योंकि कुछ भेद नहीं। इस लिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है, परन्तु उस के अनुग्रह से उस छुटकारे ने दारा जो यीशु मसीह में हैं, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है (अर्थात ईसाई बनने से रोमियों ३/२२ से २५ इस लिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था (शरीअत) के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। रोमियों ३/२८।

समीक्षाः—साम्प्रदायिक लोगों का यही मार्ग होता है—कि वह मनुष्यों की बुद्धि पर ताला लगा देते हैं ताकि वह केवल हमारा ही विश्वास करें जैसा कि ईसाई मत भी मानता है-पौलूस लिखता हैं पर यह बात प्रगट है कि व्यवस्था (मूसा-की पुस्तक) के दारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, पर व्यवस्था (पुस्तक) का विश्वास ले कुछ सम्बन्ध नहीं.....मसीह ने, जो हमारे लिए स्राप्ति बना, हमें मोल ले कर व्यवस्था (पुस्तक) के स्राप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, कि जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित हैं, गलतियों ३/११-१३।

यदि.......धार्मिकता व्यवस्था से होती, परन्तु पवित्र शास्त्र ने सब को पाप के आधीन कर दिया, (क्यों कर दिया) ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है विश्वास करने वालों के लिये पूरी हो जाये। गलतियों ३/२१-२२। [हां आखिर व्यवस्था किस मर्ज की दवा है] पर विश्वास की आधीनता आने से पहले व्यवस्था से हमारी रखवाली होती थी और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होने वाला था हम उसीं के बन्धन में रहे इस लिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने की हमारी शिक्षक हुई है—कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें—परन्तु जब विश्वास आ चुका तो हम शिक्षक के आधीन न रहे, क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो यीशु मसीह पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। गलतियों ३/२३ से २६ यहुदियों को खुश करने के लिए पहले व्यवस्था की तारीफ के पुल बांध दिये मगर यहाँ व्यवस्था को खतम करने के लिए कह दिया कि व्यवस्था तो यीशु तक पहुंचाने के लिए शिक्षिक थी, परन्तु जब विश्वास आ गया तो हम शिक्षक के आधीन न रहे देखिये किस हेर फेर से व्यवस्था को खतम करने के लिए कितनी उलझने डाली है, कितने दाव पेच खेले और आखिर कह दिया कि अब जरुरत नहीं रही, जहां तक उसके पहुंचाने का काम था उसने पहुंचा दिया। गलतियों ३-२१ से २७।

मत्ति के कथनानुसार यीशु सूली पर मरे नहीं थे; न कब्र में मरे थे। मत्ति वा-१२ आयत ४०।

जैसा कि यूनस तीन दिन रात मछली के पेट के अंदर रहा वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन जमीन के अंदर रहेगा। यदि यह सच है-तो यूनस मछली के पेट के भीतर जीवित ही प्रविष्ठ हुआ और जीवित ही निकला यदि ऐसा है, तो इस कथन के अनुमद यीशु भी सलीब पर नहीं मर सकता न कब्र में मरा। बल्कि जीवित हो कब्र मे गया और जीवित ही निकला। यीशु को जिस कब्र में डाला गया था, वह केवल एक गढ़्ढे की सतह थी, और ऊपर पत्थर रख दिया था।

उपरोक्त प्रमाणों का सारांश

(१) जो मुझ से पहले आए वह सब चोर और डाकू है, दरवाजा मैं हुं जो मेरे रास्ते दाखिल हो, नजात पावेगा।

(२) जब एक के आज्ञा भंग करने से दुनिया में पाप आया तो एक के आज्ञा पालन करने से पुण्य क्यों नहीं आयगा।

(३) यीशु का सलीब पर चढ़ना ईसाई होने वाले लोगों के लिये उनके पापों का कफारा है [प्रायश्चित है]।

(४) पहले पशुओं के बलिदान से पापों का प्रायश्चित होता था मगर अब यीशु ने अपना बलिदान करके ईमान लाने वालों का पाप धो दिया।

(५) व्यवस्था [धर्म शास्त्र] से मनुष्य निर्दोष नहीं हो सकता ईमान ही मुक्ति दाता और पाप निवृति का साधन है।

(६) जब हम पापी ठहरे तो यीशु हमारे लिए स्नाप्ति हुआ

(७) आदम ने गुनाह किया और वह परम्परा से सब में समा गया।

(८) अतः यीशु के खून से हम नजात के अधिकारी हुए इत्यादि।

यीशु ने कहा मुझे अधिकार दिया गया है

११—शिष्य यीशु से मिले........कुछ ने संदेह किया यीशु ने पास आ कर उन से बातें की और कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। पस तुम जा कर सब को चेला बनाओ। मत्ती १८/१९–२०। मरकुस में लिखा है फिर पीछे वह उन ग्यारह को जो खाना खाने बैठे थे दिखाई दिया और उन और उसके अविश्वास और सख्त दिली पर मुलामत की, क्यों कि जिन्होने उसके जी उठने के पीछे उसे देखा था, उन्होंने उस का विश्वास न किया था, और उसने (यीशु ने) उन [चेलों] से कहा कि तुम तमाम दुनियां में जाकर सारी खलक (विश्व) के सामने इंजील की घोषणा करो [हजरत इंजील उस समय कहां थी] जो ईमान लावे, और बपतिस्मा ले वह मुक्ति पाएगा और जो ईमान न लाए, वह मुजरम [दोषी] ठहराया जायगा—और ईमान लाने वालों के दरमियान वह चमत्कार होंगे वह मेरे नाम से बद रूहों को निकालेंगे–नई नई भाषाएं बोलेंगे सापों को उठा लेंगे (मदारी की तरह) और यदि कोई हलाक करने वाली चीज पीयेंगे उन्हें कुछ हानि न पहुँचायगी और बीमारों पर हाथ रखेंगे, तो अच्छे हो जायेंगे मरकुस १६/१४ से १८।

समीक्षा:—अब पहले मत्ती और मरकुस में विरोध देखिये मत्ती कहता है कि उन को यीशु गुलील पहाड़ पर मिला, मरकुस कहता है खाना खाने के बाद दिखाई दिया, मत्ती कहता है कुछ ने संदेह किया-मगर मरकुस कहता है कि सब को मुलामत की क्योंकि उन्होंने जी उठने पर विश्वास नहीं किया था, मत्ती कहता है कि उन्हें पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर बपतिस्मा दो। और मरकुस कहता है कि विश्व में इन्जील की मुनादी करो यह तो हुआ। मगर हम पादरी साहिबान से बल पूर्वक कहेंगे कि एक नए बनने वाले ईसाई को ले आए ताकि अस्पताल में ले चलें और बीमारों पर हाथ रखा कर ईसाई होने की परीक्षा कर लें कि जो यीशु ने कहा है वह सत्य है या गप ही हांकी है। पादरी साहिबान अस्पताल खोल कर इतना धन क्यों खर्च कर रहे हैं और शासन का इतना रुपया खर्च होता देख कर भी क्यों मौन साधे बैठे हैं क्यों नहीं एक एक नया ईसाई वहां रख देते ताकि हाथ रख रख कर सब की बीमारी दूर करता जाए, वह तो केवल ईसाई होने मात्र से प्रभाव आयगा-मगर दूसरी जगह एक शर्त भी है कि जिन के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा उन में यह गुण होंगे-कहा-यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं-कि यदि ईमान रक्खो, और शक न करो तो न केवल वह करोगे जो इन्जीर के वृक्ष के साथ हुआ, किन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि तू उखड़ जा—और समुद्र में जा पड़ तो यह हो जाएगा। मत्ती २१/२१-२२। यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि यदि तुममें राई के दाने के बराबर ईमान होगा तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरक कर वहां

चला जा तो वह चला जायेगा और कोई बात तुम्हारे लिए अन होगीं न होगी। मत्ती १७/२०।

खुदावन्द ने कहा कि यदि तुम में राई के दाने के बरा-बर भी ईमान होता और तुम इस तूत के दरख्त से कहते कि जड़ से उखड़ कर समुद्र में लग जा, तो तुम्हारी मानता लुका १७/६। [आ]यह ठीक है कि यीशु इस समय हमारे पास नहीं—मगर उन की कही यह बाणी तो हमारे पास है यदि यह सच हो जाती है तो सब उनके चमत्कार भी सत्य मान लिए जा सकते हैं, अब पादरी महानुभावों को चाहिये, कि अपने उस्ताद की बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए किसी भी ऐसे पादरी को लाएं, भारत मेंन हो तो, अमरीका, जर्मन इंगलेण्ड आदि कहीं से भी लाए कहीं भी ना मिले तो इटली से तो मिल जायेगा। एक पादरी जिसके अन्दर राई भर ईमान हो उपरोक्त वक्तव्य को प्रमाणित कराइये—घाटे साफ करने के लिए भारतीय शासन बहुत व्यय कर रहा है। इसको इस भार से मुक्त कीजिए करोडों रुपये जो आप इसाई बनाने में खर्च करते हैं वह भी बच जाएं और एक ही पादरी के संकेत मात्र से भारत ही नहीं सारा विश्व ईसाई हो जाएगा और सब जगह आपका धर्म विश्व में फेल जाएगा

आदम तथा हव्वा को ईश्वर अवज्ञा का क्या दण्ड मिला था जो ईसाई होने पर निवृत हो जाता हैं

जब सांप के कहने पर आदम व हव्वा ने फल खा लिया तो यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा—कि तूने यह क्या किया, तो स्त्री ने कहा सर्प ने मुझे बहका दिया.......तब यहोवा पर-

मेश्वर ने सर्प से कहा, कि तूने यह जो किया है, इसलिए तू सब घरेलू पशुओं और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है—तू पेट के बल चला करेगा और केवल जीवन भर मिट्टी चरता रहेगा और मैं तेरे और स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इस स्त्री के वंश में वैर उत्पन्न करूंगा (यहोवा के पास वैर के सिवा और क्या था) वह तेरे सिर को कुचल डालेगा ओर तू उस की ऐडी को डसेगा। फिर स्त्री को उसने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होबे के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा······तेरी लालसा तेरे पति की और होगी। और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी······ और वर्जित वृक्ष के फल को खाया। इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू इस की उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा। और वह तेरे लिए काँटे और ऊंट कटारे उगाएगी, (कांटे और ऊट कटोरे कहा यह खुदा को पता ही सम्भव न होगा कि भूमि सेव, अंगूर, बादाम, पिस्ते, आम, अमरूद उगाएगी खुदा को कांटे ही नजर आऐ और तू खेत को उपज खायेगा और अन्त में मिट्टी हो जाएगा इत्यादि। उत्पत्ति बा-३-आ १.२ से १९

हम पूछते हैं कि ईसाई होने के पीछे जो अभिशाप आदम हव्वा और सांप को दिये, किस शाप से ईसाई बच जाता है ? वह तो सब बराबर है और यीशु के बलिदान ने कौन से शाप दूर कर दिये। यह बात याद रखनीं चाहिये कि यहोवा ने केवल यही शाप दिये, यह नहीं कहा कि तेरी सन्तान पाप करेगी और तेरी अवज्ञा उन में भी जाएगी यदि ईसाई ऐसा मानते हैं तो सबूत

पेश करें कि दूसरे मनुष्यों की अपेक्षा उन में क्या फरक है। कुछ भी हो लोगों को वहकाने के लिए यह फसावा अच्छा है।

यदि आदम ने फल खाया था जिस के लिए मौत आवश्यक थी तो क्यों न उस को जीवन के वृक्ष का फल खाने दिया और चमकती तलवारों का पहरा लगाकर उस से वञ्चित कर दिया। उत्पत्ति ३/२४। और मजे की बात यह है कि आदम के पाप को दूर करने के लिए अपने एकलौते को सलीब पर चढ़ाना पड़ा "चिरा कारे कुनद आकिल की बाज़ आयेद पशेमानीं" (ऐसा काम आदमी क्यों करे कि जिस से शरमिन्दगी उठानी पड़े)।

क्या यीशु अपनी इच्छा से सूली पर चढा ?

अब देखना यह है कि यदि यीशु का सूली पर लोगों के उपकार के लिये चढ़ना था तो उस को इससे अत्यन्त प्रसन्नता होनी चाहिये थी जैसे देश और धर्म पर बलिदान देने वाले हंस हंस कर फांसी के तख्ते पर चढ़ जाते हैं अपने गले कटा लेते हैं ऐसे महान पुरुषों की सूची अन गणित है जो हर धर्म और देश में हुए जिन्होंने हंसते हंसते अपने आप को धम व राष्ट्र की बलि वेदी पर चढ़ा दिया, मगर अब यीशु की हालत देखिये, यीशु की हालत—फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए और उसने अपने चेलों से कहा यहां बैठे रहो जब तक मैं प्रार्थना करूं और वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा, और उन से कहा, मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं, तुम यहां ठहरो और जागते रहो और वह थोडा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिर कर

प्रार्थना करने लगा,कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जावे, और कहा हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है, इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं पर जो तू चाहता है वही हो। मरकुस १४/३२ से ३७ मतीं में भी यही है कि तीन वार प्रार्थना की। मती २६/३६-४५ लूका २२/३६-४५।

समीक्षा—अब देखिये, यीशु तो इस सलीब को टालने के लिए विह्वल हो कर प्रार्थना कर रहा है,कि मैं किसी प्रकार बच जाऊं और चेले इसे बलिदान और कफारा कह रहे हैं, "मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त," आगे देखिए:—

मौत के समय की अवस्था

तीसरे पहर के निकट यीशु ने बडे शब्द से पुकार कर कहा-एली, एली लमा शबक्तनी, अर्थात हे मेरे परमेश्वर,हे मेरे परमेश्वर, तुने मुझे क्यों छोड़ दिया। मती २७/४६ और मरकुस १५/३३-३४।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि यीशू इस बलिदान के लिए तैय्यार न थे, और रो रो कर प्रार्थना करते रहे कि यह प्याला मुझ से टल जावे और मरते समय भी रो कर चिल्ला कर कहा कि हे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया इस अवस्था में कफारा का ढंढोरा मिथ्या प्रलाप है।

कफ़ारा के विरोध में

अब इस कफारा के विरोध में देखिये

जो जो पेड़ अच्छा फल नही लाता, वह काटा जाता है, और आग में डाला जाता है सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे, जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की। ओर तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला। और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किये। तब मैं उन से खुल कर कह दूंगा, कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना है, कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ। मत्ती ७/१९-२४।

यहोवा का द्वार यही है, उस में धर्म्मी प्रवेश करने पाएंगे। भजन संहिता ११८/२०। हें मेरे भाइयों यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है, पर वह कर्म न करता हो तो उस से क्या लाभ, क्या ऐसा विश्वास उसका कभी उद्धार कर सकता है। यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति-दिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उन से कहे कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो पर जो वस्तुए देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें ना दो तो क्या लाभ ? वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो वह अपने स्वभाव में मरा हुआ है। याकूब २/१४-१७। निदान जैसे देह आत्मा विना मरी हुई

है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है। याकूब २/२६। अब देखो एक मनुष्य ने पास आकर उस (यीशु) से कहा हे गुरु मैं कौनसा भला काम करूं कि अनन्त जीवन पाऊं उस (यीशु) ने उस स कहा............भला तो एक ही है पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है तो आज्ञाओं को माना कर, (हत्या, व्यभिचार, चोरी आदि न करो)। मत्ति १६/१६-१८।

वरन अन्याय करते और हानि पहुँचाते हो और वह भी भाईयों को क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। १—कुरिन्थियों ६/८,६।

समीक्षा:—अब देखें कि हम ने ईसाई कफारा का सिद्धांत पहले लिखा जिस का सारांश यह था कि यीशु के बलिदान से यीशु पर विश्वास लाने वालों के लिए मुक्ति का साधन है, मगर उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि विश्वास बिना कर्म के मुर्दा है। इन दोनों प्रकार के विरोधात्मक प्रमाणों में कौन सच्चा और कौन झुठा ? यह तो पादरी साहिबान ही बतायेंगे। इन दोनों पक्षों में यदि कर्म पक्ष को माना जाए तो कफारा मिथ्या ठहरता है, और कफारा को माना जाए तो कर्मवाद झूठा ठहरता है। कफारा को न मानने से ईसाई मत का किला ही चकना चूर हो जाता है। और ईसाई मत अस्त व्यस्त हो जायेगा।

इस लिए यह परस्पर विरोधी सिद्धांत अनिश्चित और अनिर्णीत ही मानना पडेगा "दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम।"

प्रकरण आठवां

अब आगे परस्पर विरोधी बातें लिखी जायेंगी।

ईसाई धर्म बनी इस्राऐल के लिए है।

चेलों को यीशु ने उत्तर दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़, मैं किसी के पास नहीं भेजा गया। मत्ती १५/२४।

लड़कों की रोटी कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं। मत्ती १५/२६ (क्या बनी इस्राएल के सिवा सब........ हैं)

इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा दे कर भेजा, कि अन्य जातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई भेड़ों के के पास जाना। मत्ती १०/५-६।

इस के प्रतिकूल।

यीशु ने उन के पास आ कर कहा स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इस लिए तुम जा कर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ। मत्ती २८/१८-१६।

और उस (यीशु) ने उन से (चेलों से) कहा तुम सारे जगत में जा कर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, जो विश्वास करे—और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास क करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। मरकुस १६/१५-१६।

ईमान लाने वालों में वह चमत्कार होंगे दो प्रकार के विचार हैं !

वह मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषाएं बोलेंगे, सांपो को उठालेंगे और यदि वह नाशक वस्तु भी पीं जाएं तो भी उन की कुछ हानि न होगी, वे बिमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे। मरकुस १६/१७-१८।

अजीब विचार

यीशु ने कहा—मैं बाप में हुं और बाप मुझ में है यह बातें जो मैं तुम से कहता हुं अपनी तरफ से नहीं कहता बल्कि बाप मुझ में रह कर अपने काम करता है (जब आप नहीं थे तो किस में रह कर काम करता था) मेरा विश्वास करो मैं बाप में हुं और बाप मुझ में है [खूब मही तो मुहात का जुट बना] नहीं तो मेरे कामों ही के सबब मेरा विश्वास करो, मैं तुम से सत्य कहता हूं कि जो मुझ पर ईमान रखता है वह काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, बल्कि उन से भी बढ़ कर करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जाता हूं और जो कुछ तुम मेरे नाम से चाहोगे मैं वही करुंगा। ताकि बाप, बेटे में जलाल पायें। यूहन्ना-उर्दू १४/१० से १४।

समीक्षा:—वाह उस्ताद खूब चकमा दिया। आप तो खुदा के दहने जा बैठे मगर अब यह आप के चले चमत्कार न दिखाने पर प्रश्न करने वालों की ओर से घबरा कर शरमिन्दा हो रहे हैं।

यीशु ने कहा यदि मेरे विषय में कोई कहे तो प्रतीत न करना, क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखायेंगें, कि यदि हो सके, तो चुने हुओं को भी भरमा दें। मत्ती २४/२४। और देखो मरकुस १३/२२। [यह सिलसिला तो आप ने ही शुरु किया है क्षमा करें]

जादूगर भी चमत्कार दिखा सकते हैं

हारून ने अपनी लाठी फिरौन के आगे डाली तब वह अजगर बन गया—निगमंन ७/१० । इसी प्रकार फिरौन के जादूगरों ने भी ऐसा ही किया।

तब फिरौन ने पण्डितों और टोने करने वालों को बुलाया और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया। उन्होंने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया और वह भी अजगर बन गए। निगर्मन ७/११-१२।

(तब मूसा और हारून ने) लाठी को उठाकर फिरौन और उसके कर्मचारियों के देखते नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लोहू बन गया,......और सब मछलियां मर गईं....तब मिश्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही किया। निगमंन ७/२१।

समीक्षाः—इस से सिद्ध हुआ कि यीशु के कहने के अनुसार झूठे भी चमत्कार दिखा सकते हैं और उसका सबूत भी मूसा की पुस्तक निगमंन मौजूद है।

जैन मत भी ऐसा ही मानता है

गोशाला श्री महावीरजी का एक शिष्य था, जो पीछे विटल होकर श्री महावीरजी स्वामी के मुकाबले में गुरू बन बैठा और उसने अपने अनेक शिष्य बनाए एक बार वह गोशाला श्री महावीर स्वामी जी के पास क्रोधित होकर आया, और उन के सामने गोशाला ने उनके दो चेलों (१) सर्व्रानु भूति और सुनक्षम पर तेजोलशिया का मन्त्र चलाकर भस्म कर दिया। श्री महावीर स्वामी का जीवन श्री चौथमल जी लिखित पृष्ठ ४७४।

समीक्षा—चमत्कारों को मानने वालों ने इसी प्रकार के ढकौसले घड़ रक्खे हैं ताकि वह लोगों को मिथ्या विश्वासों के जाल में फ़ंसा कर अपना ही बन्दी बना रक्खें, उपरोक्त प्रमाणों से चमत्कारों की कलई भली प्रकार से खुल जाती है—क्योंकि जब जादूगर भी वैसे ही चमत्कार दिखा सकते हैं—और पैगम्बर भी वैसे ही तो फिर चमत्कारों से लिहाज से किसी को पैगम्बर मानना सर्वथा व्यर्थ ही है।

नौवां प्रकरण

अन्ध विश्वास

अन्ध विश्वास ही मिथ्या मत मतान्तों का सहारा और आधार है-ऐसे मतों के अनुयाइयों ने अपनी बुद्धि पर तालालगा रक्खा है। यह अपनी बुद्धि से काम न लेकर दूसरे जिसे अपना

अगुवा मान लेते हैं उसी के संकेतों पर चलते हैं। यह न तो स्वयं किसी बात को सोचते न दूसरों को सोचने का अवसर देते हैं। बल्कि सोचने वालों और यथार्थ बात कहने वालों को मौत के घाट उतार देते हैं ऐसी ही घटनाओं से संसार का इतिहास भरा पड़ा है। सत्यता के पुजारियों को अग्नि में जलाया गया, तलवार से मौत के घाट उतारा गया।

यह अंध विश्वास को फैलाने वाले लोग, सृष्ठि कर्ता, सृष्टि नियम और बुद्धि के परम शत्रु हैं। इसी कारण कितना भी प्रत्यक्ष ज्ञान और सत्य उन्हें क्यों न समझाया जावे वह टस से मस नहीं होते। उल्टा समझाने वाले को नास्तिक कहते है।

किसी ने कहा कि हमारे आका के संकेत मात्र से ही चांद दो टुकड़े होकर आस्तीनों से निकल गया, तो नारों से आसमान सिर पर उठा लिया। किसी ने कहा कि हमारे पीर ने १२ वर्ष के पश्चात एक बारात का डूबा हुआ बड़ा सहीह सलामत निकाल लिया; तो हर मास उसकी मन्नत मानने लग गये। किसी ने कहा कि एक लाठी सब लाठियों को निगल गई और लकड़ी सांप बन गई, बस यह सुनकर चमत्कारों के दास फूल कर कुप्पा हो गये। कहां तक लिखा जावे इन अंध विश्वास के गुलामों ने मनुष्यों की अकल पर तोला लगाकर अंधेर डाल रक्खा है। इसी प्रकार के अंध विश्वासों का संग्रह यह इंजीलें हैं, जैसा कि हम आगे लिखेगें।

दुःख तो इस बात का है-कि इस रौशनी के जमाने में भी अनेक पठित मनुष्य इन मिथ्या विश्वासों के शिकार बने

बैठे हैं और भोले भाले लोगों को फांस रहे हैं यीशु के चमत्कार उस के चेलों ने लिखे है वह निम्न प्रकार के हैं:—

(१) मुर्दों को जीवित करना (२) अंधो को आंखे देना (३) कोढ़ियों को अच्छा करना (४) जिन्नों, भूतों, बद रुहों को निकालना (५) मछलियों को जालों में अधिक फसाना(६)पानी मे शराब बना देना (७) थोडे अन्न से बहुतों को खिलाना (८) कब्र से मरने के पीछे जी कर खुदा के दहने हाथ जा बैठना इत्यादि ।

यह चमत्कार केवल यीशु के साथ ही नहीं है बल्कि प्रत्येक मत वादी ने ऐसे चमत्कार अपने अपने पथ प्रदर्शकों के लिये घड़ रखे हैं।

मसीह के चमत्कारों के विषय में चन्द्र नगर के प्रसिद्ध श्री जेकॉलियट चीफ जस्टिस अपनी पुस्तक "बाईबल इन इण्डिया" मे लिखते है–जिस का हिन्दी अनुवाद श्री संतराम जी बी. ए. ने भारत में बाइबिल के नाम से किया है, लिखते हैं—"क्या कोई गंभीर विचारों वाला मनुष्य यह मान सकता है, कि यदि ईसा ने यहूदियों के सामने वे सारे चमत्कार दिखलाए होते जो बाइबिल के लेखक उस के साथ ठहराते है, तो वह उस का जय जय कार न करते।" भारत में बाईबल भाग २-पृष्ठ ४११।

हम अब उस युग में नहीं हैं। जब लोकोत्तर बातें भी सृष्टि नियम के अनुकूल समझी जाती थी और बे समझ लोग उनके आगे सिर झुका देते थे। भला अब कोई मनुष्य हमारे

अंदर आवे, जो अपने जीवन के तीन वर्षों में चमत्कारों पर चमत्कार दिखलाता रहा हो, पानी की मदिरा बना देता हो, पांच मछलियों और दो-तीन रोटियों के साथ दस, पन्द्रह, बीस सहस्र व्यक्तियों की क्षुधा--निवृत्ति कर देता हो, मृतकों को जिलाता हो, बहरों को कान और अंधों को आंखे देता हो, इत्यादि, इत्यादि । फिर देखते हैं कि उस को बदनाम करने की किस फरीसी और किस याजक में शक्ति है। भारत में बाईबल पृष्ठ—४११ ।

"महान ईसाई तत्व वेता का जीवन चरित; जैसा कि उस के इतिहास लेखकों और उस के प्रेरितों ने हम तक पहुँचाया है; संदिग्ध प्रमाणों व कूट रचनाओं का एक जाल है। जो लोक-कल्पना को प्रभावित करने और अपने नवीन धर्म को दृढ़ता पूर्वक प्रतिष्टित करने के लिए बनाया गया है ।" भारत में बाईबल पृष्ठ ३६५।

"जैसा कि हम पहले कह चुके हैं इस का समाधान यह है कि यह सब व्यापार सदिग्ध प्रमाण हैं, ईसा इस जगत में से प्रायः अलग-अलग ही निकल गया, संसार ने उस पर बहुत थोड़ा ध्यान दिया, पीछे से उसके शिष्यों ने पूर्व से आई हुई कुछ इबरानी भविष्यद्वाणीयों को अपना कर और कृष्ण के आचरण और उसके जीवन की थोड़ी कम अलौकिक और अधिक संभाव्य विशेषताओं को उधार लेकर उसे एक पौराणिक नायक बना दिया,"—भारत में बाईबल भाग २—पृष्ठ ४१० ।

समीक्षाः—यह एक ईसाई लेखिक के विचार हैं आम लोग इस बात में उलझे पड़े दृष्टि गोचर होते हैं कि खुदा जो

चाहे सो कर दे। इस विषय में सर सय्यद अहमद महोदय ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दलील दी है।

आप ने लिखा है कि "सृष्टि नियम के विरूद्ध बातों के लिए यह कह देना कि खुदा की कुदरत है उसने ऐसा ही कर दिया होगा मुर्ख और बुद्धि हीन अपितु मरफू--उल-कलम (अदूर दर्शी लेखकों) लोगों का काम है।" तफसीर कुरान जिलद-६पृ. १२२। "यह कह देना कि खुदा ने जिस फितरत (स्वभाव) पर जिस को बनाया है उस को परिवर्तन करने से खुदा की असमर्थता प्रमाणित होती है। जोहला (मूर्खो) का कलाम है। क्योंकि किसी शक्तिमान व स्वतन्त्र का अपनी बनाई हुई फितरत या कानूने कुदरत पर अटल रहना उस की कुदरत की दलील है, न कि उस की असमर्थता की दलील है। तफसीरे-कुरान जि-६ पृष्ठ १४१।

समीक्षाः—उन लोगों के लिए, जो प्रभु को थाली का बेन्गन मानते हैं कि जिधर थाली हिली खुदा भी उधर लुढ़क गया बकौल।

रसासत में कभी दाखिल रियासत में कभी शामिल,
हमारे पेशवा साहिब अजब थाली के बेन्गन हैं।

ईश्वर को सृष्टि विरुद्ध कार्यों का करने वाला मानना स्वाभाविक ही हैं, परन्तु परमात्मा का सृष्टि नियम दृढ़ और अपरिवर्तन शील है। उस का बदलना असम्भव है, अतः जिन लोगों ने खिलाफे कानून कुदरत बातें चमत्कारों के रुप में लिख कर लोगों को अपने जाल में फसाने का गोरख धन्धा रचा है। उन्होंने सृष्टि के लोगों को पथ भ्रष्ठ किया है। ऐसे

महानुभावों से सावधान रहना और सर्व साधारण को उन से सावधान रखना सत्य अनुगामी सज्जन पुरुषों का प्रथम कर्तव्य है।

अब यीशु के चमत्कार और उनके शिष्यों के पेचोंताप देखिये।

हम ने पहले मसीह के ८ प्रकार के प्रसिद्ध चमत्कार लिखे हैं। यह केवल यीशु के साथ ही विशेष नहीं अपितु जितने पैगम्बर (देवदूत) हुए उन के चेलों ने सब के साथ ऐसे चमत्कार ही जोड़ दिए हैं, न केवल पैगम्बरों के साथ बल्कि पीरों, फकीरों, गुरुओं आदि के लिए भी ऐसे ही चमत्कार प्रसिद्ध हैं। एक साधारण सन्त की एक पुस्तक हमें अभी मिली है जिस का नाम है "भक्त श्री जला राम" इस पुस्तक के लेखक ठाकुर साहिब सरवन महेन्द्रसिंहजी है। यह पुस्तक दिलीप प्रिंटिंग प्रेस सैलाना में छपी हैं। (एवं सज्जन प्रिंटिंग प्रेस रतलाम में छपी है) उसमें जो चमत्कार उन के लिखे हैं। वह मसीह से कम नहीं, अपितु उस से भी बढ़ कर हैं। जैसे अनेक लोगों के रोगों को दूर किया, १५०+२५०=४०० सैनिक जो और राजा के साथ थे, उनको लेकर भक्त जलाराम के पास आया और भक्त ने सब को उतना ही प्रसाद दिया मगर बर्तन वैसे के वैसे ही भरे थे। गोपाल जोशी का १५ वर्ष का लकवा दूर किया, खोखरी की एक अंधी स्त्री को आंखे दी, सिपाहियों की झोली को लकड़ी लगा कर मरे हुए पक्षी जीवित कर दिए वह फरफरा कर उड़ गए। सम्वत् १९१७ में जोडिया ग्राम की नदी का प्रवाह बदल दिया।

जोड़िया बन्दरगाह पर सेठ अमरचन्द का तूफान में पानी से भरता हुआ और डूबता हुआ जहाज केवल मन्नत मानने से ही बच गया, और जहाज में छेद की जगह जलाराम की आंगी थी।

श्यामजी पटेल के लड़के को नाग ने डस लिया उसने लड़का ला कर जलाराम जी के आगे डाल दिया; भक्त का चिमटा नाग के डंक पर घिसाने से सांप का विष उत्तर कर लड़का राजी हो गया। काला के पुत्र गोबिंदा को श्मशान घाट ले जाते समय रास्ते में कफन खोल कर जीवित्त कर दिया।

पटेल की खाली कोठियां लकड़ी के संकेत मात्र से, अनाज से भरदीं, वर्ष भर खाते रहे, और साधु सन्तों को खिलाते रहे अनाज खतम न हुआ।

जलाराम ने मरने के बाद अपनी बहन वा कथरा को ठण्डा पानी पिलाया जब वह गांव में आए तो जलाराम मर कर जल चुका था।

जलाराम मरने के पश्चात् विमान पर चढ़ स्वर्ग गए।

सम्वत १६३४ मास माघ कृष्ण पक्ष दसवीं रविवार को टीलिया बनिया मार्ग में हार करके आता हुआ जलाराम को रास्ते में मिला। जलाराम सुन्दर रथ पर बैठा था। जलाराम ने टीलिया को कहा–कि तू कहता था, स्वर्ग में जाओगे तो मुझे भी साथ ले चलना, चल मैं जा रहा हुं, मगर टीलिया न माना और भक्त चला गया। गांव में आया तो लोगों को रोते पीटते देखा कि भक्त जलाराम मर गया है।

पुस्तक के लेखक ने लिखा है कि भक्त जलारामजी के ऐसे अनेक चमत्कार हैं जो दूसरे संस्करण में लिखे जाएंगे इस पुस्तक में भी बहुत चमत्कार हैं जो पुस्तक बढ़ जाने के भय से नहीं लिखा यह भक्त जलाराम जी के चमत्कार इस लिऐ लिखे गए कि आप ईसा के चमत्कारों से मिला लें जो लोग चमत्कारों को मानते हैं उनको जलाराम के चमत्कार ईसा से भी बड़े नजर आएंगे यह तो आजकल की चर्चा है हमारा कहना है कि ऐसे कई चमत्कार चेले चांटे मरने के पीछे बना लेते हैं।

अब यीशु के चमत्कारों को देखिये असलिय्यत।

कोढ़ी को अच्छा करने में विरोध

और जब वह पहाड़ से उतरा·······तब एक कोढ़ी ने आ कर उसे सजिदा किया·······यीशु ने हाथ को छू कर कोढ़ हटा दिया, मत्ती ८/१-४।

और वह सारे गलील में उनकीं सभाओं में जा जा कर प्रचार करता रहा और दुष्टात्माओं को निकालता रहा और एक कोढ़ी ने आकर घुटने टेक·······विनती की और अच्छा किया, मरकुस १/३९-४०-४१। लूका में है। जब वह किसी नगर में था, तो देखो कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य यीशु को देख कर मुंह के बल गिर पड़ा·······उसे अच्छा किया। लूका ५/१२-१३ यूहन्ना में इस का जिकर नहीं। अब देखिये—

मत्ती में है कि यीशु पहाड़ से उतरा तो कोढ़ी मिला और मरकुस में है कि वह गुलील से प्रचार करता आ रहा था तो कोढ़ी मिला और लूका में है कि जब वह किसी नगर में था तो कोढ़ी मिला और यूहन्ना मौन है, ईश्वरी ज्ञान में इतना विरोध। कोई कुछ कहता है कोई कुछ।

सूबेदार का किस्सा

और जब वह कफर नहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उससे विनती की, कि हे प्रभु—मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुःखी पड़ा है उसने [यीशु] उससे कहा कि मैं आकर उसे चंगा करुंगा। सूबेदार ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आये पर केवल मुख से कह दे, तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ......और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया, मत्ती ८/५ से १३। मरकुस और यूहन्ना को यह किस्सा नहीं मिला लूका कहता है......कफर नहूम में आया और किसी सूबेदार का एक दास जो उस का प्रिय था, बीमारी से मरने पर था, उस ने यीशु की चर्चा सुन कर यहुदियों के कई पुरनियों को उससे यह विनती करने को उस के पास भेजा कि आकर मेरे दास को चंगा कर उनकी विनती सुन......यीशु उनके साथ साथ चला, पर जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु! दुःख

न उठा। क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के तले आवे इसी कारण मैं अपने आप को इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊं..........यीशु ने उसके विश्वास की तारीफ की और भेजे हुए लोगों ने घर लौट कर उस दास को चंगा पाया लूका ७/१ से १०।

समीक्षाः—पाठक गण! अब आप ही इन ईश्वरीय पुस्तकों की विरोधात्मक अटकलों को देखिये क्यों-हम अगर अर्ज करेंगे तो शिकायत होगी"। देखें—

मत्ती कहता है कि सूबेदार स्वयं उस के पास गया और लूका में है कि यहुदियों के पुरनियों को उसके पास भेजा स्वयं नहीं गया, मत्ती में है कि सूबेदार ने स्वयं कहा कि मेरी छत आपके आने के योग्य नहीं,मगर लूका का कहना है कि यीशु को आते देख कर सूबेदार ने अपने मित्रों को भेजा कि उस को घर आने से रोकें और कहला भेजा मैं इस योग्य नहीं था कि तेरे पास आऊं यह तो दो चेलों का हाल है कि भांत भांत की बोली बोल रहे हैं। मरकुस और यूहन्ना मौन साधे बैठे है क्योंकि सम्भवतः वह इस ज्ञान के अधिकारी न थे। अतः इस से वंचित रखे गये। (जरा सी बात पर इतना विरोध— आखिर खुदा की किताब है क्या हुआ)।

पतरस की सास

'और यीशु ने पतरस के घर आकर उसकी सास को ज्वर में पड़ी देखा, उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर

उतर गया, मत्ती ८/१४-१५।

"और वह तुरन्त आराधनालय से निकल कर याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और इन्द्रियास के घर आया, और शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, और उन्होंने उसके विषय में उस से कहा, तब उसने पास आकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया और ज्वर उतर गया" मरकुस १/२६ ३१ "वह शमौन के घर गया, और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा था, और उन्होंने उसके लिये उन से बिनती की उसने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डाँटा और वह उतर गया", लूका ४/३८-३६।

समीक्षा-मरकुस मत्ती के अनुसार यीशु शमौन के घर गया, मगर यूहन्ना ने इस का जिकर तक नहीं किया। अब देखिये मत्ती में याकूब और यूहन्ना का यीशु के साथ शमौन के घर जाने का जिकर नहीं, न लूका में है और मत्ती में किसी की बिनती का भी जिकर नहीं, जैसा कि मरकुस और लूका में है मत्ती में केवल छुने मात्र से ज्वर उतर गया और मरकुस में है कि हाथ पकड़ कर उठाया तो ज्वर उतरा और लूका में न छूआ न हाथ पकड़ा केवल डांटने मात्र से ज्वर उतर गया। यूहन्ना मौन है। अब देख लीजिए तीनों के कथनों में कितना अंतर है। आप कहेंगे कि इतनी बाल की खाल क्यों उतारी जा रही है। इस पर हमारा कहना यह है कि जिन पुस्तकों को ईश्वरीय ज्ञान कहा जाता है उनमें एक मात्रा का भी अंतर नहीं होना चाहिये।

सुअरों के बड़े झुण्ड को नदी में डुबाना

"जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुँचा तो दो

मनुष्य जिनमें दुष्टात्माएं थी, कबरों से निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से नहीं जा सकता था, और देखो उन्होंने चिल्ला कर कहा, हे परमेश्वर के पुत्र! हमारा तुझ से क्या काम! (खूब गवाही है) क्या तू समय से पहिले हमें दुःख देने यहां आया है! उससे कुछ दूर बहुत से सुअरों को एक झुण्ड चर रहा था, दुष्टात्माओं ने यह कह कर उससे बिनती की, यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे, उस ने उन से कहा, जाओ वे निकल कर सूअरों में बैठ गए और देखो सारा झुण्ड कड़ाड़े परसे झपट कर पानी में जा पड़ा, और डूब मरा। (विज्ञान वेत्ता ईसाईयों को यह गौर से पढ़ना चाहिए,) चरवाहों ने नगर में खबर दी......नगर के लोगों ने......विनती की कि हमारे सिवानों [सरहद्दों], से निकल जा" मत्ती ८/२८-३४ यद्यपि मरकुस का बयान जरा लम्बा है मगर बड़ा दिलचस्प है, इस कारण वह पूरा ही नींचे लिखता हूं:—

"और वे झील के पार गिरासीनियों के देश में पहुंचा और जब वह नाव परसे उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कबरों से निकल कर उसे मिला (यहाँ एक ही रूह गया मत्ती में दो थे) वह कबरों में रहा करता था, और कोई उसे सांकलों से भी बांध न सकता था, क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों से बांधा गया था, पर उसने सांकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिये थे, और कोई उसे वश में न कर सकता था, वह लगातार रात-दिन कबरों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने को पत्थरों से घायल करता था। वह यीशु

को दूर ही से देख कर दौड़ा [आ बैल मुझे मार] और उस से प्रणाम किया, और ऊंचे शब्द से चिल्ला कर कहा, हे यीशु ! परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र ! [दुष्टात्मा तो अंतर्यामी है] मुझे तुझ से क्या काम ! मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे, क्योंकि उस ने कहा था, कि अशुद्ध आत्मा इस मनुष्य से निकल जा, उसने [यीशू ने] उससे पुछा कि तेरा क्या नाम है उसने कहा मेरा नाम सेना है। क्योंकि हम बहुत हैं (सेना का अर्थ ६००७ सिपाहियो की पल्टन) और उसने बिनती की कि हमें इस देश से बाहर न भेज [देश के बड़े प्यारे हैं] वहां पहाड़ पर सुअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, और उन्होंने उस से बिनती करके कहा कि हमें उन सुअरों में भेज दे, कि हम उन के भीतर जाएं, सो उसने उन्हें आज्ञा दी, और अशुद्ध आत्मा निकल कर सूअरों में पैठ गई, और झुण्ड जो कोई दो हजार का था कड़ाड़े पर से झपट कर झील में जा पड़ा और डूब मरा,............नगर वाले सूचना होने पर आए और बिनती की कि हमारे सिवानों (सरहद्दो) से चला जा" मरकुस ५/१ से १८ तक।

समीक्षा-(वाह उनको खूब तमाशा दिखाया) लूका में वही है जो मरकुस में है मगर इतना और है तो नगर का एक मनुष्य उसे मिला और २००० की सूअरों की गिनती नहीं है, लूका ८/२६-३७।

समीक्षा—इस चमत्कार ने तो सारे चमत्कारों की कलई खोल दी एक आदमी में २००० बद रूहें और एक आदमी की बद रूहों

को और जगह भी निकाला जा सकता था, गरीबों का २००० सूअर नाहक मार दिया और मत्ती में दो दुष्टात्मा वाले मनुष्य मिले और मरकुस और लूका में एक ही है। यूहन्ना इस पर सर्वथा मौन है। ऐसे बनावटी असम्भव चमत्कार घड़ कर लोगों को गुमराह किया है ईसाई भाईयों को इस पर विचार करके इन मिथ्या विश्वासों को छोड़ देना चाहिए--।

झोलें के मारे के बारे में विभिन्न बयान

और देखो कई लोग एक झोले के मारे को खाट पर रख कर उस के (यीशु के) पास लाए यीशु ने उन का विश्वास देख कर उस झोले के मारे हुए से कहा ! हे पुत्र ! ढारस बांध तेरे पांप क्षमा हुए। इस से स्पष्ट है कि बीमारी पाप का फल है। ....मनुष्य को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। 'मत्ती ९/२' झोले के मारे से कहा अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा। मती ६/६। फिर मरकुस में है।

और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवा कर उस के पास लाए। परन्तु जब वे भीड के कारण उस के निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उसे छत को जिस के नीचे वह (यीशु) था खोल दिया, और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया यीशु ने उस को देख कर कहा कि हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुये। मरकुस २/२ से ५।

और लूका ५/१८-२० में भी जो ऊपर मरकुस में है केवल पुत्र की जगह मनुष्य है यूहन्ना मौन है। अब देखिये मत्ती में है कि उस को वैसे ही खाट पर डाल कर यीशु के पास ले गए मगर मरकुस और लूका में है कि छत फाड़ कर नीचे लटकाया, क्या यह इलहामी किताबों का........है या कुछ और।

मैं ईसाई पादरियों को कहूंगा कि आप अपने भाई जैका-लियट चीफ जस्टिस के विचार सुनो।

चमत्कारों के विषय में मिस्टर जैंकालियट चीफ जस्टिस चन्द्रगढ़ अत्यन्त प्रभाव-शाली शब्दों में लिखते हैं—

आओ हम इन सब चमत्कारों और आश्चर्य कार्यों को तिलांजलि दे डालें। जो मनुष्य-समाज के अंधकार समय में ही बढ़ और फूल सकते हैं, जब कि लोग स्वेच्छा चारिता द्वारा हतवीर्य और पराजित हो कर अपनी आत्मा और उस अमर-ज्योति को छोड़ जो स्वयं परमेश्वर ने जो हमारे पास युक्त की है, अधिष्ठात्रों की अन्यत्र तलाश करते हैं। सभ्यता अर्थात् स्वतन्त्रता की प्रगति उन सब बातों की समाप्ति कर देती है। जो विचार, परीक्षा और दिन के प्रकाश को सहन नहीं कर सकती। भारत में बाईबिल हिन्दी अनुवाद द्वितीय भाग दूसरा अध्याय पृ–४/६।

यूनुस नबी का निशान

इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, हे गुरु तुझ से हम एक चिन्ह देखना चाहते हैं। उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढते हैं, परंतु यूनुस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कर और कोई चिन्ह उन को न दिया जाएगा, यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा। मती १२/३८-३९-४०। मती १६/१-४ और मरकुस ८/११-१३। मगर मरकुस में न यूनुस का जिकर है न तीन दिन जमीन में रहने का और लूका में व्यभिचारी शब्द नहीं है न तीन दिन का ही उल्लेख है। लूका ११/२९-३० यूहन्ना इस पर भी मौन है।

मैं धर्मियों को नहीं पापियों को बुलाने आया हूँ

उस ने (यीशु) ने यह सुन कर उन से कहा वैद्य भले चंगो को नहीं, परन्तु बीमारों को अवश्य है, सो तुम जा कर इस का अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परंतु दया चाहता हूँ, क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ। मत्ती ९/१२-१३। यही बात मरकुस २/१७ और लूका ५/३१-३२ में भी है कि मैं पापियों के लिए आया हूँ, यहां तो बड़े दया भाव से कहा पापिओं के लिए आया हूँ, मगर आगे देखिये :—

इस के विरोध में

और चेलों ने पास आ कर उन से कहा, किन्तु उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है ! उस ने (यीशु) ने उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उन को नहीं, । क्योकि जिस के पास है, उसे दिया जायगा और उस के पास बहुत हो जायगा, पर जिसके पास कुछ नहीं है, उस से जो कुछ उस के पास है वह भी ले लिया जायगा, मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिए बातें करता हूं कि वे देखते हुए नही देखते और सुनते हुए नहीं सुनते, और नही समझते,..................क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है..................कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें,और कानों से सुने और मन से समझें और फिर जाएं और मैं उन्हें चंगा करूं । मती १३/१० से १६ ।

उर्दू की मत्ती में अनुवाद किया वह और भी स्पष्ट है । कही ऐसा न हो कि आखों से मालूम करे और कानों से सुने और दिल से समझें और रजु लाए अर्थात सत्य को ग्रहण करें । और मैं इन्हें शफ़ा बख्शूं । अर्थात सत्यवादी बनाऊं मत्ती १३/१५ ।

समीक्षा--अर्थात यीशु को यह भय था कि यदि मैं दृष्ठान्तों में बातें ना करूंगा तो सीधी बात करने से कदाचित वह समझें और सत्य की ओर फिरें और वह मेरी शफा के अधिकारी बन जाएं । वह शिक्षा पाकर इस्र को

न जाने इसलिए दृष्टान्तों में बातें करता हूं। मरकुस में भी यही है जो ऊपर है (अंत ये है) कि ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किये जावें, मरकुस ४/१०,११,१२। आगे यूहन्ना कहता है, जो और भी स्पष्ट है।

क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहा है कि उस ने उन की आँखे अंधी,और उनका मन कठोर किया है,कहीं ऐसा न हो,कि वे आंखों से देखें और मन से समझें और फिरें (सत्य की ओर) और मैं उन्हें चँगा करूं। यूहन्ना १२/४०। लूका ने और भी स्पष्ट कर दिया,पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है।इस लिए कि वह देखते हुए भी न देखें और सुनते हुए भी न समझे लूका ८/१०। फिर और कहा,"दृष्टांत यह है कि बीज तो परमेश्वर का वचन है मार्ग के किनारे के वे हैं जिन्हों ने सुना, तब शैतान आकर उनके मन से वचन उठाकर ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास कर के उद्धार पाऐं।" लूका ८-१०-११—१२।

समीक्षा........वचन उठा कर ले जाता है और लूका के अनुसार संकेतों में यीशु इस लिए बातें करता है कि वह समझ कर उद्धार पाने के अधिकारी न बन सकें,परिणाम तो दोनों का एक है। एक वचन ले गया और दूसरे से वचन को समझने की योग्यता ही खतम कर दी वकील कवि :-

आप ही खिलवत में काटें अपने भाई का गला।
आप ही अहबाब में फिर बैठ कर मातम करें ॥

(आ)अब देखिये एक तरफ तो यह कहते हैं कि मैं धर्मियों के लिए नहीं पापियों के लिये आया हूँ। वेद्य बीमारों के लिए है दूसरी तरफ कहते हैं कि जिनके पास है(अर्थात धर्मऔर तंदरुस्ती) उनको और भो दिया जायगा और जिनके पास/कम है (अर्थात जिनमें पाप का अंश अधिक है नेकी कम है) उनसे वह नेकी भी ले लो जायगी। उनको आंखों से देखने की शक्ति और मन को कठोर कर के समझने को ताकत छीन ली जायेगी,ऐसा न हो कि कहीं वह सत्य की ओर फिर जावे और शफ़ा अर्थात नजात के अधिकारी हों जावें। (क्या ईसाई धर्म यही है कि गरीब से धन छीन लिया जाये, और धनाढ्यों को और देकर उसको और भी दौलत मन्द कर दिया जावे ?)

कोई मनुष्य धर्मी नहीं

'फिर मनुष्य ईश्वर को दृष्टि में क्योंकर धर्मी ठैर सकता है और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है, वह क्योंकर निर्मल हो सकता है अय्यूब' २५/४। (स्त्री से उत्पन्न होना अभिशाप है !)

समीक्षा:-तो फिर क्या के चवे, जुवें,मच्छर खटमल आदि जो स्त्री के पेट से पैदा नहीं होते वह शुद्ध है ? [स्त्री का मूल्य देख लीजिए) ।

"मनुष्य है क्या, जो निष्कलंक हो, और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो सके। अय्यूब" १५/१४।

"क्योंकि कोई प्राणी भी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता,भजन संहिता" १४३/२। रोमियों में है।

"आदम के सबब से गुनाह और मौत का फैलना. पस जिस तरह एक आदमी के सबब से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह के सबब मौत आई··· ······और आदम से ले कर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की" रोमियों ५/१२-१४। आगे जबूर के हवाले १२-१-३ और ५३-३ के अनुसार लिखा है

यदि हम कहें कि हम ने गुनाह नहीं किया तो उसे झूटा ठहराते हैं। क्यों उस बेटे यीशु का खून हमें तमाम गुनाहों से पाक़ करता है" यूहन्ना का पहला खत १/१० व १/८।

समीक्षा:-- अच्छा आप का बेटा सच्चा रह जावे इसलिए सब दुनिया को झूठा मान लेना चाहिये।

"राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।"

अब उसके प्रतिकुल सत्यवादी भी है

जब कभी ईसाईयों से शास्त्रार्थ होता है तो आदम से गुनाह आया तो कहते है कि कोई भी रास्त बाज हो नहीं सकता वह ध्यान से पढ़ें—जकरिया नाम का एक याजक था, और उस की पत्नी................अलीशिवा थी, और वह दोनों परमेश्वर के सामने धर्म्मी (रास्त बाज) थे; और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोश चलने वाले थे," लूका १/५-६।

"स्वर्ग दूत ने जकरियाह से कहा.......तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा.......नाम यूहन्ना रखना ....वह प्रभू के समान

महान होगा..... वह दाख रस नहीं पियेगा और अपनी माता के गर्भ से ही पवित्रात्मा से परि-पूर्ण हो जायेगा" लूका १।१४।१५ (अभी तो कह रहे थे कि जो स्त्री से पैदा हुआ वह नेक कैसे है)

"उस देश में अय्यूब नाम का एक पुरुष था, जो खरा और सीधा था, और परमेश्वर का भय मानता था, और बुराई से परे रहता था," अय्यूब १२/१३ "यहोवा ने नूह से कहा ...मैं ने इस समय के लोगों में से केवल तुम ही को अपनी दृष्टि में धर्मी देखा है।' उत्पति ७/१। "मरियम का पति यूसूफ रास्त बाज था" (धर्मी था) मत्ति १/१६।

"और देखो-युसुफ नाम एक मनुष्य मशीर था, जो नेक और रास्त बाज धर्मी था" लूका २३/५०-५१। अय्युब को फिर सादिक कामिल २/३ "लूत भी रास्त बाज था, — और रास्त बाज लूत को जो बेदीनों के नापक चाल चलन से दिक था रहाई बखशी दोबारा रास्त बाज फिर लिखा" पतरस २/७,८ लूत रास्त बाज है हां हां ठीक लूत रास्त बाज था। उपरोक्त दोनों प्रकार के प्रमाणों से आप ने देख लिया कि कितना विरोध है।

न मांस खाये न मद पिए

"भला तो यह है कि तू न मांस खाए न दाख रस पीए न कुछ ऐसा करे जिस से तेरा भाई ठोकर खाए।" रोमियो १४/२०-२१

समीक्षा--यहां तक तो शराब न पीने की बात है अब

शराब पीने की सुनो शराब पीना

तू उसे बेच के रूपयों को बान्ध हाथ में लिये हुए उस स्थान पर आ जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुनेगा और वहां गया, बैल व घोडे बकरी व दाखमद्य वा मदिरा व किसी भान्ति की वस्तु क्यों न ले जो तेरा जी चाहे उसे उसी रुपये से मोल ले कर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाकर आनन्द करना। विवस्था विवरण १४/२६

थोड़ी शराब पिया करो

"भविष्य में केवल जल ही पीने वाला न रह पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोंडा दाख रस भी काम में लाया कर"। तामुथिसयुस ५/२३

समीक्षा-चलो छुट्टी मिल गई बीमारी के बहाने ही सही जिस पेट को शराब खराब करती उसी की दवा बताई है ठींक "रात को थोडा सी पीली सुबह तोबा करली"। अंजील का भी यही हाल है। थोडी सी पो लिया कोरा पानी पिया न करो। जब वह यरीहु से निकले दो अन्धों ने जो जो जो राह के किनारे बेठे थे-उनकी प्रायर्ता पर यीशु ने उन्हें बीना देखने वाला का दिया यती २० २६ से ३०

दो नहीं एक अन्धा था

और वे यरोहो में आये और जब वह और उसके चेले और एक बडी भीड यरीहो से निकलती थी तो तिमाई का पुत्र

वर तिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था । इत्यादि, लूका १८/३५—२५ मरकुस १०-४६-५२

समीक्षाः—अब बताइये मती को सच्चा माने या मरकुस और लुका को या इल्हाम देने वाले की भूल माने या भ्रान्ति । एक अन्धा माने या दो ।

शराबी व कुकर्मी खुदा की हुकूमत के वारिस न होंगे

क्या तुम नहीं जानते कि बदकार लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे । धोखा न खाओ न वेश्यागामी, न मूर्ति पूजक न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे । कुरन्थियों ६/६-१०

"हे भाइयों मैं यह कहता हूँ मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे, कुरन्थियों १५/५० ।

अब बीच की बात सुनिये

भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़, सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती है ।

(क्या निर्दोष पशुओं को मार कर खाने से मनुष्यों और पशुओं को ठोकर नहीं लगती)

जाहिद का क्या बिगड़ा थोड़ी सी पी है ।

डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है ॥
शराब के लिये कवि की उक्ति है ।

आप कहेंगे दाख रस का अर्थ आपने शराब कैसे किया इसके लिये देखो १६५० की छपी बायबिल उर्दू में दाखरस का अर्थ मय [शराव] ही किया है ।

अपने मेदे और अकसर कमजोर रहने की वजह से जरा सी मय को काम में लाया कर । बायबिल उर्दू पृष्ठ २४४ एक उर्दू वायबिल १८७० की छपी में भीं शराब ही अनुवाद किया है, पृष्ट ४१४ । तेभथुस ५/२३-२४ ।

योशू का पहला चमत्कार शराब पर

तीसरे दिन गलील के काना में किसी का विबाह था । और यीशू की माता भी वहाँ थी । और उसके चेले भी उस व्याह में न्यौते गये थे । जंब दाखरस घंट गया तो यीशू की माता ने उस से कहा.... तब यीशू ने उनसे कहा मटकों में पानी भर दो और उन्होंने उन्हें मूहों मूंह भर दिया । तव उसने कहा कि निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ । वे ले गये जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा तो दाखरस बन गया था । 'युहन्ना २/१ से ६ तक ।

समीक्षा:-उर्दू अंजील में भी दाखरस का अर्थ शराब ही किया गया है । देखो पूर्व के अनुसार १७ वा पृष्ट १७५ यह यीशू का पहला चमत्कार है । सुधारक और शराब का चमत्कार यह तो अनोखा सुधारक है लोगों को खुले तौर से शराब पिलाता है ।

यीशू के शराबी होने के विषय में मत्ती क्या कहतो है [मत्ती] क्योंकि युहन्ना न खाता आया न पीता और वह कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है। मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया और वे कहते हैं। देखो पेट्ट पियक्कड मनुष्य महसूल लेने वालों और पापिया का मित्र पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया हैं।" मत्ती ११/१६।

समीक्षाः—यहां तो यीशू स्वयं ही अपने शराबी होने की बाबत लोगों की गवाही पेश कर रहा है।

यीशु के दाख रस [शराब] पीने का इकरार

क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा, लूका २२/१८। मत्ती २६/२६। मरकुस १४/२५। यहां से यह निर्विवाद सिद्ध होता है–कि यीशु आयु भर दाख रस पीता रहा और मरने से एक दिन पहले कहा, कि दाखरस तबतक न पीऊंगा जब तक परमेश्वर का राज्य न आए अब देखना यह है कि एक ओर तो शराबी के हाथ का खाने से भी मना किया और एक ओर शराब के नयोते में शामिल होना, तथा फसहंम दाख रस पीना तथा कहां तक ठोक है दोनों में भारी विरोध है, शराब का दौर देखना है तो पुराना धर्म नियम पढ़िये।

पांच हजार को खिलाने का चमत्कार

जब यीशु ने यह सुना तो वहां से किशती पर अलग किसी वैरान जगह को रवाना हुआ, और लोग यह सुनकर शहर

शहर से पैदल उसके पीछे गए उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया और उसने उनके बीमारों को अच्छा कर दिया और जब शाम हुई, तो शागिरद उसके (यीशु के) पास आकर बोले कि जगह वैरान है और अब वक्त गुजर गया हैं लोगों को रुखसत कर दे ताकि गाँवों में जाकर अपने वास्ते खाना मोल लें, यीशु ने उनसे कहा इनका जाना जरूर नहीं तुम ही इन्हें खाने को दो, उन्होंने उससे कहाकि यहां हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं...घास पर लोगों को बैठने का हुक्म दिया और खाने वाले सिवाय औरतों और बच्चों के पांच हजार मर्द के करीब थे। मत्ती १४/१३-२१।

और वे उन्हें अलग करके बैत सैदा नाम एक नगर में ले गया, यह जान कर भीड़ उसके पीछे हो ली और वह आनन्द के साथ उनसे मिला। जब दिन ढलने लगा तो बारहों ने आकर उससे कहा, भीड़ को बिदा कर, कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें, और भोजन का उपाय करें क्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं, उस (यीशु) ने उनसे कहा....उन्होंने कहा कि हमारे पास पांच रोटियां ओर दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं,....वह लोग पांच हजार पुरुषों के लगभग थे, तब उसने अपने चेलों को कहा, कि उन्हें पच्चास-पच्चास करके पान्ति पान्ति बैठा दो....तब उसने पाँच रोटी और दो मछली लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़ कर चेलों को देता गया, सो सब खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों से बाहर टोकरी भर कर उठाई। लूका ६/१०-१७। यहां सन्त जलाराम तो रोज खिलाता था। मरकुस ६/३०-४३

में भी लगभग यही किस्सा है, मगर बैते सैदा की जगह और है, इसलिए वह नाव पर चढ़कर सुनसान जगह में अलग चले गए। लूका में है कि यीशु के पूछने पर उस समय चेलों ने कहा कि पांच रोटी और दो मछली हैं "उसने उनसे कहा-कि जाकर देखो, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्होंने मालूम करके कहा, कि पांच रोटी और दो मछली, यहां मालूम करके कहा, वहाँ लूका में तत्काल कहा, मरकुस में १२ टोकरों के साथ मछलियों का भी जिकर है, जबकि लूका में मछलियों का जिकर नहीं, मरकुस में पूरे पांच हजार पुरुष बताए जबकि लूका में पांच हजार के लगभग बताए। यही किस्सा यूहन्ना में भी है, मगर अन्तर यह है कि लूका में जहां पहिले बैते सैदा में गया, और मत्ती वा मरकुस में नाव पर नदी पार गया और लूका में पचास २ की कतारों का बिठाना कहा, मरकुस में ५० के साथ सौ भी शामिल कर दिया और मत्ती में बिना कतारों के, यूहन्ना में है कि तिबिरियास झील के पास गया और जहां लूका और मरकुस में है कि भोजन की बात पहिले चेलों ने की मगर यूहन्ना में भोजन की बात यीशु ने फिलिप्पुस चेले से की और पहाड़ पर चढ़ना भी लिखा जो और इन्जीलों में नहीं, लूका में कहा कि यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियां है-वहां मरकुस में हैं कि पूछकर बताओ मगर यहां यूहन्ना में है-कि इन्द्रियास ने उससे कहा-कि एक लड़के के पास पांच जौ की रोटी और दो मछली हैं जबकि और कहीं भी लड़के का नाम तक नहीं, मत्ती में है कि जब सांझ हुई और शेष तीन इन्जीलों में दिन ढलने के समय खाने का जिकर हुआ, मत्ती में

है कि इनका जाना आवश्यक नहीं तुम ही इन्हें खाने को दो, मरकुस, लूका और यूहन्ना में है कि लगभग पाँच हजार मर्द खाना खाने वाले थे, मगर मत्ती में है कि स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त पांच हजार मर्द के करीब थे देखिये चारों चेलों ने कैसी अटकलों से काम लिया है।

ऊपर हमने मोटी मोटी बातें लिखीं और यदि आप चारों इंजीलों की भाषा को पढ़ जायें तो आपको वाक्य-वाक्य में अन्तर मिलेगा। हम तो इस पर इतना ही कहेंगे कि इन चारों के बयानों को यदि कोर्ट में रख दिया जावे तो इस चमत्कार के विषय में क्या फैसला हो इस पर स्वयं ही ईसाई लोग गौर करलें। यह चमत्कार तो मिथ्या जाल ही हैं। परन्तु चमत्कारी भी ऐसे ही समझें—(लेखक)

यीशु स्रापित (लानती) है

मसीह ने, जो हमारे लिए स्रापित (लानती) बना हमें मोल लेकर व्यवस्था स्राप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है कि जो कोई काठ पर लटकाया जाता है, वह स्रापित है, गलतियों ३/१३।

वह जो फांसी दिया जाता है खुदा का मलऊन (लानती) है। इस्तिसना २१/२३।

यीशु स्रापित लानती नहीं है

इसलिए मैं तुम्हें चिनौती देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा से बोलता है वा अगुआई से बोलता है वह नहीं

कहता कि यीशु स्रापित है और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है। १-कुरन्थियों १२/३

हम तो इस पर यही कहेंगे कि ग़लतियों के तथा इस्तिसना के लेखकों से ईसाई भाई पूछलें कि वह आत्मा से बोले हैं या ज़बान से। (पहिले भी हम यीशु का स्राप्ति होना लिख चुके हैं)

गधी थी या गधी का बच्चा

जब वह यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफर्गे के पास आए तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा कि अपने साह्मने के गांव में जाओ, वहां पहुँचते हीं एक गधी बंधी हुई है, और उसके साथ बचा तुम्हें मिलेगा, उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ, यदि तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इनका प्रयोजन है....चेलों ने जाकर जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया और गधी और बच्चे को लाकर उन पर अपने कपड़े डाले और वह उन पर बैठ गया। मत्ती २१/१से७ (वाह आशिक की सवारी है ज़रा धूम से निकले)।

गधी नहीं गधी का बच्चा था

तो उसने (यीशु ने) अपने चेलों में से २-को यह कह कर भेजा कि अपने साह्मने के गांव में जाओ, और उसमें पहुँचते ही एक गधी का बच्चा जिसपर कभी कोई नहीं चढ़ा; बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा उसे खोल लाओ, यदि तुमसे कोई पूछे, यह क्यों करते हो। तो कहना कि प्रभु को

उससे प्रयोजन हैं, और वह शीघ्र उसे यहां भेज देगा, उन्होंने वच्चे को वाहर द्वार के पास चौंक में बन्धा हुआ पाया, और उसे खोलने लगे, और उनमें से जो वहां खड़े थे, कोई कोई कहने लगे, कि यह क्या करते हो गधी के वच्चे को क्यों खोलते हो, उन्होंने जैसा यीशु ने कहा था वैसा ही उनसे कह दिया तब उन्होंने उन्हें जाने दिया, और उन्होंने वच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर वैठ गया, मरकुस ११/१से८

गधी का बच्चा ही था

लूका में सब उपर का वही बयान है मगर इतना विशेष है....जब वह गधे के बच्चे को खोल रहे थे तो उनसे पूछा, इस वच्चे को क्यों खोलते हो। उन्होंने कहा प्रभु को इसका प्रयोजन है। लूका १६/३१से३४।

गधे का वच्चा ऐसे ही मिला। युहन्ना १२/१४।

दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे यह सुन कर कि प्रभु यरूशलेम में आता है, खजूर की डालियाँ ली और उस से भेंट करने को निकले और पुकारने लगे कि होशाना, धन्य इस्रायल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है, जब यीशु को एक गधे का वच्चा मिला, तो उस पर वैठा, यूहन्ना १२/१२-१३-१४।

अव देखिए मत्ती में गधी और गधी का वच्चा दो थे और खोलते समय किसी ने नहीं देखा मगर मरकुस में गधी नहीं

थी गधी का बच्चा ही था खोलते समय किसी ने पूछा और इसमें भी कुछ कसर थी जिसे लूका ने पूरा कर दिया कि गधे का बच्चा खोलते समय गधे के बच्चे के मालिकों ने पूछा, यहां भी गधी का बच्चा ही था, गधी नहीं, मगर यूहन्ना में बहुत ही उल्टा है युहन्ना गधी या गधी के बच्चे के झंझट में नहीं पड़ना चाहता था वह तो चेलों को भेजकर गधी या बच्चे को मंगवाना भी नहीं चाहता था उसने तो तीनों की बात खत्म करके कहा कि गधी का बच्चा या गधी ऐसे ही मिल गई किसी चेले को खोलने नहीं भेजा था ऐसे ही मिल गया, अब पाठकगण देखें कि इलहामी पुस्तकों में इतना विरोध, अब पादरी साहिब ही बतायें कि किसकी बात ठीक है क्या यह एक खुदा का इलहाम है या जुदा जुदा चार खुदाओं का।

फसह के दिन यीशु कहां था

अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे उसके चेलों ने उससे पूछा, तू कहां चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें। उसने अपने चेलों में से दो को यह कह कर भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घडा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा उसके पीछे हो लेना और वह जिस घर में जाए, उस घरके स्वामी से कहना। गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला (अतिथिगृह) जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है .. (जो मकान उसने दिखाया) चेलोंने वहां फसह तय्यार किया. (और यीशु ने उनके साथ खाया) मरकुस १-४/१२-२१ मती २६/१७-२१ पानी के घड़े वाले का जिकर नहीं केवल इतना है कि नगर में

फ़लाने के पास जाकर जगह लो मती २६/१७ और चेलों ने पूछा कि फ़सह कहां तैयार हो मती २६/२७ लूका में इतना विशेष है. तब अखमीरी रोटी के पर्व्व का दिन आया, जिसमें फ़सह का मेमना बलि करना आवश्यक था, और यीशु ने पतरस; और यूहन्ना को यह कहकर भेजा कि जाकर हमारे खाने के लिये फसह तैयार करो...यहां भी जल के घड़े वाले का जिकर है लूका २२/७-१३।

अब देखिये, मरकुस में हैं कि पानी का घड़ा उठाए एक़ मनुष्य मिलेगा। मगर मत्ती में पानी का घड़ा उठाने वाले वा मिलने वाले का जिकर नहीं ; मत्ती और मरकुस में है कि चेलों ने यीशु से आकर पूछा कि फसह कहा किया जावे ? मगर लूका में है कि यीशु ने स्वयं पतरस और यूहन्ना को कहला भेजा कि मेरे लिए फसह तैयार किया जावे और यीशु के कहने से चेलों ने फसह तैयार किया। अब तो किसी को संदेह नहीं रहेगा कि यीशु मरते दम तक मूसा का कहा बलिदान करता रहा अब यूहन्ना इस वाकिया को नहीं मानता। वह इस दिन यीशु को—

अदालत में देख रहा है

यह बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया, और उस जगह एक चबूतरा था, जो इब्रानी में गव्वता कहलाता है और न्याय आसन पर बैठा यह—

फसह की तैयारी का दिन था

और छटे घण्टे के लगभग था। (फसह की तैयारी के दिन छटे घण्टे यूहन्ना यीशु को पीलातुस की अदालत में देखता है और मत्ती और लूका वा मरकुस फसह खाते और दास रस उड़ाते देख रहे हैं।....तब उसने उसे उनको सौंप दिया, ताकि वह क्रूस (सूली) पर चढ़ाया जाये। यूहन्ना १९/१३से१६। यीशु उसी दिन सूली पर चढ़ाया गया और इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से विनती की कि उनकी टाँगे तोड़ दी जाएं और वे उतार जाएं (यीशु और दोनों चोर) ताकि सब्त के दिन वे क्रूस पर न रहें यूहन्ना। १९/३१-३२। सिपाहियों ने दोनों चोरों की टांगें तोड़ीं मगर यीशु की टांगे न तोड़ी। यूहन्ना १९/३३। कितना फर्क है। कितना अन्तर है पाठक आप देख लें।

यीशु को पकड़वाने वाले यहोदा का किस्सा

जब उसके पकड़वाने वाले यहोदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया और कहा, मैंने निर्दोषी को घात के लिए पकड़वा कर पाप किया है, उन्होंने कहा हमें क्या ! तूही जान, तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंक कर चला गया और जाकर अपने आपको फांसी दी। महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इनका भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि वह लोहू का

दाम है सो उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाडने के लिए कुम्हार का खेत मोल ले लिया, इस कारण यह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है। मत्ती २७/३-८ तक

पहिले बयान के प्रतिकुल

और उन्हीं दिनों पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा । हे भाइयों ! अवश्य था, कि पवित्र शास्त्र का यह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहोदा के विषय में जो यीशु को पकडनें वालों का अगुवा था, पहिले से कही थी । क्योंकि वह तो हममें से गिना गया और इस सेवकाई में सह भागी हुआ, (उसने अधर्म्म की कमाई का एक खेत मोल लिया और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पडीं और इस बात को येरुशलेम के सब रहने वाले जान गए यहां तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में हकलदमा अर्थात् खून का खेत पड़ गया । प्रेतों के कामों का वर्णन (एमाल) १/१५-२० ।

अब देखिए मत्ती तो कहता है कि ययोदा मन्दिर में रुपये फेंककर चला आया और आकर अपने आपको फांसी दे ली और याजकों ने उन रुपयों से कुम्हार का खेत खरीदा ।

मगर (एमाल) प्रेतों के कामों के वर्णन में पतरस कहता है कि यहोदा ने स्वयं खेत खरीदा और सिर के बल

गिरा और उसका पेट फट गया और अन्तड़ियां निकल आई।

ऐ नये ईसाइयों। दिल पर हाथ रख कर पढो और देखो कि इन दोनों ईश्वरी ज्ञान कहलाने वाली पुस्तकों में कौन सच्ची और कौन झूठी है या दोनों मन घडन्त है।

दसवां प्रकरण

यीशु के पकड़े जाने पर, इन्जीलों की विभिन्न बोलियां

मति–तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और कहने लगा कि यही बैठे रहना जब तक मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं और वह पतरस और जबदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा, तब उसने उनसे कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं, तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो फिर वह थोडा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, हे मेरे पिता! यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए....फिर दोबारा गया और प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता! यदि यह मेरे पिए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। फिर तीसरी बार भी यही प्रार्थना की, मगर तीनों बार ही चेलों को सोते पाया। तब चेलों को उसने कहा कि अब सोते रहो और विश्राम करो, देखो घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ

पकड़वाया जाता है। उठो चलें, देखो मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुँचा है वह यह कह ही रहा था कि देखो यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिये हुए आई, उसके पकड़वाने वाले ने यह पता दिया था, कि जिसको मैं चूम लूं; वही है। उसे पकड़ लेना,(तब यीशु को उसने बहुत चूमा....तब उन्होंने पास आ कर यीशु पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया। और देखो यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींच ली, और महायाजक के दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया ... इस पर यीशु ने कहा कि क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ, कि वह स्वर्ग दूतों की बारह पलटनों से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा। (खूब कही)......तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए और यीशू को पकड़ने वाले उस को काइफा नाम महा याजक के पास ले गये। मत्ती २६/३६ से ५६

मरकुस-मरकुस में किस्सा यही है मगर स्वर्ग दूतों की १२ पलटने भेजने का जिकर नहीं और इतना अधिक है कि एक युवक अपनी नन्गी देह पर चादर ओढ़ कर उस के पीछे हो लिया और लोगों ने उसे पकड़ा तो वह चादर छोड़ कर नन्गा भाग गया। मरकुस १४/३२ से ५३।

लूका-जब वह बाहर निकल कर अपनी रीति के अनुसार जेतून पहाड़ पर चढ़ गया और चले उसके पीछे हो लिये उसने चेलों से कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। "तब वह कुछ आगे जा कर" घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा...तब स्वर्ग से एक दूत उस को दिखाई दिया, जो उसे सामर्थ देता था,

और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल हो कर और भी हृदय वेदना से प्रार्थना करने लगा और उस का पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बून्दों की नाई भूमि पर गिर रहा था, तब यहूदा आया और उसे पकड़वा दिया और जो कान उड़ाया था। वह यीशू ने छू कर अच्छा कर दिया। लूका २२/३९-५२

लूका में एक ही वार प्रार्थना करने का जिकर है जब कि मत्ती और मरकुस में तीन बार है। लूका में स्वर्गदूत का दिखाई देना है मगर मरकुस और मत्ती में नहीं, बारह पलटने भेजने का जिकर लूका में नहीं, कान को अच्छा कर देना लूका में है, मत्ती और मरकुस में नहीं, मत्ती, मरकुस मैं है कि पतरस युहन्ना और याकूब को प्रार्थना करने गये, साथ ले गये, मगर लूका में नहीं। इत्यादि भिन्न रायें हैं जो ईश्वरी ज्ञान में नहीं हो सकती।

अब यूहन्ना का बयान सर्वथा भिन्न है सुनिये

यीशु यह बातें कह कर अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गया, वहां एक बारी थी जिसमें वह और उसके चेले गए और उसका पकड़वाने वाला यहोदा भी वह जगह जानता था... तब यहूदा पलटन को और महायाजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये हूये वहां आया, तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आने वाली थी जानकर निकला, और उनसे कहने लगा किसे ढूंढते हो उन्होंने उसे उत्तर दिया; योशु नासरी को, यीशु ने उन से कहा, मैं हो हुं, और उस का पकड़वाने वाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था, उसके यह कहते ही कि मैं हुं वे पीछे हट कर भूमि पर गिर पड़े, तब उसने फिर उनसे पूछा

तुम किस को ढुंढते हो, वे बोले यीशु नासरी को यीशु ने उत्तर दिया।

मैं तो तुमसे कह चुका हूं कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढुंढते हो तो इन्हें जाने दो ....शमौन पतरस ने तलवार जो उसके पास थी, खींची, और महायाजक के दास पर चलाकर उसका दाहिना कान उडा दिया उस दास का नाम मलखुस था तब यीशू ने पतरस से कहा, अपनी तलवार काठी में रख, जो कटोरा पिता ने मुझे दियो है क्या मैं उसे न पीऊं.........तब सिपाहियों और उन के सुबेदार और यहुदियों के प्यादों ने यीशू को पकड़कर बांध लिया और पहिले उसे युहन्ना के पास लेगए क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससूर था। यह वही काइफा था, जिसने यहुदियों को सलाह दी थी, कि हमारे लोगों के लिए एक पुरुष का मरना अच्छा है। यूहन्ना १८/१ से १४।

महायाजक [हन्ना] ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेशों के विषय में पूछा यीशु ने कहा मैं ने खुल्लम खुल्ला कहा है। गुप्त में कुछ भी नहीं कहा, तू मुझसे क्यों पूछता है सुनने वालों से पूछ....तब ऐसा उत्तर देने पर एक प्यादा ने यीशु को थप्पड़ मारा....हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया। यूहन्ना १८/१६-२४।

पाठक गण ! आप ध्यान पूर्वक मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के इन स्थलों को देखें और पढे, आपको मालूम हो जायगा कितना इन में विरोध है। यूहन्ना के कथन से स्पष्ट मालूम होता है कि जब उस ने मत्ती मरकुस और लूका के बोग देखे, तो उस ने सोचा कि इन तीनों के बयानों से तो यीशू के बलिदान की कोई कीमत ही नहीं रह जाती। इसलिए उसे सर्वथा बदल

दिया जाये और मुंह के बल गिर कर गिड़गिड़ा कर दुआयें मांगने तथा चूमने से यीशू को पकड़ने वाली सारी बातों को न लिख कर यह लिखा कि योशु ने स्वयं गिरफतारी के लिये अपने आप को पेश किया, देखिये फरक कितना है। और फिर इल्हामी कहलाने वाली पुस्तकों में।

मत्ती और मरकुस में है कि तीन चेलों को अपने साथ आगे ले गए, शेष को छोड़ गये, और तीन वार भूमि पर गिरकर प्रार्थना की, मगर लूका में है कि सब चेले वहां हो बैठे किसी को आगे नहीं ले गए, केवल एक ही बार प्रार्थना की तीन वार नहीं स्वर्ग दूतों की १२ पलटनों का जिकर केवल मत्ती में है और किसी में नही एक स्वर्ग दुत का आकर तसल्ली देना केवल लूका में है और किसी में नहीं। मरकुस में है कि एक युवक नंगे वदन चादर ओढ़े उसके (यीशू के) पीछे हो लिया। जब पकड़ा तो चादर छोड़ कर भाग गया। ऊपर के कुल समाचार यूहन्ना में नहीं बल्कि इस के प्रतिकूल हैं जैसे यीशू ने अपने आप को यीशू मैं हुँ कह कर स्वयं गिरफतारी के लिए पेश किया, एक बार नहीं बल्कि दो वार कहा पहली वार पकड़ने वाले भूमि पर गिर पड़े। फिर पकड़ने वाले यीशू को बांध कर ले गए, यह भी यूहन्ना में हा है, बांध कर काइफा के ससुर हन्ना के पास पहले ले गए, और हन्ना ने फिर काइफा के पास भेजा यह भी केवल यूहन्ना में ही है ईसाई भाइयों, आखिर आप पढ़े लिखे हैं जरा हठधर्मी की ऐनक उतार कर यूहन्ना के बयान को मत्ती, मरकुस और लूका के साथ मिला कर सत्य झूठ की परीक्षा करो तो हकीकत साफ खुल जाएगी। "वादे इम्तिहां इन की"।

काइफा के समक्ष यीशु की पेशी

जैसा कि ऊपर कहा गया कि आखिर यीशू सरदार काइफा के दरबार में जा पहूँचा और गवाहियां हुई, दो गवाहों ने कहा, कि यीशू ने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ, और उसे तींन दिन में बना सकता हूँ, तब महायाजक ने खड़े हो कर उससे कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता ! ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं, परन्तु यीशू चुप रहा, महायाजक ने उससे कहा. मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे, यीशु ने उससे कहा, तुने आपसे ही कह दिया, वरन मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व शक्तिमान'की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे (वाह उस्ताद खूब चक्कर दिया सवाल गंदम और जवाब चीना, न कोई सिर न पैर न खुदा को कोई बैठा देखे और न दाहिनी ओर जाकर देखे बादलों में कब आवे और सुनने वाले कब तक प्रतीक्षा करें कैसा गोरख धन्धा है) तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ कर कहा इसने परमेश्वर की निन्दा की है अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन !....तब उन्होंने उसके मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे-थप्पड़ मारकर कहा कि हे मसीह हमसे भविष्यद्वाणी कर के कह-कि किसने तुझे मारा। मत्ती २६/५७-६८।

मरकुस—मरकुस में और बातें मत्ती के समान हैं मगर नीचे लिखी बातों में फर्क है—

(१) गवाहों ने कहा कि यीशु ने कहा है कि मैं इस हाथ से बनाए हुये मन्दिर को ढा दूंगा और तीन दिन में दूसरा बना

दूंगा (हाथ से बना मत्ती में नहीं कहा)

(२) याजक के पूछने पर, क्या तू परम प्रधन्य का पुत्र मसीह है (मत्ती में था तू खुद कहता है) मगर मरकुस में है जब दोबारा पूछा तो मसीह ने कहा हाँ मैं हूँ (जब कि मत्ती की इकबाल में नहीं है) मरकुस १४/५३-६२

लूका:—फिर वे उसे पकड़ कर ले चले और महायाजक के घर में लाए, लूका २२/५४ । लूका में निम्न अधिक है—

जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे वे उसे ठठ्ठों में उड़ा कर पीटने लगे, और उसकी आँखें ढांप कर उससे पूछा कि भविष्य-द्वाणी करकें बता, कि तुझे किसने मारा, लूका, २२/६३-६४ । जब दिन हुआ, तो लोगों के पुरनिये और महायाजक और शास्त्री इकट्ठे हुए, और उसे अपनी महासभा में जाकर पूछा, यदि तू मसीह है तो हमसे कह दे, उसने उनसे कहा यदि मैं तुमसे कहूं, तो प्रतीति न करोगे, और यदि पूंछू, तो उत्तर न दोगे परन्तु, अबसे मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा रहेगा (यहां दहिने ओर बैठा देखोगे, नहीं है) इस पर सब ने कहा तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है । उसने उनसे कहा तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ (क्यों उस्ताद कहते हैं या पूछते हैं) लूका २२/६६—७१ (यहां बादलों से उतरना, कपड़े फाड़ना नही ।

यूहन्ना:—यूहन्ना में काइफा की कार्यवाही का कोई जिकर नहीं केवल इतना है कि काइफा के पास किले में ले गए । यूहन्ना १८/२८ ।

आपस में विरोध देखिये

मत्ती और मरकुस में है कि पकड़ कर काइफा के पास ले गए। वहां पुरनिये और शास्त्री इकट्ठे हुए थे और पेशी हुई तो उसे पैंलातुस के पास ले गए। लूका मैं है रात को याजक के घर ले तो गए मगर कायवाई प्रातः हुई, २२/६६। कार्यवाही अपनी सभा में करके फिर पंलातुस के पास ले गए, लूका २३/१। महासभा और काइफा के पास कोई कार्यवाई नहीं हुई पेशी पंलातुस के हुई। यूहन्ना मत्ती और मरकुस में है कि आकाश के बादलों से उतरता देखोगे, लूका और यूहन्ना में नहीं याजक के कपडे फाड़ने का जिकर मती मरकुस में है लूका में नहीं। मती और मरकुस में हैं कि पतरस ने योशु का इनकार भी किया और लानत भी दी मगर लूका और यूहन्ना इनकार ही किया लानत नहीं दी।

मती और लूका में हैं कि जब यीशु को खुदा का बेटा होने की बाबत पुछा तो कहा कि तुम स्वयं कहते हो मगर मर-कुस में है कि हां मैं हुं।

पीलातुस को कचहरी में योशु

भोर हुई तो सब महा याजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की, और उन्होंने उसे बांधा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौप दिया, मत्ती २७/१-२।

जब यीशु हाकिम के साह्मने खड़ा था, तो हकिम ने उससे पूछा, कि क्या तू यहूदियों का राजा है, यीशु ने उस से कहा, कि तू आप ही कह रहा है, मत्ती २७/१२। पीलातुस ने यीशु को कहा कि तेरे खिलाफ इतनी गवाहियां दे रहे है, परन्तु तूने एक बात का उत्तर नहीं दिया, मत्ती २७/१३-१४

"पीलातुस की 'पत्नी ने उसे कहला भेजा' कि तू इस धर्म्मी के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि मैंने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है, २७/१६। मती

जब पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं रहा परन्तु उस के विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उसने पानी ले कर भीड़ के साह्मने अपने हाथ धोए, और कहा, कि मैं इस धर्म्मी के लोहूं से निर्दोष हूं...और यीशु को कोड़े लगवा कर सोप दिया, कि कुस पर चढ़ाया जावे, मत्ती २७/२४-२६। तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चहों और इकट्ठी की, और उसके कपड़े उतारकर उसे किरमजी चोगा पहिनाया, और कांटो का मुकट गून्ध कर उस के सिर पर रक्खा और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेक कर उसे ठट्ठे में उडाने लगे; कि हे यहूदियों के राजा नमस्कार और उस पर थूका, और वही सरकण्डा ले कर उसके सिर पर मारने लगे,........फिर पुनः उसी के कपड़े पहिना कर उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले, मत्ती ;२७/२७-३१।

मरकुस–मरकुस में भी लग भग वही है जो मत्ती में है, मगर पीलातुस की पत्नी का संदेशा और पीलातुस का पानी मंगा कर हाथ धोना नहीं है न निर्दोष के लोहू की बात है, मरकुस १५/१-२०।

लूका में अन्तर देखिए

तब सारी सभा उठ कर उसे पीलातुस के पास ले गई, (लूका में बांध कर ले जाने का जिकर नहीं) और वे यह कह कर उस पर दोष लगाने लगे. कि हमने इसे लोगों को बहकाते और केसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते हूये सुना है–पीलातुस के पूछने पर यीशु ने वही उत्तर दिया कि तू स्वयं ही कह रहा है लूका २३/१—४

यह सुन कर पीलातुस ने पूछा कि क्या यह मनुष्य गलीली हैं, और यह जान कर कि यह हेरोदेस की रयासत का है उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, लूका २३/५-६

हेरोदेस यीशु को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह उससे चिन्ह देखने की आशा रखता था. उसने बहुत सी बातें यीशु से पूछीं, मगर उसने कुछ भी उत्तर न दिया तब हेरोदेस ने अपने सिपाहीयों के साथ उसका अपमान करके ठठ्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र पहिना कर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया, लूका २३/८से११ (यह हेरोदेस के पास भेजने का किस्सा और किसी इन्जील में नहीं) मैं इसे पिटवा कर छोड़ देता हूँ, २३/२२ लूका यह भी कहीं नहीं पीलातुस ने यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया, लूका २३/२५ ।

लूका में कोड़े लगवाने का जिकर नहीं और न पुलिस के हवाले करने का जिकर है।

यूहन्ना—यूहन्ना में है कि पीलातुस के पूछने पर कहा-कि यदि यह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौपते,

यूहन्ना १८/३० । यूहन्ना में लम्बा बयान है जो औरों से विभिन्न है उसे छोड़कर आगे को बात लिखते हैं इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए और सिपाहियों ने कांटों का मुकट गूंथ कर उसके सिर पर रक्खा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया.. और थप्पड़ मारे, यूहन्ना १६/१-३ । पीलातुस ने यीशु से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है । यीशु ने उत्तर दिया, कि क्या यह बात अपनी ओर से पूछता है या औरों ने मेरे विषय में तुझसे कही, ...यीशु ने कहा मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यूहन्ना १८/३५ । (यीशु का यह उत्तर और किसी इन्जील में नहीं) आखिर यहां याजकों और प्यादों के आग्रह के कारण पीलातुस ने उनके हाथ सौंप दिया. ताकि वह क्रूस पर चढ़या जाए, यूहन्ना १६/१६ । (इस किस्से में कितना विरोध है—आप ने देख लिया) ।

ग्यारवां प्रकरण

क्रूस उठाने में मत भेद

"जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को ले चले" मत्ती २७/३१ । बाहर जाते हुये उन्हें शमौन नाम एक कुरैनी मनुष्य मिला, वहां पहुँच कर उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले, और उस स्थान पर जो गुलगत्ता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है, पहुँच कर उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर पीना न चाहा, तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़या

....और दोष पत्र उसके सिर पर लगाया कि यह यहूदियों का राजा यीशु है। मत्ती २७/३२-३६ मरकुस १५/२१-२७ में भी वही जो ऊपर है।

मत्ती में दाख रस चखा, मरकुस में लिया ही नहीं।

लूका में भी वहीं है, लूका २३/२६ मगर दाख रस का जिकर नहीं।

यूहन्ना में तीनों के प्रतिकुल है

जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को सौंप दिया, यूहन्ना १६।१६ तब वे यीशु को ले गए और वह अपना क्रूस आप उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता कहते हैं, यूहन्ना १६।१७-१८।

मत्ती, मरकुस और लूका में है कि क्रूस शमौन बेगारी ने उठाई, मगर यूहन्ना कहता है कि यीशु ने स्वयं उठाई और इसमें दाख रस देने का जिकर नहीं, (इतना विरोध तो खुदाई पुस्तक में क्षम्य है) यीशु जब क्रूस पर चढ़ाया गया तो सब कहते थे, और आने जाने वाले सिर हिला कर निन्दा करते थे और वह कहते थे कि हे मन्दिर के ढाने वाले और तीन दिनों में बनाने वाले अपने आप को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ। इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा करके कहते थे, इसने औरों को बचाया, और अपने आपको नहीं बचा सकता. यह तो इस्राएल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए तो हम उस पर

विश्वास करे। मत्ती २७।३९से४३, मरकुस १५ २९से३२, लूका ३८।३६-३७। मगर यूहन्ना में उपरोक्त वाक्य नहीं है—

मत्ती का मन घड़न्त वरलाप

क्रूस पर जो हुआ उसमें भी मतभेद देखिए

दो डाकू भी क्रूस पर थे

दोनों डाकू भी यीशु की निन्दा करते थे, दोंपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा, तीसरे पहर के निकट यीशु ने बडे शब्द से पुकार कर कहा, "एली, एली, लमा शबक्तनी"! अर्थात् हे मेरे परमेश्वर! है मेर परमेश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया!

कितनों ने कहा कि यह एलिय्याह को पुकारता है औरों ने कहा, रह जाओ देखें एलिय्याह इसको बचाने आता है या नहीं। तव यीशू ने फिर बडे शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया, दो टुकडे हो गया और धरती डोल गई, और चट्टाने तड़क गई. और कब्रें खुल गई, और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकल कर पवित्र नगरों में गई और बहुतों को दिखाई दी, मत्ती २७।४४से५३। (वाह खूब रंग जमा दिया, शिष्यता का हक अदा कर दिया) मरकुस में....और सब कुछ वही है और केवल

अंधेरा छा गया और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया धरती का डोलना, चट्टानों का तड़कना, कब्रों का खुलना और मुरदों का जिकर नगरों में जाना मरकुस में नहीं। मरकुस १५।३२-३८।

लूका में है--कि एक चोर ने निन्दा की और दूसरे ने उस को डांटा, तब डांटने वाले को यीशू ने कहा कि मैं तुझे सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा (उर्दू में है जन्नतुल फिरदोस में होगा) लूका २३।३९-४३ (वाह उस्ताद सलीब पर भी न चुके, खूब स्वर्ग का चकमा दिया)।

चोर जिसको यीशु ने कहा था तू कल मेरे साथ स्वर्ग में होगा उसका क्या बना

क्योंकि किसी चेले ने नहीं लिखा, क्यों कि उसे तो यीशु के साथ स्वर्ग में जाना था मगर यीशु तो चालीस दिन तक सैर करके पिता की दहिनी ओर जा बैठा--और वह चोर बेचारा कब्र में ही पड़ा आंखे फाड़ फाड़ कर देखता रहा--कि आज के दिन का वादा कब पूरा होता है। मगर वहां तो कवि के कथन अनुसार "और ही रंग है यहां इन्तजारे वसल वह आग़ोशे गैर में, कुदरत खुदा की दर्द कहीं और दवा कहीं"। अस्तु, मत्ती और मरकुस में तो दोनों चोरो ने मुलामत की थी, मगर लूका में एक ने ही की, लूका में कब्रों के फटने, धरती डोलने और मुर्दों के जीकर नगरों में जाने का जिकर नहीं और "एली, एली लमा सबक्तनी" के स्थान में है "हे, पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हुँ, लूका २३/४४-४६। लूका ने मत्ती मरकुस के

इन शब्दों 'एली, एली लमा सबक्तनी' की खामीं को समझकर उस पर परदा डाल दिया। रोमियों ३।७

अब यूहन्ना को भी देख लो वहां न तो अंधेरा छाया न परदा फटा, न कब्रें खुली, न मुर्दे जी कर नगरों में आए और न एली, एली कहा—और न यह कहा कि अपनी रूह तुझे सौंपता हूं और न दो चोरों ने कुछ बुरा भला कहा, न स्वर्ग लोक में जाने का बचन दिया-वहाँ तो केवल इतना है-कि मैं पियासा हूं उन्होंने सिरके में भिगोए हुए इस्पंच को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया, जब यीशु ने सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ और सिर झुक्कर प्राण त्याग दिए। यूहन्ना १६/२६-३०। पाठकगण आपने देख लिया खुदाई कहलाने वाली पुस्तकों में इस जरा सी घटना में कितना मतभेद है। क्या ईश्वर से ज्ञान किसी को कुछ मिला और किसीको कुछ मिला, यदि ऐसा नहीं तो इतनी परस्पर विरोधी पुस्तकें ईश्वरीय कैसे हो सकती हैं?

बारहवां प्रकरण

यीशु के दफ़न करने में मत भेद

मत्ती में है कि यूसुफ ने चादर में लपेट कर यीशु को कब्र में रखा जो उसने चट्टान में खुदवाई थी और दोनों मरियमें कब्र के सामने बैठी थी, मत्ती २७।५७-६१। मरकुस में है जब यूसुफ ने लाश मांगी तो पीलातुस ने आश्चर्य में

होकर सुबेदार से पूछा कि क्या उसको मरे हुए देर हुई युसुफ ने महीन चादर में लपेट कर कब्र जो खोदी गई थी, उसमें रखा दोनों मरियमें देख रही थीं, मरक़ुस १५।४२-४७। मत्ती में सूबेदार का ज़िकर नहीं, मत्ती में मरियमों का बैठना लिखा, मगर मरकुस में केवल देखना लिखा।

लूका में है कि कब्र जो चट्टान में खोदी हुई थी, पहिली दोनों इंजीलों में खोदी हुई शब्द नहीं, मत्ती में यूसुफ के खुदवाने का जिकर है मत्ती, मरकुस में दोनों मरियमों का जिकर है :

लूका में यह है कि कुछ स्त्रियां पीछे आई और कब्र में रखा देखकर लौट गई और जाकर सुगन्धित वस्तुएं और इतर तैयार किया। लूका २६।५०-५६।

यूहन्ना कहता है कि निकोदेमुस ने पच्चास सेर के लगभग मिला हुआ गन्ध रस और एलवा लेकर दोनों ने यहूदियों के गाड़ने की रीति से उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा और बारी के पास नई कब्र थी उसमें दफन किया युहन्ना १६।३८-४२। निकोदेमुस का नाम तीनों इंजीलों में नहीं और यूहन्ना में किसी स्त्री के वहां आने का वर्णन नहीं है।

अब देखिये इस जरा सी बात पर कितना मतभेद है, एक ही खुदा से यह ज्ञान प्राप्त हुआ दिखाई नहीं देता, सम्भवतः तीनों खुदाओं ने ऐसा ज्ञान दिया हो।

मसीह की मौत के पश्चात चेलों की दयनीय दशा और विरोधात्मिक कल्पनाएं

यीशु ने कहा कि यूनुस के चिन्ह के अतिरिक्त और कोई चिन्ह नहीं दिखाया जायगा अर्थात तीन दिन और तीन रात कब्र में रहना, मगर यह इञ्जीलों से भली प्रकार प्रमाणित होता है कि मसीह तीन दिन और तीन रात कब्र में नहीं रहा अपितु एक रात और एक दिन कब्र में रहा, दूसरी रात ही कबर से गाइब किया गया था। मत्ती की कल्पना—मत्ती लिखता है कि दूसरे दिन जो तैयारी के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसयों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा .... और कब्र की रक्षा करने की आज्ञा ली और कब्र पर पहरा लगा दिया और पत्थर पर मुहर लगा दी, मत्ती २७/६२ ६६

बडा भुईडोल हुया क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया,.. उस के भय से पहरुए कांप उठे और मृतक समान हो गए, मत्ती २८/१-५। आप तीनों इञ्जीलें पढ़ जाएं न पहरेदारों का जिकर, न भूकम्प आने का, न पहरूहों के मुर्दा ही जाने का जिकर किसीने नहीं किया, यह मत्ती की अनोखी सूझ, उस की अपनी ही कल्पना है, इस में एक बड़ा कारण और है जिससे यह बात मिथ्या है कि सब्त के दिन कोई मनुष्य भी किसी काम को नहीं कर सकता, इस पर राज्य का बड़ा कड़ा प्रतिबन्ध था, अतः सब्त के दिन पहरा देने की आज्ञा मांगना और पहरा देना अपने आप को मौत के मूंह में डालना था, अतः यह गाथा सर्वथी मिथ्या है।

अब हम पूरे तौर से किस्से को आगे लिखते हैं क्योंकि ईसाई पादरी–

इसी को बता बता कर लोगों को बहकाते है

मत्ती—सब्त के दिन बाद के सप्ताह के पहिले दिन पह फुटते ही मरियम मगदलीन और दूसरी मरियम कबर को देखने आई,। देखो एक बड़े स्वर्ग दूत ने स्त्रीयों से कहा कि तुम मत डरों मैं जानता हुं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढुंढती हो । वह यहाँ नहीं है । परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है आओ यह स्थान देखो। जहाँ प्रभु पड़ा था, और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वे मृतकों में से जी उठा है, और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है. वहां उसका दर्शन पाओगे। देखो मैंने तुम से कह दिया और वे भय और आनन्द के साथ कबर से शीघ्र लौटकर उस के चेलों को समाचार देने के लिए दौड गई। और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा "सलाम" और उन्हीं के पास आकर उसके पांव पकड कर उसको दण्डवत किया। तब यीशु ने कहा मत डरो, मेरे भाईयों से जाकर कहो, कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेगे, मत्ती २८/१-१०। और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड पर गए जिसे यीशु ने उन्हें बताया था और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया. पर किसी किसी को संदेह हूआ, यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया हैं इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ और उन्हे पिता और पुत्र पवित्रात्मा के नाम से

बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे संग हूं, मती २८/१६—२० ।

चेलों में क़िसी किसी को संदेह हुआ, यह बात ध्यान देने योग्य है । दो रात और एक दिन में ही इतनी जल्दी सन्देह हो गया। पृथ्वी के राज्य की बात भी बहकाने के लिये अच्छा जादू है आखिर इसका सबूत क्या ! यह तो यही बात है, "चेले ने कही गुरू की जबानी, जिसने मानीं सभीं ज्ञानी" यही चल रहा है पहिले तो कहते थे कि इस्राएल की भेड़ों के सिवा और किसी के पास मत जाना, मत्ती १०/५-६

मत्ती का बयान हमने लिख दिया, अब इसको मरकुस लूका; यूहन्ना के बयानों के साथ मिलाकर पढ़िये तो "हकीकत साफ खुल जाएगी बादे इम्तेहां सबकी"

मरकुस—जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगद लीनी और याकूब की माता मरीयम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, और सप्ताह के पहिले दिन बड़ी भोर, जब सूरज निकला ही था, वे कबर पर आईं और आपस में कहती थीं, कि हमारे लिए कबर के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा ! जब उन्होंने आंख उठाई, तो उन्होंने देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है, क्योंकि वह बहुत ही बड़ा था, और कबर के भीतर जाकर उन्होंने, एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं, उसने उनसे कहा, कि चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो, वह जी उठा है, यहां नहीं है, देखो यही वह स्थान है. जहां

उन्होने उसे रक्खा था, परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुमसे पहिले गलील को जाएगा, तुम वहीं उसे देखोगे और वह निकल कर कबर से भाग गई। क्योंकि कप कपी और घबराहिट उनपर छा गई थी, और उन्होंने किसी को कुछ न कहा क्योंकि डरती थी, मरकुस १६/१-८ (यहां तो लिखा कि डरती मारी चुप बैठ गई और किसी से कुछ न कहा मगर आगे मरकुस की घबराहट देखिए)

सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही वह जो उठकर पहिले पहिल मरीयम मगदलोनी को जिससे उसने सात दुष्टात्मा निकाले थे, दिखाई दिया। उसने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और और रो रहे थे समाचार दिया और उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और कि उसने उसे देखा है प्रतीति न की। (अभी तो ऊपर यही हजरत कह रहे थे कि डर के मारे उनको कप कपी हुई और किसी को कुछ न कहा तीन ओरतें कबर पर गई फिर एक कहां और कब मिली) मरकुस १६/१-१०। उसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनकी प्रतीति न कीं, मरकुस १६/११-१३।

पीछे वह उन ग्यारह को भी जब यह भोजन करने बैठे थे, दिखाई दिया और उनके अविश्वास और मनकी कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, उन्होंने उनकी प्रतीति न की थी, और उसने उनसे कहा तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी

का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जायगा। (वाह उस्ताद खुब जकड़ वन्द खेला) और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे, कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठालेंगे और यदि वह नाशक वस्तु भी पी जाएं तो भी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रक्खेंगे और वे चंगे हो जाएंगे। मरकुस १६/१४-१८।

निदान प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनो ओर बैठ गया, और उन्होंने निकल कर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ साथ काम करता रहा, मरकुस १६/१६-२० (हम पीछे लिखेंगे मगर आप स्वयं ही मरकुस मत्ती के वाक्यों और मतलब को मिलाते जाएं कि कितना मतभेद है, वह जमीन की कहता है और वह आसमान की।

अब जरा लूका की भी सुन लो

और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलीली से आई थो, पीछे पीछे जाकर उस कबर को देखा....और लौट कर सुगन्धित वस्तुऐं और इतर तैयार किया और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया, लूका २३/५५-५६। परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थी लेकर कबर पर आई और उन्होंने पत्थर को कबर पर से लूढका हुआ पाया और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई.......तो देखो दो पुरूष झलकते वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हूए... उन्होंने उनसे कहा तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढती

हो । वह यहां नहीं परन्तु जी उठा है, स्मरण करो कि उसने गलीली में रहते हुए तुमसे कहा था, कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए और क्रूस पर चढ़ायो जाए और तीसरे दिन जी उठे,·· और कवर से लौट कर उन्होंने उन ग्यारहों को और सब को यह सब बातें कह सुनाई, जिन्होंने प्रेरितों से यह बातें कहीं वे मरियम मगदलीनी और यूहन्ना और याक़ूब की माता मरियम और उनके साथ की और स्त्रियां भी थी परंतु उन की बातें उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं, उन्होंने उन की प्रतीति न की (कितना अविश्वास था) अब पतरस उठ कर कबर पर दौड़ गया, और झुक कर केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था उससे अचम्भा करता हुआ घर चला गया, लूका २४/१-१२ । देखो उसी दिन उनमें से दो जन अम्माउस नाम गांव को जा रहे थे······और वे उन सब बातों पर जो हुई थी, आपस में बातचीत करते जा रहे थे,······ तो यीशु भी उनके साथ हो लिया, परन्तु उनकी आंखे ऐसी बन्द कर दी गई थीं, कि उसे पहिचान न सके······ (वह कहते थे) और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया जो भोर को कबर पर गई थी····मगर लोथ न पाई, और वह कहती हुई आई-कि हमने स्वर्ग दूतों का दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है,···· इतने में वह उस गांव के पास जा पहुंचे जहां वह जा रहे थे. और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा, कि वह आगे बढ़ा चाहता है. परन्तु उन्होंने यह कह कर उसे रोका; कि हमारे साथ रह, क्योंकि संध्या हो चली है····जब वह उन के साथ भोजन करने बैठा; तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया···तब उनकी आंखे खुल गई, और उन्होंने उसे पहिचान लिया; और वह उनकी आंखों से छिप गया;

लूका २४।१३-३२। वे उसी घड़ी उठ कर यरुशलेम को लौट गये और उन ग्यारह और उनके साथियों को इकट्ठे पाया। वह कहते थे; प्रभु सचमुच जी उठा है और वह शमौन को दिखाई दिया है तब उन्होंने मार्ग की सब बातें उन्हें कह दी ....और रोटी तोड़ते समय क्यों कर पहचाना (यह भी कह दिया)।

वह यह बातें कह ही रहे थे, कि वह आप ही उनके बीच में आकर खड़ा हुआ और उनसे कहा तुम्हें शान्ति मिले। परन्तु वे घबरा गये और डर गए, और समझे कि हम किसी भूत को देखते हैं। उसने उनसे कहा, क्यों घबराते हो। और तुम्हारे मन में क्यों संदेह उठते हैं! मेरे हाथ और पाँव देखो कि मैं वही हूँ मुझे छूकर देखो क्यों कि आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता, जैसा मुझमें देखते हो यह कहकर उसने अपने हाथ पांव दिखाए, जब आनन्द के मारे उनको प्रतीति न हुई और आश्चय करते थे तो उसने उनसे पूछा क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है उन्होंने उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया, उसने लेकर उनके सामने खाया, लूका २४/३३-४६। तब वह उन्हें बैत नियाह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। लूका २४/५०-५१

अब यूहन्ना की भी सुनो

[बयान लम्बा है संक्षेप से लिखेंगे]

सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कबर पर आई और पत्थर को कबर से हटा हुआ देखा तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास

जिससे यीशु प्रेम रखता था, आकर कहा....तब पतरस और वह दूसरा चेला दौड़ पड़े, और कब्र के भीतर जाकर अंगोछा और कपड़े देखे .. वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा, तब वह चेले अपने घर लौट गए, यूहन्ना २०/१-१० ।

परन्तु मरीयम रोती हुई कबर के पास ही खड़ी रही । उसने कबर में दो स्वर्ग दूतों को देखा . जब वह पीछे फिरी तो यीशु को खड़े देखा, और न पहचाना कि यीशु है । उसने माली समझकर उससे यीशु की बावत पूछा, कि हे महाराज ! यदि तूने उसे उठा लिया है, मुझसे कह, कि उसे कहां रक्खा है, यीशु ने उसे कहा कि मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाईयों के पास जाकर उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता....के पास ऊपर जाता हूं. मरीयम ने जाकर बताया कि मैंने प्रभु को देखा है, यूहन्ना २०/१२-१८ । संध्या के समय जब चेले यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले और यह कह कर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए, और फिर शान्ति मिले, कहा, यह कह कर उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, पवित्र आत्मा लो, जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं, जिनके तुम रक्खो, वे रखे गए हैं, यूहन्ना २०/१६-२३ । परन्तु १२ में से एक व्यक्ति अर्थात थोमा जो दिदुमुस कहता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था; चेलों के कहने पर उसने कहा कि जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं तब तब मैं

प्रतीति नहीं करूंगा (आपस में कितना विश्वास है) यूहन्ना २०/२४-२५।

आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घरके भीतर थे, थोमा उनके साथ था, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा,....तब थोमा को उसने कहा कि अपनी उंगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख, और अपना हाथ ला कर मेरे पंजर में डाल .. और विश्वासी हो...... तब यीशु ने कहा कि तू ने मुझे देख कर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्हों ने बिन देखे विश्वास किया, यूहन्ना २०/२६-२९ (इतने दिन गुजर गये चोर बेचारा स्वर्ग जाने के लिए न जाने कहां प्रतिक्षा कर रहा है)।

इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रकट किया ....जब शमौन, थोमा, नतन एल और जबदी के पुत्र मछलियां पकड़ रहे थे, परन्तु रात भर कोई मछली न पकड़ी, भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ, तो भी चेलों ने न पहचाना। तब यीशु ने उनसे कहा, हे बालकों ! क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है। उन्होंने कहा नहीं। उसने कहा नाव की दहिनी ओर जाल डालो तब उन्होंने जाल डाला और मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खैंच न सके। तब उस चेले ने जो यीशु से प्रेम रखता था, कहा कि यह तो प्रभु है, तब शमौन ने कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नन्गा था (यीशू के यह मछली मार यार)... तब किनारे पर उतर कर कोयले को आग पर मछली रक्खी हूई और रोटी देखी, यीशु ने उनसे कहा, कि जो मछलियां आप ने अभी पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ कर एक सौ तिपंन बड़ी मछलियों से भरा जाल किनारे पर खींचा.......यीशू ने रोटी

और मछली उन्हें दी और किसी को साहस न हुआ कि उस से पूछें कि तू कौन है। यह तीसरी बार है कि यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए, यूहन्ना २१/१-१४।

उस के वाद पतरस से तीन बार कहा कि तू मुझ से प्रीति करता है ....और अन्त में यूहन्ना ने कहा कि यदि पूरा हाल लिखा जाए तो जगत में भी न समाता, यूहन्ना, २१/२५ अब १ कुरिन्थियों से सुनों।

हे भाईयों! मैं तुम्हे वही सुसमाचार बताता हूँ, जो पहिले सुना चुका हूं........कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, और (कैफा) को तब बारहों को दिखाई दिया, फिर पांच सौ से अधिक भाईयों को एक साथ दिखाई दिया, जिन में से बहूतेरे अब तक वर्तमान है।........फिर याकूब को दिखाई दिया, तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया, और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया,-१-कुरिन्थियों १५/१-८ (१-मर गया मगर इसके बारह ही है)

प्रेरितों के कामों का वर्णन

(रसूलों के एमाल में देखें)

हे थियुफिलुस मैं ने पहली पुस्तका उन सब बातों के विषय में लिखी थी. जो यीशू ने आरंभ में किया, उस दिन तक

जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया, और उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा,........यह कह कर वह उन के देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आँखों से छिपा लिया,........जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है; उसी रीति से वह फिर आएगा। देखो प्रेरितों के कामों का वर्णन १/१से११ (ऊपर कितनी बार ऊठाया गया ऊपर यह आप ने देख लिया)

ऊपर जो लिखा हम संक्षेप से उन में परस्पर विरोध नीचे लिखते हैं।

विरोध

मत्ती में है दो औरतें कबर पर गई मरकुस में तीन औरतें गई, लूका में बहुत ओरतें गई, मगर यूहन्ना में केवल एक ही लिखी गई।

मत्ती में है कि कबर पर जाने वाली स्त्रियों को एक दूत मिला, जो पत्थर लढ़का कर उस पर बैठ गया। मरकुस में हैं कि पत्थर पहले ही लुढ़का हूआ था और कबर के अन्दर एक दूत को देखा। लूका कहता है कि उन स्त्रियों को कबर पर दो सफेद पोश दूत मिले। और यूहन्ना कहता है कि मरियम ने दो दूत कबर के अन्दर देखे, मत्ती में कबर पर रखवारे बिठाने और

भूकम्प आने का जिकर है, और स्वर्ग दुतों के डर से पहरुओं के बेहोश होने का वर्णन है, मगर और किसी इन्जील में यह जिकर नहीं। मत्ती में है कि कब्र से लौटते समय दोनों मरियमों को यीशु मिला और मरकुस में है कि जी उठते ही केवल मरियम मगदलीनी को मिला। लूका के अनुसार मरियम बेचारी तो कबर पर मारी मारी फिरती रही। दो दुतों के सिवा और कोई भी न मिला, यीशु के दर्शन से वञ्चित रही, मगर यूहन्ना ने दया करके मरियम को कबर से लौटने के पश्चात माली के वेश में मिला दिया, मत्ती में है कि दोनों मरियमें ११चेलों को सूचना देने दौड़ी, मरकुस में है कि दोनों मरियमों ने भय के मारे चुप साध ली और किसी को कुछ न कहा, लूका में है कि ११ चेलों को खबर दी और अकेला पतरस ही कबर पर गया यूहन्ना कहता है कि मरियम कबर पर से पत्थर हटा देखकर पतरस और दूसरे प्रेमी चेले के पास दौड़ी आई,और वह दोनों कबर पर गये और सिवाये सुतीकपड़े के और कुछ कबर में न देखा। मरियम रोता कब्र पर ठेरी, उसने कब्र में दो स्वर्ग दुतों को देखा जब कि पतरस और प्रेमी चेले को कपडों के अतिरिक्त और कुछ नजर न आया,और लौटने पर केवल मरियम को यीशु माली की शक्ल में मिला। मत्ती में है कि यीशु जब दोनों मरियमों को मिला तो कहा,कि मेरे भाइयों को सूचना दो ताकिवह गलील को चले जाएं, वहां मुझे देखेंगे। मरकुस में यीशु ने कुछ न कहा मगर दुतों ने कहा कि यीशु के चेलों को गलील में भेजो, वहां उसे देखेंगे। लूका में किसी औरत के साथ यीशु का मिलन ही नहीं है, दून हो मिले, यूहन्ना में है कि जब यीशु मरियम को मिला तो उसने (गलील पर जाने को न कहकर) कहा कि मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप, अपने

ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर के पास जाता हूँ, मत्ती तो योशू का जवानी गलील में मिलने को बुला रहा है। मगर यूहंन्ना बाप के पास आसमान पर जाने की मरियम को कह रहा है। मगर मरियम ने भाइयों को सन्देश न दे कर,चेलों को कहा, मत्ती में है कि ११ चेलों कों गलील पहाड़ पर मिला और कहा कि आसमान और जमीन का कुल अधिकार मुझे दिया गया है मगर मरकुस में है कि दोनों जब वह गाँव को ओर जा रहे थे दिखाई दिया उन्होंने जाकर औरों को समाचार दिया परन्तु उन्होंने उन की प्रतीति न की;मगर फिर वह ११ को जब वह भोजन कर रहे थे, दिखाई दिया;और उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया।

मगर लूका की मुलाकात कैसे हुई और देखो उसी दिन दो आदमियों को गांव को जाते समय मिला और पहचान करने की शक्ति उनसे उठाली मगर जब वह गांव पहुँचने पर उनके साथ खाना खाने बैठा तो जब रोटी तोड़ कर उनको दी, तो उनकी आखें खुल गई, और उन्होंने उसे पहिचान लिया और फिर वह उनकी आखों से छिप गया। फिर जब उन दोनों ने यरुशलेम में आकर ११ को कहा तो फिर यीशु उनके बीच खड़ा हो गया और कहा कि मैं वही हूँ मुझे छू कर देख लो, और फिर वह उन से अलग हो गया, और स्वर्ग पर उठा लिया गया। इससे स्पष्ट है कि गलील पर इन को नहीं मिला। यूहन्ना का कहना सबसे विचित्र है वह कहता है कि सप्ताह के पहिले दिन यीशू चेलों को जब वह दरवाजा बन्द कर के बैठे थे मिला, मगर थोमा चेला उनमें नहीं था,। आठ दिन के बाद फिर जब थोमा भी चेलों में था और द्वार बन्द थे उनको मिला और उंगली और हाथ से थोमा को हाथ के निशान और पंजा

दिखाकर इसके वाद यीशू चेलों को तिबिरियास झील के किनारे मिला और मछलियों का चमत्कार दिखाकर प्रश्न करता रहा। तीन बार चेलों को मिलना केवल युहन्ना ने ही कहा है। इस से भी साबित है कि जो मत्ती ने गलील पर मिलना लिखा उसको यूहन्ना नहीं मानता। पौलूस कहता है कि इन वारह चेलों के सिवा मुझे भी और पांच सौ से अधिक को दिखाई दिया और चालिस दिन तक उन को नज़र आता रहा, इत्यादि मिलने के विषय में सक्षेप से—

मत्ती कहता हैं ग्यारह चेलों को गलील पहाड़ पर मिला केवल एक बार, मरक़ुस कहता है ११-को खाना खाते समय दिखाई दिया, और वस ऊपर चला गया लूका कहता है कि पहिले दो को रास्ता में मिला, और फिर चेलों को जव बातें कर रहे थे, तो मिला और यूहन्ना कहता है तीन बार चेलों को मिला और कुरिन्थियों १-में कैफा के मिलने के वाद ११-को एक बार ही मिला और पाँच सौ से अधिक को एक साथ दिखाई दिया, याक़ूब को दिखाई दिया, सव प्रेरितों को दिखाई दिया, और सब के बाद मुझे दिखाई दिया, जब कि चारों इन्जीलों में यह नहीं।

प्रेरितों के कामों के वर्णन में है कि चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा कि उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया और बादलों ने उन को आखों से छिपा लिया, इत्यादि।

कहां तक लिखा जावे आप ध्यान पूर्वक इन स्थलों को पढ़े आप को वाक्य-वाक्य में विरोध दृष्टि गोचर होगा। ऊपर के

बयानों को समक्ष रख कर हम ईसाई भाईयों से कहेंगे कि यदि इन बयानों को किसी कोर्ट के सामने फैसला करने के लिए पेश किया जावे तो वह ऐसे विभिन्न बयानों को देख कर क्या इन के ईश्वरी ज्ञान होने का फैसला करेगा ? मगर हम तो आप को ही न्याय की कुर्सी पर बिठा कर आप से ही फैसला चाहते हैं। क्या ऐसे परस्पर विरोधी बयानों को देख कर, पढ़ कर आप का आत्मा क्या साक्षी देता है, सीने पर हाथ रख कर कहना ?

पाठक गण विशेष ध्यान दे ।

मरने के पश्चात जी उठने के सिलसिले में जो प्रमाण मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना आदि से हम पेश कर चुके हैं यदि आप उसे ध्यानपूर्वक पढेगे तो इस कहानी के कल्पित होने की असलियत भली प्रकार आप को मालूम हो जाएगी। प्रथम तो इस गाथा को जिस किसी ने दूसरे से कहा उसने विश्वास ही नहीं किया और यदि मिला, तो पहचाना ही नहीं। इस कल्पित कहानी का मिथ्या होना यीशू के आसमान पर उठाये जाने के विभिन्न बयानों से सहज में ही प्रकट हो जाता है। मत्ती से मालूम होता है कि जो चेलो को करना है वह सब कहा और अन्तिम में 'दुनियां के आखिर तक तुम्हारे साथ रहूंगा यह कह कर पुस्तक खतम कर दी'। जिसका स्पष्ट मतलब है कि फिर मिलने को गुंजायश नहीं, सदा साथ रहने की हैं, मरकुस में है कि जब वह खाना खाने बैठे थे दिखाई दिया। गरज कलाम करने के बाद आसमान पर उठा लिया गया और खुदा की दहिनी ओर जा बैठा, मरकुस १६/१४-२०। मरकुस से यह नतीजा निकला है

कि जल्दी ही आसमान पर चला गया, लूका में है कि उसी दिन सब्त के अगले—दिन अमाऊस को जाते समय दो आदमियों के पीछे हो लिया—उन दोनों के लौट कर आने पर ग्यारह एक जगह ही मिले और वह बात ही कर रहे थे कि यीशु उनके बीच आ खड़ा हुआ और बैतनिय्याह को उनके साथ गया। वहां उन से जुदा हो गया और आसमान पर उठाया गया लूका २४/३२-५३। से मालूम होता है कि दो चार दिन में ही ऊपर चला गया यूहन्ना ने पहले लिख दिया, कि मरियम को कहा, कि मेरे भाईयों को कह देना कि मैं अपने बा। अ र तुम्हारे बाप अपने खुदा और तुम्हारे खुदा के पास जाता हूँ। मगर उसके पश्चात फिर हफ्ते के पहिले दिन दस को मिलाया फिर आंठ दिन के पीछे थोमा को विश्वास दिलाने को मिला, फिर तीसरी बार झील के किनारे मिला और मछलियां पकड़वाई खाई और बातें करके यूहन्ना ने इस मिलने के सिलसिले को बन्द कर दिया इससे भी बहुत दिन मालुम नहीं होते फिर एमाल के आरम्भ में ही है, कि वह चालीस दिन तक उन्हें नजर आता रहा और खुदा की बादशाहत की बातें कहता रहा और उनके देखते देखने ऊपर उठा लिया गया. और बादलों ने छूपा लिया। अब इतने भिन्न भिन्न विचार को देखते हुए एक ही बात कही जा सकती है कि यह कोरी कल्पना ही है कब आसमान पर गया। ऊपर जो हमने लिखा वह सभी को मिथ्या समझने के लिए काफी है क्या यीशु के ऊपर लिखे प्रमाणों को देखते हुए किसी पादरी को इन्हें सच्चा साबित करने की शक्ति है यदि है तो वह मैदान में आवें, और सच्चाई का परिचय दें।

तीन दिन तीन रात के बदले तीसरे दिन की कल्पना

ईसाईयों के प्रचारक वर्ग ने इस बात को अत्यधिक विख्यात किया है और बहुत भ्रान्ति डाली है कि यीशू अपनी

भविष्य वाणी के अनुसार मरने के बाद तीन दिन के पश्चात् जीवित जैसा कि हम पहिले लिख चुके हैं कि यीशू के मरने के वर्षों पश्चात वह यीशू जीवन कथाएं इन्जीलों के रुप में लिखी गई. अतः जिस बात का यीशू के चेले प्रचार करना चाहते थे. उसको उन्होंने ऐसे ढंग से लिखा—कि लोग यह समझें कि यह बातें यीशों के समय की लिखी है। परन्तु यह कल्पना इन्जीलों में लिखते समय कीं गई है इन कल्पनाओं को ऐसा रुप दिया गया कि लोग समझें कि यह सब भविष्य वाणियां है इस विषय में मिस्टर जैकोलियट चीफ जस्टिस चन्द्रगढ़ लिखते हैं—कि 'जैसा हम पहिले लिख चुके हैं, इसका समाधान यह है कि यह सब व्यापार संदिग्ध प्रमाण हैं,ईसा इस जगत में से प्रायः अलग-अलग ही निकल गया. संसार ने उप पर बहुत थोड़ा ध्यान दिया,पीछे से उसके शिष्यों ने, पूर्व से आई हुई कुछ भविष्य वाणियों को अपना कर, और कृष्ण के आचरण और उस के जीवन की थोड़ी कम अलौकिक और अधिक सम्भाव्य विशेषताओं को उधार ले कर उसे एक पौराणिक नायक बना दिया । भारत में बाइविल द्वितीय भाग पृष्ठ ४१० आगे लिखा क्या कोई गंभीर विचार शील मनुष्य यह मान सकता है कि यदि ईसा ने यहूदियों के सामने ये सारे चमत्कार दिखलाए होते, जो बाइबिल के लेखक उसके साथ ठहराते हैं तो वे उसका जय जय कार न करते।

हम अब उस युग में नहीं है। जब लोकोत्तर बातें भी सृष्टि-नियम के अनुकुल समझी जाती थी, और बे-समझे लोग उस के आगे सर झुका देते थे। भला अब कोई मनुष्य हमारे अन्दर आवे, जो अपने जीवन के तीन वर्षों में चमत्कार पर चमत्कार दिखलाता रहा हो, पानी की मदिरा बना देता हो, पांच रोटियों और दो तीन मछलियों से दस,-पन्द्रह, बीस सहस्त्र

व्यक्तियों की क्षुदा निवृत्ति कर देता हो, मृतकों को जिलाता हो, बहरों को कान और अंधो को आंखे देता हो इत्यादि इत्यादि ।

फिर देखते हैं, कि उसको वदनाम करने की किस फरीसी और किस याजक में शक्ति है । भारत में बाइबिल भाग-२-अध्या ३ पृ. ४११ ।

मिस्टर जैकोलियट ने प्रवल युक्ति युक्त आधार पर चमत्कारों के विषय में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है, कि जिसके स्वीकार करने में किसी को संदेह नहीं हो सकता बुद्धिहीन लोगों पर प्रभाव डाल कर उनकी मनोबृति को वश में करके यह चमत्कारों का खेल खेला जाता है, यदि मृतकों को जींवित करने का यीशू ने कोई चमत्कार दिखाया होता, तो उसको मानने का कौन नकार कर सकता था, हम देखते हैं—कि यींशू को बपतस्मा देने वाला यूहन्ना कत्ल किया गया और यीशू उसको जीवित न कर सके ।

हमने ऊपर लिखा-कि ईसा के चेलों ने ऐसी पुस्तके यीशू के मरने के बहुत पीछे निर्मान की और वह चेले उन सब बातों को देख चुके थे, उनको ऐसे ढंग से लिखा, कि लोग समझे-कि वह सब भविष्य द्वानियां हैं यीशू के मरने के पांछे बहुतसी इंजीलें बनाई गई जो अन्त चार रह गई इस बात को नोचे के प्रमाणों से देखें कि पोलुस रसुल के समय ही बहुत गलत इन्जील बन चुकी थी ।

पहले आप पौलूस रसुल का पत्र गलतियों के नाम देंखे ।

पौलूस जो न आदमियों से न आदमी के वसीले से वल्कि यीशू मसीह और खुदा बाप से जिसने उसको मुर्दें में से जिलाया रसुल है । और सारे भाइयों से जों मेरे साथ है, गलतियों: कलीस्याओं को फजल (मह्त्व कृपा) वा सलामती खुदा वाप और हमारे खुदावन्द यीशू मसीह की तरफ से तुम्हारे लिए होंवे । जिसने हमारे पापों के बदले में अपने तई दिया,ताकि वह हमको हमारे वाप खुदा की इच्छा के अनुसार इस खराव दुनियाँ से खलासी प्रदान करे जलाल अब्दी (अनादी तेज) उसका है । आमीन ।

मैं अचम्भा करता हूं. कि तुम इतनी जल्दी उस से जिसने तुम्हें मसीह के फजल में बुलाया फिर के दूसरी इंजील की ओर झुक गए, सो वह दुसरी तो नहीं, किन्तु कुछ हैं जो तुम को घबराते हैं और मसीह की इन्जील उलट देना चाहते हैं । यदि हम या आसमान से कोई फरिश्ता उस इन्जील के अतिरिक्त जो हमने तुम्हें सुनाई दुसरी इन्जील तूम्हें सुनावे, सो मलऊन [लानती होवे । जैसा कि हमने आगे कहा, वैसा ही हम मैं पुनः कहता हुँ कि यदि कोई तुम्हें किसी दूसरी इन्जील को सिवा उसके जिसे तुमने पाया सुनावे वह मलऊन (भ्राप्ति) होवे पौलुस रसूल का पत्र गलतियों की उर्दु बाइबिल पृ० ३६५ ।

पौलूस के पत्र से यह बातें आपको मिलती है (१) पौलूस के समय हो कई प्रकार की इन्जिलें बन गई थीं (२) पौलूस

कहता है जो इन्जील मैंने तुमको सुनाई वही मानों (३) इसके सिवा कोई आस्मान से फरिश्ता आवे, तो उसकी भी न मानो (४) पौलूस ने जो इन्जील सुनाई वह उपलब्ध नहीं है (५) यह मत्ती मर्कस, लूका, यूहन्ना की इन्जीली और हैं (६) पौलूस कहता है इनको नही मानना चाहिए (७) पौलूस रसूल को आप सच्चा मानते हैं तो यह इन्जीलें छोड़नी होंगी, यदि इन्जीलों को मानना है तो पौलूस रसूल और उसके इस पत्र को छोड़ना होगा।

काविथा अलल गाविया में एक इन्जील बरनबास की भी छपी है।

पौलूस रसूल की इन्जील कौनसी थी

यीशु ने (मर्कस के कथनानुसार) चेलों से कहा कि तुम तमाम जहान के हर एक मखलूक के सामने इन्जील की मुनादी करो जो कि ईमान लाता और बपतिस्मा पाता है, नजात पाएगा और जो ईमान नहीं लाता उस पर सजा का हुकम किया जायगा मरकुस बाब १६ आयत १५-१६ उर्दू बाईबिल

अस्तु आप भगवान के अकलौत हैं ईमान न लाने वाले को सजा दें या फांसी चडावें जो चाहे सो करें परन्तु हम तो यह पूछते हैं कि जिस इन्जील की मुनादी करने के लिए यीशु ने कहा-वह इन्जील कौनसी है-और कहां है इस समय तो मर्कस आदि इंजीलें हैं अनुमान किया जा सकता है कि पौलूस ने जिस इन्जील को मानने का संकेत किया है सम्भवतः वह इन्जील वही हो क्योंकि मत्ती मरकुस, लूका, यूहन्ना की इन्जीलों का उस समय नाम भी नहीं था।

आर्यसमाज के प्रथम अनुसन्धान कर्ता धर्म वेदो पर बलिदान होने वाले ने श्री पं. लेखरामजी बहुत कुछ ईसाईयों के विषय में अनुसन्धानकिया है। वह लिखते हैं कि पहले चौदह इन्जीलें इलहामी मानी जाती थी:-जो यह है (१) परतोमा की इन्जील (२) तोमा की इन्जील (३) पतरस की इन्जील (४) यूहन्ना की इन्जील (५) यूहन्ना की दूसरी इंजील (६) इन्द्रयासास की इन्जील (७) मत्ती की इन्जील (८) फिलप की इंजील (९) लूका की इन्जील (१०) मसीह की छोटी आयु की इन्जील (११) याकुब की इन्जील (१२) मरकुस की इन्जील (१३) बांता की इंजील (१४) बरन्वास की इन्जील कुल्यात पृ. २५१।

धीरे-धीरे यह सब खतम होकर चार रह गई पण्डितजी ने लिखा है कि पहले पौलूस रसूल को इन्जील भी थी।

हम तो यीशु का सलीब पर मरना स्वीकार ही नहीं करते, मगर लूका और यूहन्ना ने इस विषय में जो भ्रान्ति फैलाई है उसे स्पष्ट कर देना आवश्यक हैं ताकि पाठक इस बात को जान लें कि तीन दिनरात के बदले तीसरे दिन की कल्पना कहां तक ठीक है यों तो इन्जीलों की सब बातें परस्पर विरोधी होने के कारण अप्रमाण है। मगर जिस बात पर ई[illegible]ई सब लोगों को बहुत पथ भ्रष्ट करते हैं वह है कि मर कर जी उठने का विषय, यद्यपि हम पहले इस पर लिख चुके हैं कि यीशु रात को कबर में रखा गया और अगला दिन सब्त का था वह दिन और रात यीशु की व्यतीत है। जाने के बाद प्रातः पोह फुटते ही दोनों मरियमें यीशु की कबर पर आई और लोथ कबर में नहीं थी। इस प्रकार तैयारी के दिन की पहली रात फिर सब्त का दिन और अगली रात, दो राते और एक दिन होता है तीन दिन और तीन राते नहीं होती

मगर तीन दिन और तीन रात की बात को भ्रान्ति में डालने के लिये जिन्होंने तीसरा दिन शब्द घड़ा और उन्होंने जान बुझ कर लोगों को पथ भ्रष्ट कर दिया। और अपने बचाव के लिये आड़ तलाश की। जैसा कि आगे लिखा जाता है—

चमत्कार क्या था

चिन्ह मांगने पर उस (यीशु) ने उनको उत्तर दिया कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढुडते है परन्तु यूनूस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोडकर कोई और चिन्ह उन को न दिया जायगा। यूनुस तीन रात दिन जल जन्तु के पेट में रहा वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा, मत्ती १२/३८-४० मत्ती १६/४ लूका भी यही कहता हे कि यूनुस के चिन्ह को छोड़ कर और कोई चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा, लूका ११/२९ मगर मरकुस इसके नहीं मानता केवल यह कहता है। कि उसने अपनी आत्मा में आह भरकर कहा कि इस समद के लोग क्यों चिन्ह ढुडते हैं मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा, मरकुस ८/११-१२।

अब देखिये मत्ती वा लूका तो यूनुस का चिन्ह दिखाने को कह रहे हैं और मरकुस कानों पर हाथ धर रहा है कि कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा और यूहन्ना मौन है। मगर १-कुरिन्थियों ने तीसरे दिन जींने का राग अलापा है और बाइबिल की टीका में भी तीसरा ही दिन लिखा है। मगर मैं योनाह की पुस्तक से प्रमाण दे कर सिद्ध करूंगा कि तीसरा दिन कहने

वाले गलत कह रहे हैं और हकीकत पर परदा पोशी कर रहे हैं देखिये असल पुस्तक, योना।

यहोवा ने तो एक बड़ा मगर मछ ठहराया, था कि योना को निगल ले और योना उस मगर मछ के पेट में तीन दिन हो और तीन रात पड़ा रहा. योना १/१७। अब तो यह स्पष्ट गया कि यीशु को भी तिन दिन और तीन रात कबर में जीवित रहना चाहिये था मगर ऐसा नहीं हुआ। वह तो एक दिन और एक रात रहा और दूसरी रात खतम होने से पहिले ही कबर से निकाला गया, इस लिए टीकाकार को तीसरे दिन का अलोप गलत है, मगर ऐसा करने पर भी उनका मतलब सिद्ध नहीं होता क्योंकि मत्ती कहता है कि तीन रात दिन कबर में रहेंगा, अतः यह बात सारा भ्रम ही है, इसी प्रकार लूका-पहली रात दफन किया और मेरा विश्वास है कि उसी रात कबर से निकाला गया यदि कोई सब्त के दिन जा कर देखता तब भी वह न मिलता, सब्त के दिन तो कोई जा नहीं सकता, शासन का कानून मना करता था, तो सब्त का दिन गुजर जाने से से प्रातः यीशु की लाश कबर में नही मिली। इस लिये सब्त के दिन लाश कबर में रही, इस का कोई प्रमाण नहीं दे सकता। हमारा कहना है कि लाश पहली रात ही कबर से उठा ली गई, अन्यथा ईसाई सबूत करें कि सब्त के दिन लाश कबर में थी। दूसरे यीशू को देखने की शहादते चेलों की है जो सब उनको पहचान न सके कुछ ने पहचाना जो उनको कुछ पहचान नही सके इस से गलत है।

यीशु के दोबारा आने में कितनी देर

मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा, मत्ती १०/२३। मैं तुम से सच कहता हुँ कि जो यहां खडे है उनमें से कितने ऐसे है, कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभीं न चखेगे, मत्ती १६/२८।

मगर १६७० वर्ष गूजर जाने पर ईसाई टिकटकी लगा कर आने की राह देख रहे है।

तेहरवां प्रकरण

विभिन्न विचार—शराब और मांस

मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ. मत्ती ९/१३

भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़ सब कुछ शुद्ध तो है परन्तु उस मनुष्य के लिए बुरा है जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती हो, भला तो यह है कि तू न मांस खाए और न दाख रस पिऐ, रोमियों १४/२१।

यदि कोई भाई कहलाकर व्यभिचारी, या लोभी या मूर्ति पूजक या गाली देने वाला या पियक्कड़ (शराबी) या अंधेर करने वाला हो, तो उसकी संगति मत करना। वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना, १-कुरिन्थियों ५/११

शराब और मांस खाना

और उस स्थान पर जा जहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा और वहां गाय-बैल वा भेड़-बकरी वा दाखरस वा मदिरा वा किसी भांति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे उसे उसी रुपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाकर आनन्द करना। व्यवस्था विवरण १४-१४/२६

आइन्दा को सिरफ पानी ही न पिया कर, बल्कि अपने मेदे और अकसर कमजोर रहने की वजह से जरा सी मय (शराब) भी काम में लाया कर, तिमुथियुस ५/२४ अंग्रेजी में भी वाइन ही लिखा है।

यीशु के शराब पीने बाबत।

क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता और वे कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है, मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो पेटू और पियक्कड़ (शराबी) मनुष्य महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र, मत्ती ११/१८-१९।

मसीह ने आखरी दिन भी दाखरस पिया।

मैं तुमसे कहता हूँ-कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं, मत्ती २६/२९। और लूका २२-७ में मेमने की बलि भी लिखी है।

मर्कस १४/२५ लूका २२/१८ यीशु का पहिला चमत्कार भी शराब के सम्बन्ध में था। हिन्दी में दाख रस शब्द से भ्रांति न पड़े उर्दू इन्जीलों में दाख रस का अनुवाद मय (शराब) ही किया है और अंग्रेजी में वाइन।

इन दो प्रकार के बयानों से कि शराबी परमेश्वर की हकूमत का वारिस नहीं होता। शराबी के साथ खाना तक न खाओ मगर दूसरे हवालों में शराब पीना लिखा है यहां तक कि यीशु स्वयं अन्त तक पीता रहा।

पुराने धर्म नियम के विषय में शराब के विषय में कुछ लिखना समय व्यर्थ खोना है वहां तो पेगम्बरों का आहार ही शराब थी।

विभिन्न आदतें—तीन आसमान पर

तीन हैं जो आसमान पर गवाही देते हैं बाप और कलाम और रुहुलकुदस, और वह तीनों एक हैं। यूहन्ना का पहला पत्र ५/७ पृ. ४७६ यह वाक्य नई आज कल की छपी इंजीलों में नहीं

मलिके सिदक [शालेम] चौथा खुदा

मलिके सिदक शालेम का राजा और परम प्रधान परमेश्वर का याजक सर्वदा याजक बना रहता है....जिसका न पिता न माता न वंशावली है। जिसके न दिनों का आदि है और

न जीवन का अन्त है, परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा इब्रानियों ७-१-२-४

मैं तुम से कहता हूँ कि जिसके पास है, उसको दिया जायगा, और जिसके पास नहीं, उससे वह भी ले लिया जायगा, जो उसके पास है, लूका १६-२६ ।

यीशु ने कहा, मैं दुनियाँ में अदालत के लिए आया हूँ ताकि जो नहीं देखते, देखें और जो देखते हैं, वह अन्धे हो जाये यूहन्ना ६-३६ ।

चेलों ने पास आकर उससे कहा-तू उनसे दृष्टाँतों में क्यों बातें करता है उसने (यीशू ने) उत्तर में उनसे कहा इसलिए कि तुमको स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है । पर उनको नहीं, क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जायगा; और उसके पास वहुत हो जायगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है वह भी ले लिया जायगा । मत्ती १३-१०-१२ (फिर यीशु ने कहा) मैं उनसे दृष्टान्तो में बातें इसलिए करता हुं, कि वे देखते हुए नहीं देखते, और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते.······ कहीं ऐसा न हो कि आंखों से देखे और कानों से सुने.और मन से समझें । और फिर जायें, और [रजूअ] फिर जोएं और मैं उन्हें चंगा करुं मत्ती-१३.१३ से १५ ।

(यह सुधारक है जो कहते हैं कि दृष्टान्तों में बातें इस लिए करता हुँ कि यह समझ न जाएं और स्वर्ग के अधिकारी न हो जावें (एमाल) और सारी चीजें व्यवस्था के अनुसार खून के द्वारा शुद्ध की जाती है, और बिना लोहू बहाय क्षमा नहीं होती । इब्रानियों ६-२२ ।

उसी इच्छा से हम योशु मसीह की देह के एक ही वार वलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए है। इब्रानियों १०-१० ।

झूठा कौन है ! केवल वह जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है । और मसीह का विरोधी वही है जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उस के पास पिता भी नहीं जो पुत्र का नाम लेता है, उसके पास पिता भी है यूहन्ना की पहली पत्री आयत २२-२३ ।

सांपों की नाई बुद्धिमान और कबूतर की तरह भोले वनो मत्ती १०-१६ ।

पतरस, याकूब, और यूहन्ना को यीशु ने पहाड़ पर ले जाकर विराट स्वरूप दिखाया मती १७-२।

मसीह सव कुछ और सब में है कुलूस्सयों ३-११ अव तो सर्वव्यापक भी वन गया पौलुस कहता हैं मैंने कई रंग बदले, यहूदियों में यहूदी बना ताकि यहूदियों को खींच लाऊं जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उनके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना ....ताकि उन्हें खींच लाऊं १--कुरन्तियों ९—२० । (यह है ईसाई धर्म प्रचार के ढंग भारत में कालोकट में ब्राह्मण बन प्रचार किया ।

यीशु पर विश्वास

जो करता है उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु जो उस पर विश्वास नही करता वह दोषी ठहर चुका यूहन्ना ३–१८

(केवल विश्वास से दण्ड नही) पतरस को कुन्जिया। में तुझे स्वर्ग के राज्य की कुन्जियां दूंगा मती १६-१६ ,

झूठ व बुराई पाप नहीं

यदि मेरे झुठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिए अधिक प्रकट करके प्रगट हुई तो फिर क्यों पापो की नाई मैं दन्ड के योग्य ठहराया गया हूँ और हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकले रोमियों ३/७/८ फिर तुमसे कहता हुँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सुई के नोके में से निकल जाना सहज है। मती १६-२४।

प्रसु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ जब तक कि मैं तेरे वेरियों को तेरे पाँव तले की चौकी न बनाऊं।
प्रेरतों के काम २-३६।

स्त्री आधीनता से रहे

और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता में सीखना चाहिये और मैं कहता हुँ, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए परन्तु चुपचाप रहे····क्योंकि पहले स्त्री बहकाने में आ कर अपराधिनीं हुई। १ तीमुथयुस -२-१२/१३।
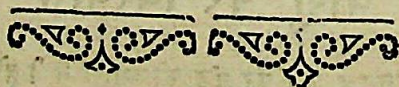
मिस्टर चार्लस स्मिथ की पुस्तक बाइबिल कसौटी पर से उद्धृत

बाइबिल क्या हैं ?

बाइबल उन २८ पुस्तकों में से हैं जिन्हें ईश्वरप्रणीत कहा जाता हे। ईसाई अपनी बाइबल के सिवाय अन्य सब बाइबलों को ईश्वरप्रणीत नहीं मानते। किन्तु मैं किसी भी बाइबल को ईश्वर प्रणीत नहीं मानता।

प्रोटेंस्टैण्ट ईसाइयों ने २५० यहूदि-ईसाई रचनाओं में से ६६ रचनाओं को अपनो मर्जी से प्रामाणिक घोषित कर दिया है। अस्वीकृत पुस्तकों में भी आमतौर पर वैसी ही बातें हैं जैसीं कि इन दिनो प्रकाशित 'पवित्र बाइबल' में। इन पुस्तकों का चुनाव किन्ही विशेष परिस्थितियों में किया न कि इनकी अच्छाई के कारण।

१५० वर्षों तक ईसाई बाइबल यहूदियों की धर्म पुस्तकों का संग्रह रही। दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध तक 'न्यू टैस्टामैण्ट' अर्थात् 'नया धर्म नियम' नहीं बना था। तब इरेनुअस' ने चालीस या कुछ अधिक सुसमाचारों, धर्म प्रचारकों की लगभग चालीस प्रार्थनाओं, बीसियों प्रकाशनाओं और सैकड़ों धर्म पत्रों में से बीस पुस्तकें चुनी। ये विशिष्ट पुस्तकें क्यों चुनी गई ? एक सुसमाचार के स्थान पर चार सुसमाचार क्यों ? इरेनुअस के अनुमार 'पृथ्वी की चार दिशाएं हैं जिनमें हम रहते हैं और चार विश्व-व्यापी हवाएं है। पीटर, पाल और गिरजाघर के पुराने पादरी इन सुसमाचारों को नहीं जानते थे। इन्हें बाद में गढ़ा गया।

चौथी शताब्दी तक बाइबल अपने वतमान रूप में नहीं थी। आधुनिक काल में ही रोमन कैथोलिक, ग्रीक कैथोलिक

और प्रोटैस्टैण्ट सम्प्रदायों के प्रमाणिक धर्मग्रन्थ संग्रह बने हैं। वाइबल को परस्पर असम्बद्ध और स्वतन्त्र लेखों का संग्रह माना जाता था। १५६३ में, ट्रैण्ट परिषद्' ने रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय का धर्मग्रन्थ संग्रह बनाया जिसमें ७२ पुस्तकें थी। रोमन कैथोलिक, प्रोटैस्टैण्ट सम्प्रदाय की बाइबल की निन्दा करते है। इसी प्रकार प्रोटैस्टैण्ट ईसाई, कैथोलिक-सम्प्रदाय की बाइबल को निन्दा करते हैं और उसे पोप की छलना कहते हैं। १६७२ में आयोजित 'यरुशलम-परिषद्' में ग्रीक कैथोलिक ईसाईयों ने 'प्रकाशना को अन्तिम रूप से स्वीकार किया। इनकी बाइबल में ऐसी अनेक पुस्तकें हैं जो रोमन धर्म ग्रन्थ संग्रह में नही मिलतां। १६०७ में वैस्टमिनिस्टर असेम्बलो' ने ६६ पुस्तकों का अनुमोदन किया। इन पुस्तकों का संग्रह बाइबल का 'अधिकृत पाठ' माना जाता है और अमरीका में इसी का बहुत प्रचार है।

इस प्रकार ईसाईयों की बाइबल ३०० साल से भी कम पुरानी है। इस बाईबल को भी बहुमत से स्वीकार किया गया था।

इस धर्मग्रन्थ संग्रह को स्वीकृत करने वाले प्रमुख पादरियों में से किसी ने भी इन सब पुस्तकों को स्वीकार नहीं किया था। क्रिसोसटोम ने-जिसने इस संग्रह को बाइबल का नाम दिया-६६ में से छह पुस्तकें अस्वीकृत कर दी थी। इनके नाम हैं-एस्तेर, योना, हिब्रुज, जेम्स, जूद और प्रकाशना। कालविन ने भी 'प्रकाशना' को स्वीकार नही किया था क्योंकि यह समझ में न आने वाली पुस्तक थी। अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति थामस जैफर्सन ने लिखा था लगभग ५०-६० साल पहिले मैंने 'प्रकाशना' पढ़ी थी और मुझे यह किसी पागल व्यक्ति का प्रलाप ही जान पडी·······इसे पढने से कोई मतलब पता नही चलता और न ही इसमें किसी प्रकार का स्पष्टीकरण है।

अन्तिम निवेदन

हमने इस लघु पुस्तक में ईसाई मत की ईश्वरी ज्ञान कहलाने वाली पुस्तकों पर कुछ सैधन्तिक चर्चा की है । सब से पहले हम ने ईश्वर विषय पर लिखा क्योंकि किस मजहब या धर्म की सत्यता को जानने के लिए आवश्यक हैं कि उस जगत कर्त्ता के सम्बन्ध में उस के सिद्धान्त और मानताओं को देखा जाए, कि जो कुछ उस मत ने लिखा वह ईश्वर की सत्ता तथ गुण, कर्म सथाव के कहां तक अनुकुल हे, दूसरे हम ने ईसाई मत के मूल सिद्धान्तों का वर्णन किया तीसरे उनकी मान्य पुस्तकों में जो शिक्षा है–उनकी कहां तक अथवा विरोध है, मनूष्य के वास्तविक उद्धेश्य की पूर्ति के लिए कौन से साधन है इत्यादि हम समझते है कि सत्य के अभिलाषी के लिए सत्य को जानने के लिए यह पुस्तक उस का पथ प्रदर्शत अवश्य करेगी, स्वाध्याय शील सत्य की खोज करने वालों को यह पुस्तक सवश्य पढ़नी चाहिये इस से ही लेखक का उद्धेश्य पूरा होला है ।

भवदीय

देवप्रकाश

आर्य समाज रतलाम

१५/७/७०

शुद्धि पत्र

क्रमांक	पृष्ट	लायन	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
१	१	१६	मत्तीत ता	मत्ती-वाव
२	३	११	हा	हो
३	७	१३	शतीर	शरीर
४	६	१२	ातरापराहियों	निरापराधियों
५	१०	८	सी	से
६	११	१४	०	हो
७	१२	७	दिल	गुल
८	१२	१५	आतिमे	आतिशे
९	१५	१५	पहियांये	पटियायें
१०	२२	११	सलन्याइ	यशायाह
११	२४	४	अ र	और
१२	२७	१७	सुता	सुना
१३	२८	१६	हाई	हिन्दू
१४	३३	१०	अन्यक्त	अण्यक्त
१५	३३	१४	उपयु ंक्त	उपयुक्त
१६	४१	३	जवान	जुबान
१७	४१	१३	की	भी
१८	४४	१२	मनन	मगर
१९	४६	६	तास	नाम
२०	४७	१७	शराअत	शरीअत
२१	४८	२	शीन गोई	पेशीन गाई
२२	५१	६	इस	इस से
२३	५४	१५	जार	जाग
	६३	१७	और वह	और न वह
	६४	८	का	की
	७४	१२	प्रे तों	प्रे रितों
	७४	२०	के	को
	७५	२२	(पतास)	पतरस

क्रमांक	पृष्ठ	लायन	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
	७५	२४	जानते	जानता
	७६	११	मत	इस मत
	७६	१२	यह–यह	यह
	७६	१८	पीते	पाते
	७७	८	भा	भी
	७७	१७	उसी उसकी समय	उसी समय उसकी
	७७	१८	२६ तक	२७ तक
	७७	२३	हा	ही
	७८	३	निदोन	निर्दोष
	७८	४	बुरे	मरे
	७८	१०	मरण ाार	मरने पर
	७८	२०	जमा	क्षमा
	७६	१	स्तलाल	दलील
	८०	८	इसान लाते	ईमानन लावे
	८३	६	युक्त	अयुक्त
	८४	७	ने दारा	के द्वारा
	६१	२	फसाता	कमाना
	६१	१६	धम	धर्म
	६५	२	आगे परस्पर	आगे और परस्पर
	६५	२०	क	ना
	६७	२१	निर्ममन	निगमन में
	६८	१४	से	के
	६६	१४	बडो	बेड़ा
	१०२	१७	रसासत	सयासत
	१०२	२२	मोरण	गोरख
	१०४	४	मांगी	आगुली
	१०७	७	क्यों	क्योंकि
	११५	७	कोर	और
	११५	८	ओग	और

पृष्ठ	लायन	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
११८	१३	नापक	नापाक
११८	१७	मद	मद्य
११६	१७	प्राथर्ता	प्राथंना
१३०	६	उतार	उतारा
१३१	२१	रुपये	रुपये मे
१३८	२	प्रधन्य	प्रधान
१४२	१२	चडया	चड़ाया
१४२	२१	चड़या	चड़ाया
१४७	१४	माड्न	ग़ाडते
१६१	७	चालिस	चांलीस

मुद्रकः—श्री शारदा प्रि. प्रेस, रतलाम.

ीलो
जी में
रूस-पर
हे ऋषि
कल्पनाएं

वप्रकाश